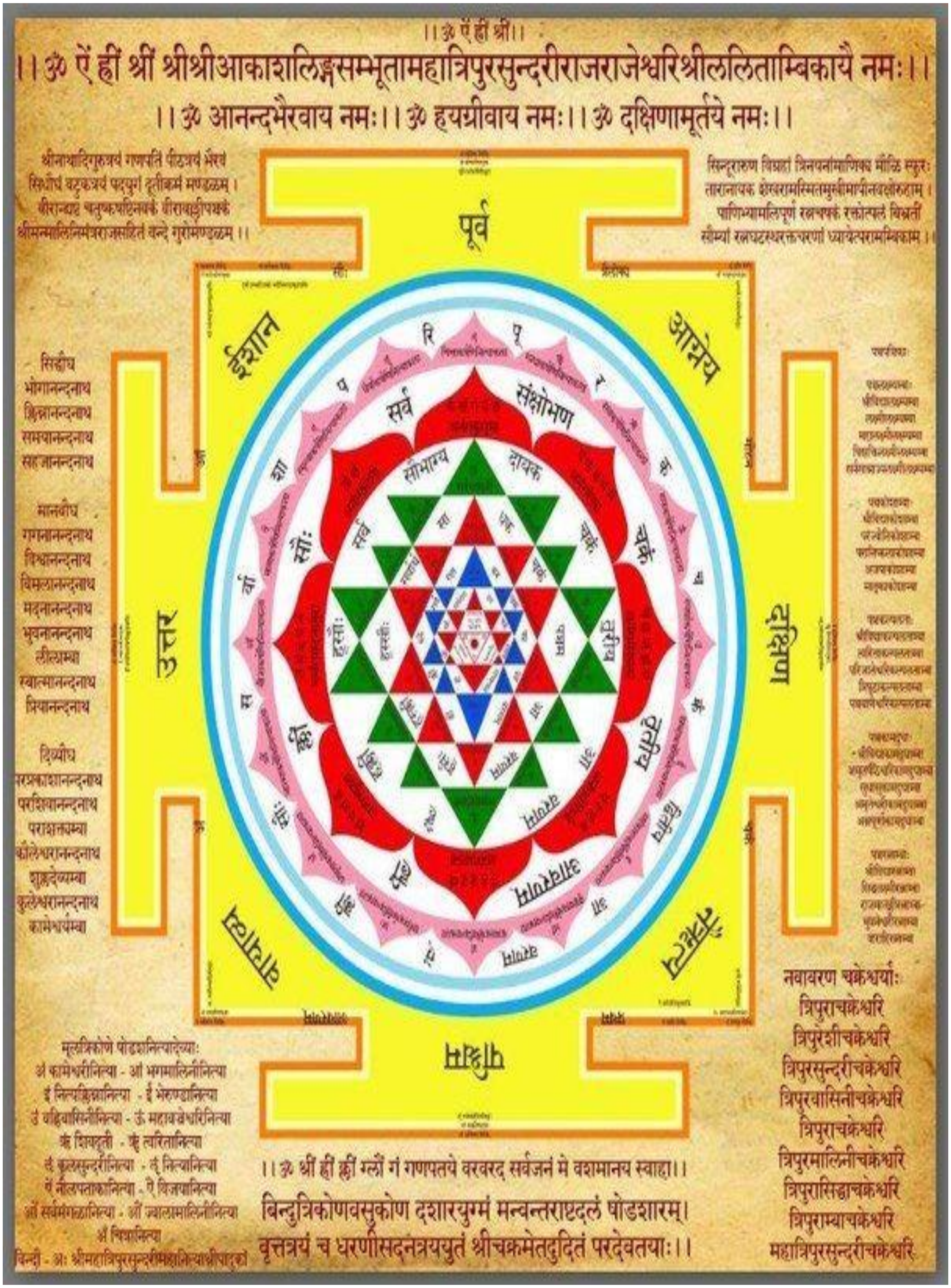


श्री ललिता सहस्त्रनाम

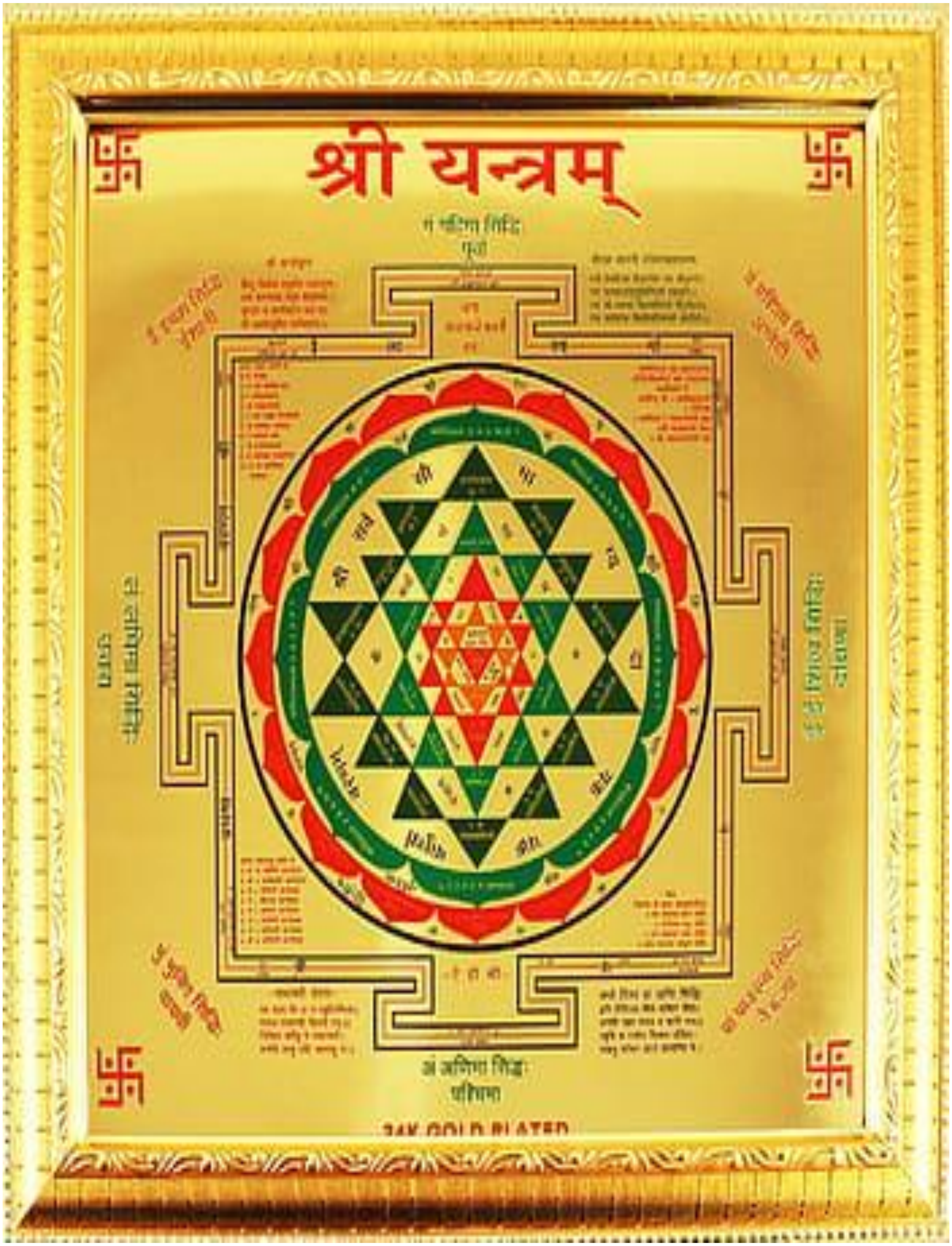
शंकर पुरस्वानी

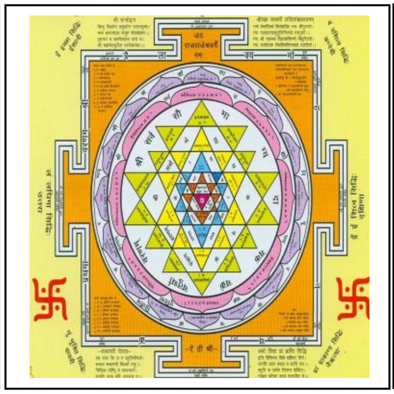


शंकर पुरसवानी


।। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ।।
।। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीश्रीआकाशलिङ्गसम्भूतामहात्रिपुरसुन्दरीराजराजेश्वरिश्रीललिताम्बिकायै नमः ।।
।। ॐ आनन्दभैरवाय नमः ।। ॐ हयग्रीवाय नमः ।। ॐ दक्षिणामूर्तये नमः ।।
पूर्व
ईशान
आग्नेय
उत्तर
दक्षिण
पश्चिम
नवावरण चक्रेश्वर्यः
त्रिपुराचक्रेश्वरि
त्रिपुरेशीचक्रेश्वरि
त्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वरि
त्रिपुरवासिनीचक्रेश्वरि
त्रिपुराश्रीचक्रेश्वरि
त्रिपुरमालिनीचक्रेश्वरि
त्रिपुरासिद्धाचक्रेश्वरि
त्रिपुराम्बाचक्रेश्वरि
महात्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वरि
।। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
बिन्दुत्रिकोणवसुकोण दशारयुग्मं मन्वन्तराष्टदलं षोडशारम्।
वृत्तत्रयं च धरणीसदनत्रययुतं श्रीचक्रमेतदुदितं परदेवतायाः ।।




श्री यन्त्रम्

श्री ललिता सहस्त्रनाम स्तोत्रम्

गुरुध्यानम्

श्री गुरुभ्यो नमः ।

श्री महागणपतयेनमः ।

श्री मात्रे नमः ॥

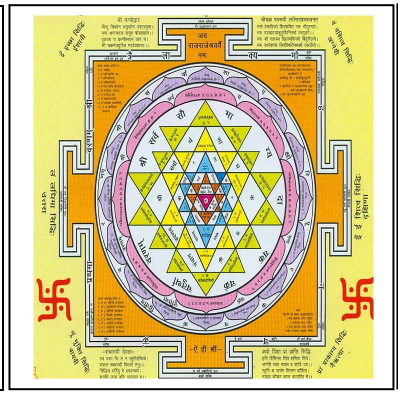
गुरुब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।

गुरुस्साक्षात्परब्रह्म तस्मैश्रीगुरवे नमः॥

परमेष्ठिगुरुः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः हंसः शिवः सोहं हंसः ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः सहक्षमलवरयीं स्हौः हंसः शिवः सोहं हंसः स्वात्मारामपञ्चर

विलीनतेजसे श्रीपरमेष्ठि गुरवे नमः श्री शिव श्रीपादुकां पूजयामि नमः॥

परमगुरु

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सोहं हंसः शिवः ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः सहक्षमलवरयीं स्हौः सोहं हंसः शिवः स्वच्छप्रकाश

विमर्शहेतवे श्री परमगुरवे नमः श्री शिव श्रीपादुकां पूजयामि नमः॥

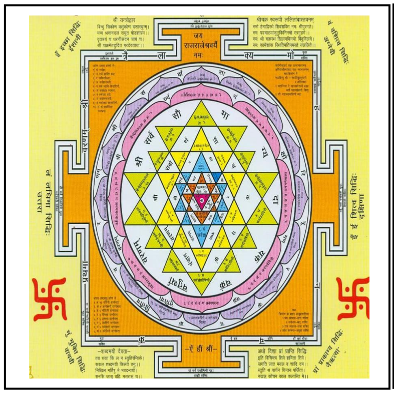
श्रीगुरु

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः हंसः शिवः सोहं ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः सहक्षमलवरयीं स्हौः हंसः शिवः सोहं स्वरूप

निरूपण हेतवे श्रीगुरवे नमः श्री शिव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥

ॐ नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः! आचार्य सिद्धेश्वरपादुकाभ्योनमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्यो!!1!!

मैं पूज्य गुरुदेव को प्रणाम करता हूँ, मेरी उच्चतम भक्ति गुरु चरणों और उनकी पादुका केप्रति हैं, क्योंकि गंगा–यमुना आदि समस्त नदियाँ और संसार के समस्त तीर्थ उनके चरणों में समाहित हैं, यह पादुकाएं ऐसे चरणों से आप्लावित रहती हैं, इसलिए मैं इस पादुकाओं को प्रणाम करता हु, यह मुझे भवसागर से पार उतारने में सक्षम हैं, यह पूर्णता देने में सहायक हैं, ये

पादुकाएं आचार्य और सिद्ध योगी केचरणों में सुशोभित रहती हैं, और ज्ञान के पुंज को अपने ऊपर उठाया हैं, इसीलिए ये पादुकाएं ही सही अर्थों में सिद्धेश्वर बन गई हैं, इसीलिए मैं इस गुरु पादुकाओं कोभक्ति भावः से प्रणाम करता हूँ!!1!!

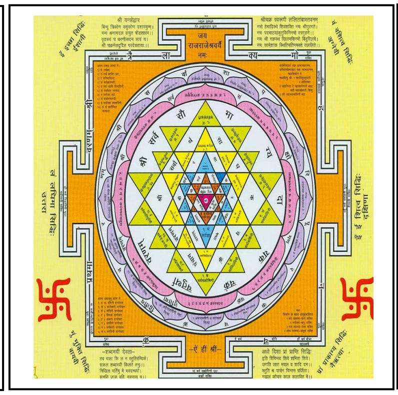
ऐंकार ह्रींकाररहस्ययुक्त श्रींकारगूढार्थ महाविभूत्या !

ओंकारमर्म प्रतिपादिनीभ्याम नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम!!2!!

गुरुदेव "ऐंकार" रूप युक्त हैं, जो कि साक्षात् सरसवती के पुंज हैं, गुरुदेव"ह्रींकार" युक्त हैं, एक प्रकार से देखा जाये तो वे पूर्णरूपेण लक्ष्मी युक्त हैं, मेरे गुरुदेव"श्रींकार" युक्त हैं, जो संसार के समस्त वैभव, सम्पदा और सुख से युक्त हैं, जो सही अर्थों में महान विभूति हैं, मेरे गुरुदेव "ॐ" शब्द के मर्म को समझाने में सक्षम हैं, वे अपने शिष्यों को भी उच्च कोटि कि साधना सिद्ध कराने में सहायक हैं, ऐसे गुरुदेव के चरणों में लिपटी रहने वाली ये पादुकाएं साक्षात् गुरुदेव का ही विग्रह हैं, इसीलिए मैं इन पादुकाओं को श्रद्धा दृ भक्ति युक्त प्रणाम करता हूँ!!2!!

होत्राग्नि होत्राग्नि हविश्यहोतृ दृ होमादिसर्वाकृतिभासमानं !यद् ब्रह्म तद्बोधवितारिणीभ्याम नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम!!3!!

ये पादुकाएं अग्नि स्वरूप हैं, जो मेरे समस्त पापो को समाप्त करने में समर्थ हैं, ये पादुकाएं मेरे नित्य प्रति के पाप, असत्य, अविचार, और अचिन्तन से

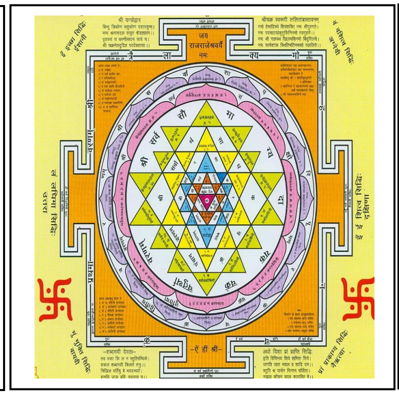
युक्त दोषों को दूर करनेमें समर्थ हैं, ये अग्नि कि तरह हैं, जिनका पूजन करने से मेरे समस्त पाप एक क्षण में ही नष्ट हो जाते हैं, इनके पूजन से मुझे करोडो यज्ञो का फल प्राप्त होता हैं, जिसकीवजह से मैं स्वयं ब्रह्मस्वरुप होकर ब्रह्म को पहिचानने कि क्षमता प्राप्त कर सका हूँ, जब गुरुदेव मेरे पास नहीं होते, तब ये पादुकाएं ही उनकी उपस्थिति का आभास प्रदान कराती रहती हैं, जो मुझे भवसागर से पार उतारने में सक्षम हैं, ऐसी गुरु पादुकाओं को मैं पूर्णता के साथ प्रणाम करता हूँ!!3!!

कामादिसर्प वज्रगारूडाभ्याम विवेक वैराग्यनिधिप्रदाभ्याम.बोधप्रदाभ्याम द्रुतमोक्षदाभ्याम नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम!!4!!

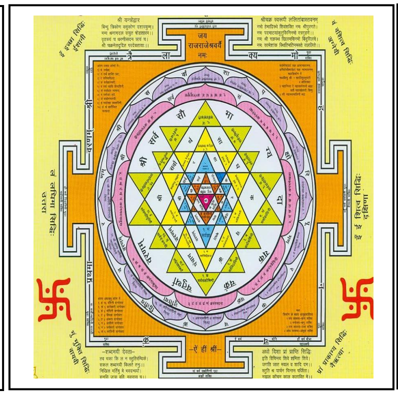
मेरे मन में काम, क्रोध, लोभ, मोह और अंहकार के सर्प विचरते ही रहते हैं, जिसकी वजह से मैं दुखी हूँ, और साधनाओं में मैं पूर्णता प्राप्त नहीं कर पाता, ऐसी स्थिति में गुरु पादुकाएं गरुड़ के समान हैं, जो एक क्षण में ही ऐसे कामादि सर्पों को भस्म कर देती हैं, और मेरे ह्रदय में विवेक, वैराग्य, ज्ञान, चिंतन, साधना और सिद्धियों का बोध प्रदान करती हैं, जो मुझे उन्नति की ओर ले जाने में समर्थ हैं, जो मुझे मोक्ष प्रदान करने में सहायक हैं, ऐसी गुरु पादुकाओं को मैं प्रणाम करता हूँ!!4!!

अनंतसंसार समुद्रतार नौकायिताभ्यां स्थिरभक्तिदाभ्यां!जाड्याब्धिसंशोषणवाड्वाभ्यां नमो नमः श्री

गुरुपादुकाभ्याम!!5!!

यह संसार विस्तृत हैं, इस भवसागर पार करने में ये पादुकाएं नौका की तरहहैं, जिसके सहारे मैं इस अनंत संसार सागर को पार कर सकता हूँ, जो मुझे स्थिर भक्ति देने में समर्थ हैं, मेरे अन्दर अज्ञान की घनी झाडियाँ हैं, उसे अग्नि की तरह जला कर समाप्त करने में सहायक हैं, ऐसी पादुकाओंको मैं भक्ति सहित प्रणाम करता हूँ!!5!!


श्री गुरु पादुका स्तोत्रम्–२

गुरु पादुका स्तोत्रम्

अनंतसंसार समुद्रतार नौकायिताभ्यां गुरुभक्तिदाभ्याम् ।

वैराग्यसाम्राज्यदपूजनाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् || 1 ||

कवित्ववाराशिनिशाकराभ्यां दौर्भाग्यदावां बुदमालिकाभ्याम् ।

दूरिकृतानम्र विपत्ततिभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् || 2 ||

नता ययोः श्रीपतितां समीयुः कदाचिदप्याशु दरिद्रवर्याः ।

मूकार्श्च वाचस्पतितां हि ताभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् || 3 ||

नालीकनीकाश पदाहृताभ्यां नानाविमोहादि निवारिकाभ्यां ।

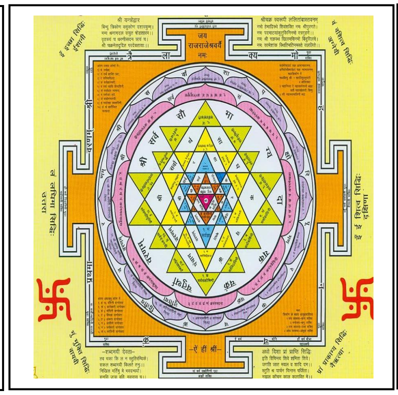
नमज्जनाभीष्टततिप्रदाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् || 4 ||

नृपालि मौलिव्रजरत्नकांति सरिद्विराजत् झषकन्यकाभ्यां ।

नृपत्वदाभ्यां नतलोकपंकतेरू नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् || 5 ||

पापांधकारार्क परंपराभ्यां तापत्रयाहींद्र खगेर्श्वराभ्यां ।

जाड्याब्धि संशोषण वाडवाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् || 6 ||


शमादिषट्क प्रदवैभवाभ्यां समाधिदान व्रतदीक्षिताभ्यां ।

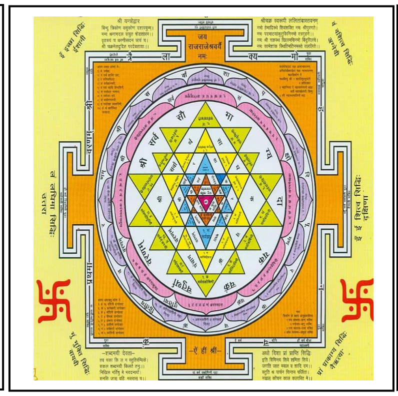
रमाधवांध्रिस्थिरभक्तिदाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥ 7 ॥

स्वार्चापराणां अखिलेष्टदाभ्यां स्वाहासहायाक्षधुरंधराभ्यां ।

स्वांताच्छभावप्रदपूजनाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥ 8 ॥

कामादिसर्प व्रजगारुडाभ्यां विवेकवैराग्य निधिप्रदाभ्यां ।

बोधप्रदाभ्यां दृतमोक्षदाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥ 9 ॥

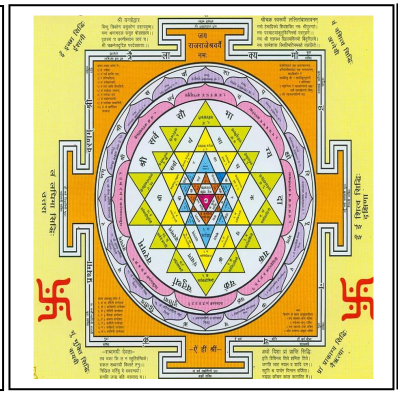
  

संकल्प

ममोपात्त समस्त दुरित क्षय द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं,श्री ललिता महा त्रिपुरसुन्दरी प्रसाद सिद्ध्यर्थं ,तदेव लग्नं,सुदिनं तदेव, ताराबलं चंद्रबलं तदेव विद्याबलं देवबलं तदेव लक्ष्मीपते ते अंघ्रियुगं स्मरामि ।

अस्य श्री भगवतः महाविष्णोः आदि पुरुषस्य आज्ञया, प्रवर्त मानस्य शुभयोग शुभकरण एवंगुणविशेषण विशिष्टायां अस्यां वर्तमानायां शुभ तिथौ अस्माकं सर्वेषां सह कुटुम्बानां क्षेमस्थैर्यादि सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थं धर्मार्थ काम मोक्षादि निखिल चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्ध्यर्थं, आयुः, आरोग्य, सौभाग्य, बल, श्री, कीर्ति, भाग्य, धन, धान्य, मणी, वस्त्र, भूषण, गृह, ग्राम, महाराज्य, साम्राज्यादि,जन्म कुंडली स्थित समस्त ग्रह दोष,पितृ दोष, काल सर्प दोष , वास्तु दोष, शत्रु द्वारा कृत यंत्र–मंत्र–तंत्र जनित बाधा, व्यापार बंधन, निवृत्यर्थं समस्त निखिलसुख अवाप्त्यर्थं, अस्मत् गुरु वर्याणां ,श्रीविद्या पीठाधिपानां, श्रीविद्या गुरूणां ,समस्त गुरुमडलं स्मरण वंदन पूर्वकं, महता प्रोत्साहने, श्री ललिता सहस्रनाम कोटि अर्चना अङ्गत्वेन, ललिता सहस्रनाम अर्चना अद्य करिष्ये ||







आवाहनम्

श्री ललितामहात्रिपुसुन्दरीम ध्यायामि,

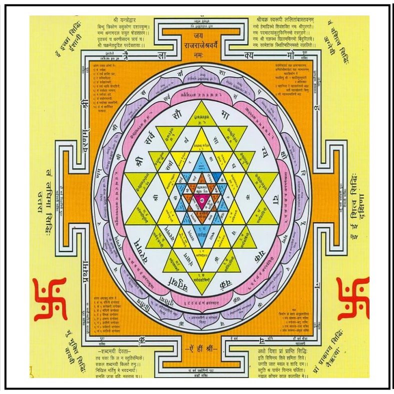
श्री ललितामहात्रिपुसुन्दरीम आवाहयामि,

श्री ललितामहात्रिपुसुन्दरीम प्राणान् प्रतिष्ठापयामि,

श्री ललितामहात्रिपुसुन्दर्यै नमः समस्तोपचारान् समर्पयामि।।

।। विनियोगः।।

ॐ अस्य श्री ललिता दिव्य सहस्रनाम स्तोत्र महामन्त्रस्य, वशिन्यादि वाग्देवता ऋषयः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री ललिता पराभट्टारिका महा त्रिपुर सुन्दरी देवता, ऐं बीजं, क्लीं शक्तिः, सौः कीलकं, मम धर्मार्थ काम मोक्ष चतुर्विध फलपुरुषार्थ सिद्धयर्थे ललिता त्रिपुरसुन्दरी पराभट्टारिका सहस्र नाम जपे विनियोगः।

करन्यासः

ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः,

क्लीं तर्जनीभ्यां नमः,

सौः मध्यमाभ्यां नमः,

सौः अनामिकाभ्यां नमः,

क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः,

ऐं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः

अङ्गन्यासः

ऐं हृदयाय नमः,

क्लीं शिरसे स्वाहा,

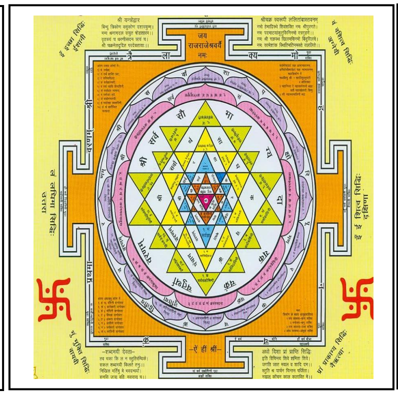
सौः शिखायै वषट्,

सौः कवचाय हुं,

क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्,

ऐं अस्त्रायफट्,

भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः।

॥ ध्यानम् ॥

सिन्दूरारुणविग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमौलिस्फुरत्

तारानायकशेखरां स्मितमुखीमापीन वक्षोरुहाम् ।

पाणिभ्याम् अलिपूर्णरत्नचषकं रक्तोत्पलं विभ्रतीं

सौम्यां रत्नघटस्थरक्तचरणां ध्यायेत्परामम्बिकाम् ॥

अरुणां करुणातरङ्गिताक्षीं

धृत पाश अंकुश पुष्प बाणचापाम् ।

अणिमादिभिरावृतां मयुखैः

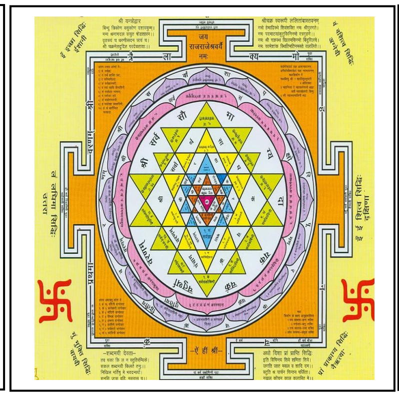
अहमित्येव विभावये भवानीम् ॥

ध्यायेत्पद्मासनस्थां विकसितवदनां पद्मपत्रायताक्षीं

हेमाभां पीतवस्त्रां करकलितलसद्धेमपद्मां वराङ्गीम् ।

सर्वालङ्कारयुक्तां सततमभयदां भक्तनम्रां भवानीं

श्रीविद्यां शान्तमूर्तिं सकलसुरनुतां सर्वसम्पत्प्रदात्रीम् ॥


सकुङ्कुम विलेपनाम अलि चुम्बिक कस्तूरिकां

समन्द हसितेक्षणां सशर चाप पाशाङ्कुशाम् ।

अशेषजन मोहिनीम अरुणमाल्यभूषाम्बरां

जपाकुसुमभासुरां जपविधौ स्मरेदम्बिकाम् ॥

॥ अथ श्रीललितासहस्रनामस्तोत्रम् ॥

ॐ श्रीमाता श्रीमहाराज्ञी श्रीमत्–सिंहासनेश्वरी ।

चिदग्नि–कुण्ड–सम्भूता देवकार्य–समुद्यता ॥ १॥

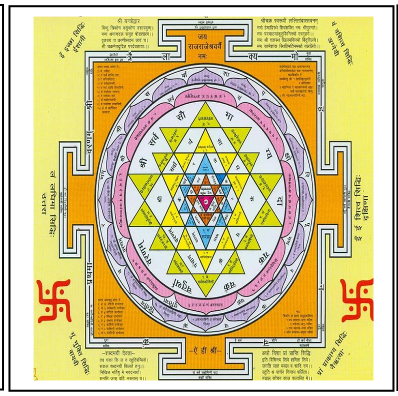
उद्यद्भानु–सहस्राभा चतुर्बाहु–समन्विता ।

रागस्वरूप–पाशाढ्या क्रोधाकाराङ्कुशोज्ज्वला ॥ २॥

मनोरूपेक्षु–कोदण्डा पञ्चतन्मात्र–सायका ।

निजारुण–प्रभापूर–मज्जद्ब्रह्माण्ड–मण्डला ॥ ३॥

चम्पकाशोक–पुन्नाग–सौगन्धिक–लसत्कचा ।


कुरुविन्दमणि–श्रेणी–कनत्कोटीर–मण्डिता ॥ ४॥

अष्टमीचन्द्र–विभ्राज–दलिकस्थल–शोभिता ।

मुखचन्द्र–कलङ्काभ–मृगनाभि–विशेषका ॥ ५॥

वदनस्मर–माङ्गल्य–गृहतोरण–चिल्लिका ।

वक्त्रलक्ष्मी–परीवाह–चलन्मीनाभ–लोचना ॥ ६॥

नवचम्पक–पुष्पाभ–नासादण्ड–विराजिता ।

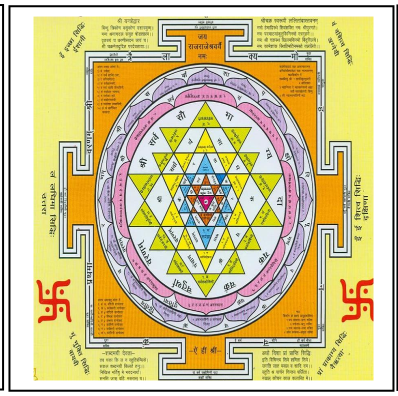
ताराकान्ति–तिरस्कारि–नासाभरण–भासुरा ॥ ७॥

कदम्बमञ्जरी–क्लृप्त–कर्णपूर–मनोहरा ।

ताटङ्क–युगली–भूत–तपनोडुप–मण्डला ॥ ८॥

पद्मराग–शिलादर्श–परिभावि–कपोलभूः ।

नवविद्रुम–बिम्बश्री–न्यक्कारि–रदनच्छदा ॥ ९॥

शुद्ध–विद्याङ्कुराकार–द्विजपङ्क्ति–द्वयोज्ज्वला ।

कर्पूर–वीटिकामोद–समाकर्षि–दिगन्तरा ॥ १०॥

निज–सल्लाप–माधुर्य–विनिर्भर्त्सित–कच्छपी । मन्दस्मित–प्रभापूर–मज्जत्कामेश–मानसा ॥ ११॥

अनाकलित–सादृश्य–चिबुकश्री–विराजिता । कामेश–बद्ध–माङ्गल्य–सूत्र–शोभित–कन्धरा ॥ १२॥

कनकाङ्गद–केयूर–कमनीय–भुजान्विता ।

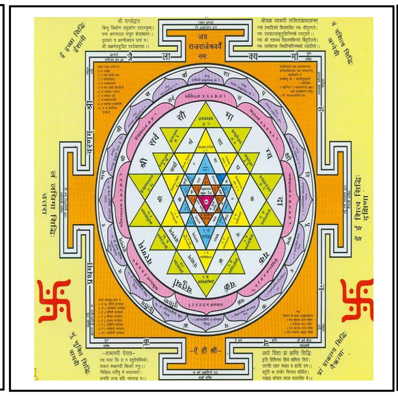
रत्नग्रैवेय–चिन्ताक–लोल–मुक्ता–फलान्विता ॥ १३॥

कामेश्वर–प्रेमरत्न–मणि–प्रतिपण–स्तनी ।

नाभ्यालवाल–रोमालि–लता–फल–कुचद्वयी ॥ १४॥

लक्ष्यरोम–लताधारता–समुन्नेय–मध्यमा ।

स्तनभार–दलन्मध्य–पट्टबन्ध–वलित्रया ॥ १५॥


अरुणारुण–कौसुम्भ–वस्त्र–भास्वत्–कटीतटी ।

रत्न–किङ्किणिका–रम्य–रशना–दाम–भूषिता ॥ १६॥

कामेश–ज्ञात–सौभाग्य–मार्दवोरु–द्वयान्विता ।

माणिक्य–मुकुटाकार–जानुद्वय–विराजिता ॥ १७॥

इन्द्रगोप–परिक्षिप्त–स्मरतूणाभ–जङ्घिका ।

गूढ़गुल्फा कूर्मपृष्ठ–जयिष्णु–प्रपदान्विता ॥ १८॥

नख–दीधिति–संछन्न–नमज्जन–तमोगुणा ।

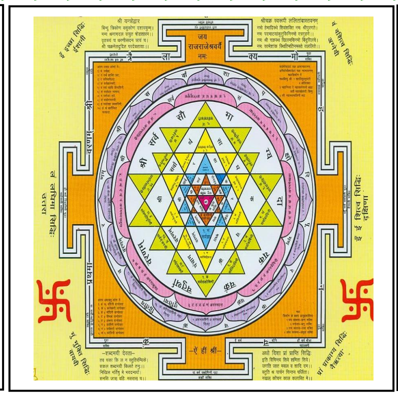
पदद्वय–प्रभाजाल–पराकृत–सरोरुहा ॥ १९॥

सिञ्जान–मणिमञ्जीर–मण्डित–श्री–पदाम्बुजा ।

मराली–मन्दगमना महालावण्य–शेवधिः ॥ २०॥

सर्वारुणा अनवद्याङ्गी सर्वाभरण–भूषिता ।

शिव–कामेश्वराङ्कस्था शिवा स्वाधीन–वल्लभा ॥ २१॥


सुमेरु–मध्य–शृङ्गस्था श्रीमन्नगर–नायिका ।

चिन्तामणि–गृहान्तस्था पञ्च–ब्रह्मासन–स्थिता ॥ २२॥

महापद्माटवी–संस्था कदम्बवन–वासिनी ।

सुधासागर–मध्यस्था कामाक्षी कामदायिनी ॥ २३॥

देवर्षि–गण–संघात–स्तूयमानात्म–वैभवा ।

भण्डासुर–वधोद्युक्त–शक्तिसेना–समन्विता ॥ २४॥

सम्पत्करी–समारूढ–सिन्धुर–व्रज–सेविता ।

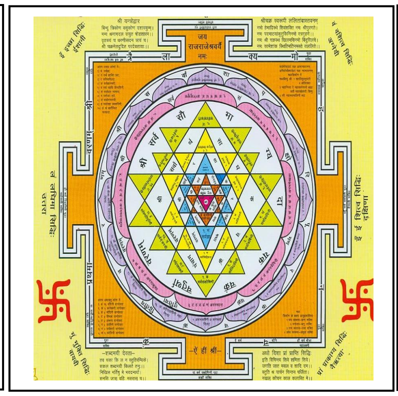
अश्वारूढाधिष्ठिताश्व–कोटि–कोटिभिरावृता ॥ २५॥

चक्रराज–रथारूढ–सर्वायुध–परिष्कृता ।

गेयचक्र–रथारूढ–मन्त्रिणी–परिसेविता ॥ २६॥

किरिचक्र–रथारूढ–दण्डनाथा–पुरस्कृता ।

ज्वाला–मालिनिकाक्षिप्त–वह्निप्राकार–मध्यगा ॥ २७॥

भण्डसैन्य–वधोद्युक्त–शक्ति–विक्रम–हर्षिता ।

नित्या–पराक्रमाटोप–निरीक्षण–समुत्सुका ॥ २८॥

भण्डपुत्र–वधोद्युक्त–बाला–विक्रम–नन्दिता ।

मन्त्रिण्यम्बा–विरचित–विषङ्ग–वध–तोषिता ॥ २९॥

विशुक्र–प्राणहरण–वाराही–वीर्य–नन्दिता ।

कामेश्वर–मुखालोक–कल्पित–श्रीगणेश्वरा ॥ ३०॥

महागणेश–निर्भिन्न–विघ्नयन्त्र–प्रहर्षिता ।

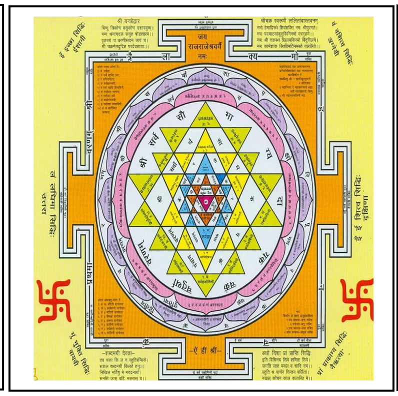
भण्डासुरेन्द्र–निर्मुक्त–शस्त्र–प्रत्यस्त्र–वर्षिणी ॥ ३१॥

कराङ्गुलि–नखोत्पन्न–नारायण–दशाकृतिः ।

महा–पाशुपतास्त्राग्नि–निर्दग्धासुर–सैनिका ॥ ३२॥

कामेश्वरास्त्र–निर्दग्ध–सभण्डासुर–शून्यका ।

ब्रह्मोपेन्द्र–महेन्द्रादि–देव–संस्तुत–वैभवा ॥ ३३॥

हर–नेत्राग्नि–संदग्ध–काम–सञ्जीवनौषधिः ।

श्रीमद्वाग्भव–कूटैक–स्वरूप–मुख–पङ्कजा ॥ ३४॥

कण्ठाधः–कटि–पर्यन्त–मध्यकूट–स्वरूपिणी ।

शक्ति–कूटैकतापन्न–कट्यधोभाग–धारिणी ॥ ३५॥

मूल–मन्त्रात्मिका मूलकूटत्रय–कलेवरा ।

कुलामृतैक–रसिका कुलसंकेत–पालिनी ॥ ३६॥

कुलाङ्गना कुलान्तस्था कौलिनी कुलयोगिनी ।

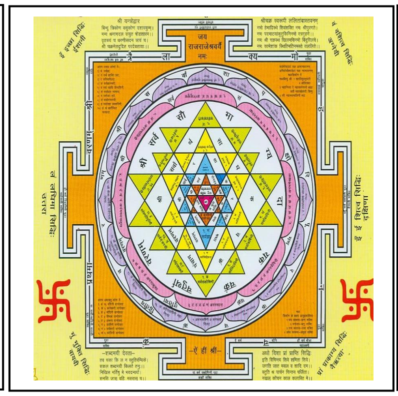
अकुला समयान्तस्था समयाचार–तत्परा ॥ ३७॥

मूलाधारैक–निलया ब्रह्मग्रन्थि–विभेदिनी ।

मणि–पूरान्तरुदिता विष्णुग्रन्थि–विभेदिनी ॥ ३८॥

आज्ञा–चक्रान्तरालस्था रुद्रग्रन्थि–विभेदिनी ।

सहस्राराम्बुजारूढा सुधा–साराभिवर्षिणी ॥ ३९॥

तडिल्लता–समरुचिः षट्चक्रोपरि–संस्थिता ।

महाशक्तिः कुण्डलिनी बिसतन्तु–तनीयसी ॥ ४०॥

भवानी भावनागम्या भवारण्य–कुठारिका ।

भद्रप्रिया भद्रमूर्तिर् भक्त–सौभाग्यदायिनी ॥ ४१॥

भक्तिप्रिया भक्तिगम्या भक्तिवश्या भयापहा ।

शाम्भवी शारदाराध्या शर्वाणी शर्मदायिनी ॥ ४२॥

शाङ्करी श्रीकरी साध्वी शरच्चन्द्र–निभानना ।

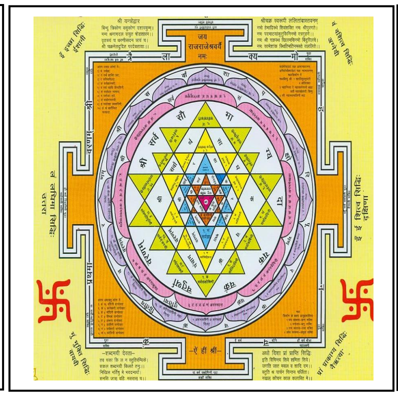
शातोदरी शान्तिमती निराधारा निरञ्जना ॥ ४३॥

निर्लेपा निर्मला नित्या निराकारा निराकुला ।

निर्गुणा निष्कला शान्ता निष्कामा निरुपप्लवा ॥ ४४॥

नित्यमुक्ता निर्विकारा निष्प्रपञ्चा निराश्रया ।

नित्यशुद्धा नित्यबुद्धा निरवद्या निरन्तरा ॥ ४५॥

निष्कारणा निष्कलङ्का निरुपाधिनिरीश्वरा ।

नीरागा रागमथनी निर्मदा मदनाशिनी ॥ ४६॥

निश्चिन्ता निरहंकारा निर्मोहा मोहनाशिनी ।

निर्ममा ममताहन्त्री निष्पापा पापनाशिनी ॥ ४७॥

निष्क्रोधा क्रोधशमनी निर्लोभा लोभनाशिनी ।

निःसंशया संशयघ्नी निर्भवा भवनाशिनी ॥ ४८॥

निर्विकल्पा निराबाधा निर्भेदा भेदनाशिनी ।

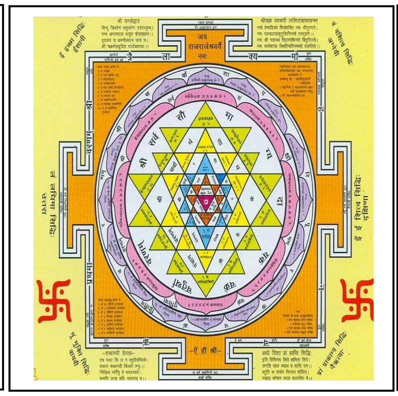
निर्नाशा मृत्युमथनी निष्क्रिया निष्परिग्रहा ॥ ४६॥

निस्तुला नीलचिकुरा निरपाया निरत्यया ।

दुर्लभा दुर्गमा दुर्गा दुःखहन्त्री सुखप्रदा ॥ ५०॥

दुष्टदूरा दुराचार–शमनी दोषवर्जिता ।

सर्वज्ञा सान्द्रकरुणा समानाधिक–वर्जिता ॥ ५१॥


सर्वशक्तिमयी सर्व–मङ्गला सद्गतिप्रदा ।

सर्वेश्वरी सर्वमयी सर्वमन्त्र–स्वरूपिणी ॥ ५२॥

सर्व–यन्त्रात्मिका सर्व–तन्त्ररूपा मनोन्मनी ।

माहेश्वरी महादेवी महालक्ष्मीर् मृडप्रिया ॥ ५३॥

महारूपा महापूज्या महापातक–नाशिनी ।

महामाया महासत्त्वा महाशक्तिर् महारतिः ॥ ५४॥

महाभोगा महैश्वर्या महावीर्या महाबला ।

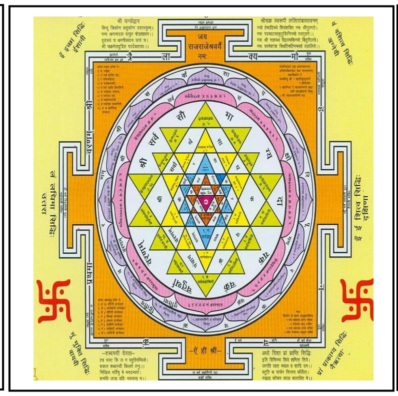
महाबुद्धिर् महासिद्धिर् महायोगेश्वरेश्वरी ॥ ५५॥

महातन्त्रा महामन्त्रा महायन्त्रा महासना ।

महायाग–क्रमाराध्या महाभैरव–पूजिता ॥ ५६॥

महेश्वर–महाकल्प–महाताण्डव–साक्षिणी ।

महाकामेश–महिषी महात्रिपुर–सुन्दरी ॥ ५७॥

चतु:षष्ट्युपचाराढ्या चतु:षष्टिकलामयी ।

महाचतु:–षष्टिकोटि–योगिनी–गणसेविता ॥ ५८॥

मनुविद्या चन्द्रविद्या चन्द्रमण्डल–मध्यगा ।

चारुरूपा चारुहासा चारुचन्द्र–कलाधरा ॥ ५९॥

चराचर–जगन्नाथा चक्रराज–निकेतना ।

पार्वती पद्मनयना पद्मराग–समप्रभा ॥ ६०॥

पञ्च–प्रेतासनासीना पञ्चब्रह्म–स्वरूपिणी ।

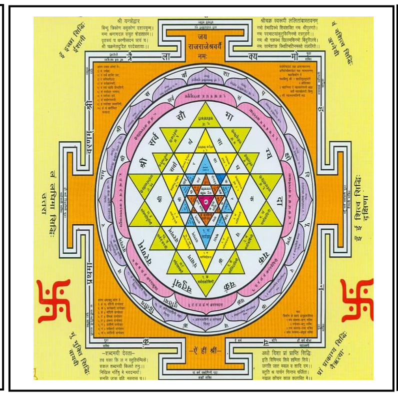
चिन्मयी परमानन्दा विज्ञान–घनरूपिणी ॥ ६१॥

ध्यान–ध्यातृ–ध्येयरूपा धर्माधर्म–विवर्जिता ।

विश्वरूपा जागरिणी स्वपन्ती तैजसात्मिका ॥ ६२॥

सुप्ता प्राज्ञात्मिका तुर्या सर्वावस्था–विवर्जिता ।

सृष्टिकर्त्री ब्रह्मरूपा गोप्त्री गोविन्दरूपिणी ॥ ६३॥

संहारिणी रुद्ररूपा तिरोधान–करीश्वरी ।

सदाशिवाऽनुग्रहदा पञ्चकृत्य–परायणा ॥ ६४॥

भानुमण्डल–मध्यस्था भैरवी भगमालिनी ।

पद्मासना भगवती पद्मनाभ–सहोदरी ॥ ६५॥

उन्मेष–निमिषोत्पन्न–विपन्न–भुवनावली ।

सहस्र–शीर्षवदना सहस्राक्षी सहस्रपात् ॥ ६६॥

आब्रह्म–कीट–जननी वर्णाश्रम–विधायिनी ।

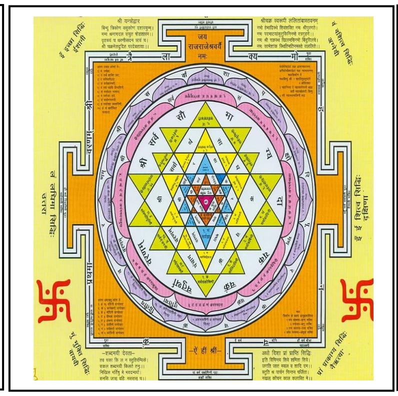
निजाज्ञारूप–निगमा पुण्यापुण्य–फलप्रदा ॥ ६७॥

श्रुति–सीमन्त–सिन्दूरी–कृत–पादाब्ज–धूलिका ।

सकलागम–सन्दोह–शुक्ति–सम्पुट–मौक्तिका ॥ ६८॥

पुरुषार्थप्रदा पूर्णा भोगिनी भुवनेश्वरी ।

अम्बिका अनादि–निधना हरिब्रह्मेन्द्र–सेविता ॥ ६९॥


नारायणी नादरूपा नामरूप–विवर्जिता ।

ह्रींकारी ह्रीमती हृद्या हेयोपादेय–वर्जिता ॥ ७० ॥

राजराजार्चिता राज्ञी रम्या राजीवलोचना ।

रञ्जनी रमणी रस्या रणत्किङ्किणि–मेखला ॥ ७१ ॥

रमा राकेन्दुवदना रतिरूपा रतिप्रिया ।

रक्षाकरी राक्षसघ्नी रामा रमणलम्पटा ॥ ७२ ॥

काम्या कामकलारूपा कदम्ब–कुसुम–प्रिया ।

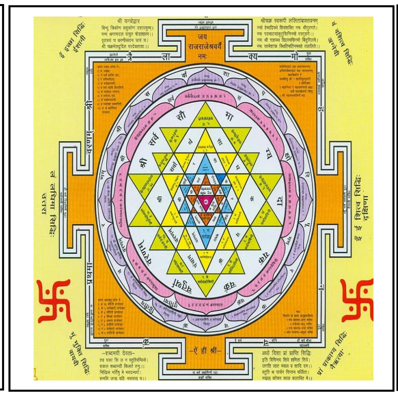
कल्याणी जगतीकन्दा करुणा–रस–सागरा ॥ ७३ ॥

कलावती कलालापा कान्ता कादम्बरीप्रिया ।

वरदा वामनयना वारुणी–मद–विह्वला ॥ ७४ ॥

विश्वाधिका वेदवेद्या विन्ध्याचल–निवासिनी ।

विधात्री वेदजननी विष्णुमाया विलासिनी ॥ ७५ ॥

क्षेत्रस्वरूपा क्षेत्रेशी क्षेत्र–क्षेत्रज्ञ–पालिनी ।

क्षयवृद्धि–विनिर्मुक्ता क्षेत्रपाल–समर्चिता ॥ ७६॥

विजया विमला वन्द्या वन्दारु–जन–वत्सला ।

वाग्वादिनी वामकेशी वह्निमण्डल–वासिनी ॥ ७७॥

भक्तिमत्–कल्पलतिका पशुपाश–विमोचिनी ।

संहृताशेष–पाषण्डा सदाचार–प्रवर्तिका ॥ ७८॥

तापत्रयाग्नि–सन्तप्त–समाह्लादन–चन्द्रिका ।

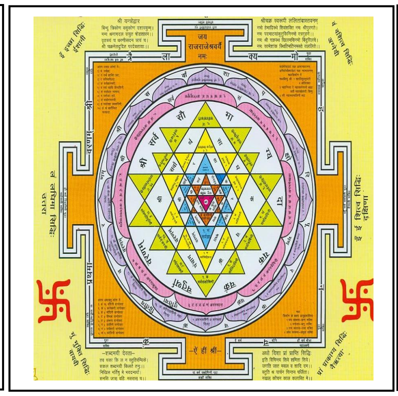
तरुणी तापसाराध्या तनुमध्या तमोऽपहा ॥ ७९॥

चितिस्तत्पद–लक्ष्यार्था चिदेकरस–रूपिणी ।

स्वात्मानन्द–लवीभूत–ब्रह्माद्यानन्द–सन्ततिः ॥ ८०॥

परा प्रत्यक्चितीरूपा पश्यन्ती परदेवता ।

मध्यमा वैखरीरूपा भक्त–मानस–हंसिका ॥ ८१॥

कामेश्वर–प्राणनाडी कृतज्ञा कामपूजिता ।

शृङ्गार–रस–सम्पूर्णा जया जालन्धर–स्थिता ॥ ८२॥

ओड्याणपीठ–निलया बिन्दु–मण्डलवासिनी ।

रहोयाग–क्रमाराध्या रहस्तर्पण–तर्पिता ॥ ८३॥

सद्यःप्रसादिनी विश्व–साक्षिणी साक्षिवर्जिता ।

षडङ्गदेवता–युक्ता षाड्गुण्य–परिपूरिता ॥ ८४॥

नित्यक्लिन्ना निरुपमा निर्वाण–सुख–दायिनी ।

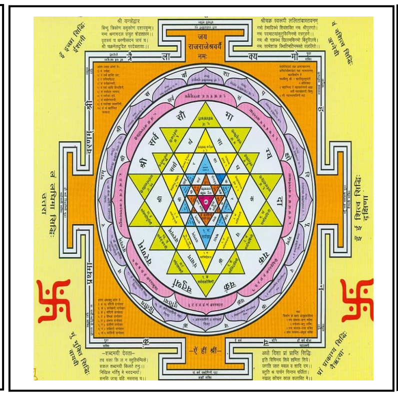
नित्या–षोडशिका–रूपा श्रीकण्ठार्ध–शरीरिणी ॥ ८५॥

प्रभावती प्रभारूपा प्रसिद्धा परमेश्वरी ।

मूलप्रकृति अव्यक्ता व्यक्ताव्यक्त–स्वरूपिणी ॥ ८६॥

व्यापिनी विविधाकारा विद्याविद्या–स्वरूपिणी ।

महाकामेश–नयन–कुमुदाह्लाद–कौमुदी ॥ ८७॥


भक्त–हार्द–तमोभेद–भानुमद्भानु–सन्ततिः ।

शिवदूती शिवाराध्या शिवमूर्तिः शिवङ्करी ॥ ८८॥

शिवप्रिया शिवपरा शिष्टेष्टा शिष्टपूजिता ।

अप्रमेया स्वप्रकाशा मनोवाचामगोचरा ॥ ८९॥

चित्तशक्ति चेतनारूपा जडशक्तिर् जड़ात्मिका ।

गायत्री व्याहृतिः सन्ध्या द्विजवृन्द–निषेविता ॥ ९०॥

तत्त्वासना तत्त्वमयी पञ्च–कोशान्तर–स्थिता ।

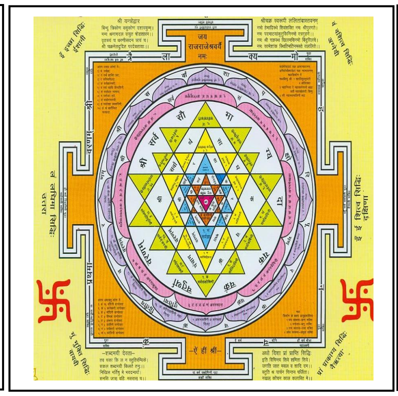
निःसीम–महिमा नित्य–यौवना मदशालिनी ॥ ९१॥

मदघूर्णित–रक्ताक्षी मदपाटल–गण्डभूः ।

चन्दन–द्रव–दिग्धाङ्गी चाम्पेय–कुसुम–प्रिया ॥ ९२॥

कुशला कोमलाकारा कुरुकुल्ला कुलेश्वरी ।

कुलकुण्डालया कौल–मार्ग–तत्पर–सेविता ॥ ९३॥


कुमार–गणनाथाम्बा तुष्टिः पुष्टिमर्तिधृतिः ।

शान्तिः स्वस्तिमती कान्तिनन्दिनी विघ्ननाशिनी ॥ ६४॥

तेजोवती त्रिनयना लोलाक्षी–कामरूपिणी ।

मालिनी हंसिनी माता मलयाचल–वासिनी ॥ ६५॥

सुमुखी नलिनी सुभ्रुः शोभना सुरनायिका ।

कालकण्ठी कान्तिमती क्षोभिणी सूक्ष्मरूपिणी ॥ ६६॥

वज्रेश्वरी वामदेवी वयोऽवस्था–विवर्जिता ।

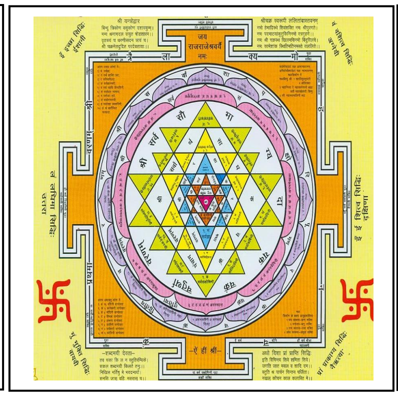
सिद्धेश्वरी सिद्धविद्या सिद्धमाता यशस्विनी ॥ ६७॥

विशुद्धिचक्र–निलयाऽऽरक्तवर्णा त्रिलोचना ।

खट्वाङ्गादि–प्रहरणा वदनैक–समन्विता ॥ ६८॥

पायसान्नप्रिया त्वक्स्था पशुलोक–भयङ्करी ।

अमृतादि–महाशक्ति–संवृता डाकिनीश्वरी ॥ ६९॥


अनाहताब्ज–निलया श्यामाभा वदनद्वया ।

दंष्ट्रोज्ज्वलाऽ अक्षमालादि–धरा रुधिरसंस्थिता ॥ १००॥

कालरात्र्यादि–शक्त्यौघ–वृता स्निग्धौदनप्रिया ।

महावीरेन्द्र–वरदा राकिण्यम्बा–स्वरूपिणी ॥ १०१॥

मणिपूराब्ज–निलया वदनत्रय–संयुता ।

वज्रादिकायुधोपेता डामर्यादिभिरावृता ॥ १०२॥

रक्तवर्णा मांसनिष्ठा गुडान्न–प्रीत–मानसा ।

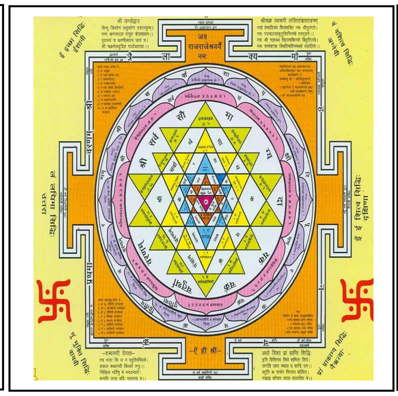
समस्तभक्त–सुखदा लाकिन्यम्बा–स्वरूपिणी ॥ १०३॥

स्वाधिष्ठानाम्बुज–गता चतुर्वक्त्र–मनोहरा ।

शूलाद्यायुध–सम्पन्ना पीतवर्णाऽतिगर्विता ॥ १०४॥

मेदोनिष्ठा मधुप्रीता बन्धिन्यादि–समन्विता ।

दध्यन्नासक्त–हृदया काकिनी–रूप–धारिणी ॥ १०५॥


मूलाधाराम्बुजारूढा पञ्च–वक्त्राऽस्थि–संस्थिता ।

अङ्कुशादि–प्रहरणा वरदादि–निषेविता ॥ १०६ ॥

मुद्गौदनासक्त–चित्ता साकिन्यम्बा–स्वरूपिणी ।

आज्ञा–चक्राब्ज–निलया शुक्लवर्णा षडानना ॥ १०७ ॥

मज्जासंस्था हंसवती–मुख्य–शक्ति–समन्विता ।

हरिद्रान्नैक–रसिका हाकिनी–रूप–धारिणी ॥ १०८ ॥

सहस्रदल–पद्मस्था सर्व–वर्णोप–शोभिता ।

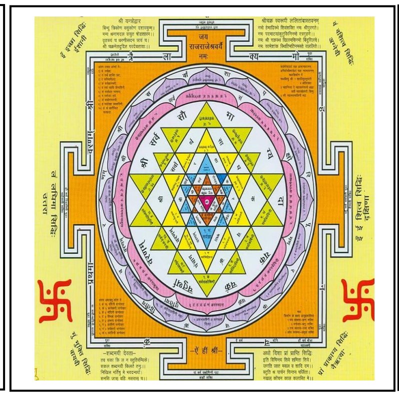
सर्वायुधधरा शुक्ल–संस्थिता सर्वतोमुखी ॥ १०९ ॥

सर्वौदन–प्रीतचित्ता याकिन्यम्बा–स्वरूपिणी ।

स्वाहा स्वधाऽमतिर्मेधा श्रुतिः स्मृतिअनुत्तमा ॥ ११० ॥

पुण्यकीर्तिः पुण्यलभ्या पुण्यश्रवण–कीर्तना ।

पुलोमजार्चिता बन्ध–मोचनी बन्धुरालका ॥ १११ ॥

विमर्शरूपिणी विद्या वियदादि–जगत्प्रसूः ।

सर्वव्याधि–प्रशमनी सर्वमृत्यु–निवारिणी ॥ ११२॥

अग्रगण्याऽचिन्त्यरूपा कलिकल्मष–नाशिनी ।

कात्यायनी कालहन्त्री कमलाक्ष–निषेविता ॥ ११३॥

ताम्बूल–पूरित–मुखी दाडिमी–कुसुम–प्रभा ।

मृगाक्षी मोहिनी मुख्या मृडानी मित्ररूपिणी ॥ ११४॥

नित्यतृप्ता भक्तनिर्धिनियन्त्री निखिलेश्वरी ।

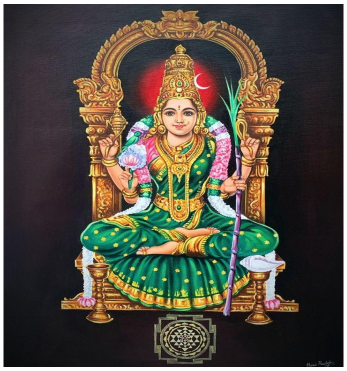
मैत्र्यादि–वासनालभ्या महाप्रलय–साक्षिणी ॥ ११५॥

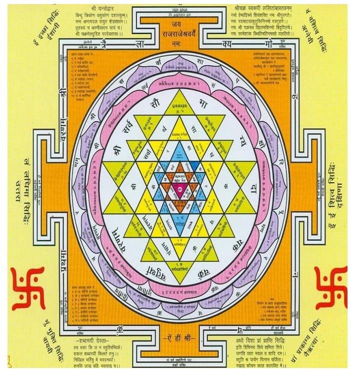
परा शक्तिः परा निष्ठा प्रज्ञानघन–रूपिणी ।

माध्वीपानालसा मत्ता मातृका–वर्ण–रूपिणी ॥ ११६॥

महाकैलास–निलया मृणाल–मृदु–दोर्लता ।

महनीया दयामूर्तिर्महासाम्राज्य–शालिनी ॥ ११७॥







आत्मविद्या महाविद्या श्रीविद्या कामसेविता ।

श्री–षोडशाक्षरी–विद्या त्रिकूटा कामकोटिका ॥ ११८॥

कटाक्ष–किङ्करी–भूत–कमला–कोटि–सेविता ।

शिरःस्थिता चन्द्रनिभा भालस्थेन्द्र–धनुःप्रभा ॥ ११९॥

हृदयस्था रविप्रख्या त्रिकोणान्तर–दीपिका ।

दाक्षायणी दैत्यहन्त्री दक्षयज्ञ–विनाशिनी ॥ १२०॥

दरान्दोलित–दीर्घाक्षी दर–हासोज्ज्वलन्–मुखी ।

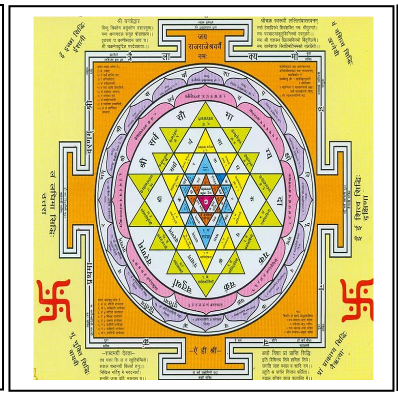
गुरुमूर्तिर्गुणनिधिर्गोमाता गुहजन्मभूः ॥ १२१॥

देवेशी दण्डनीतिस्था दहराकाश–रूपिणी ।

प्रतिपन्मुख्य–राकान्त–तिथि–मण्डल–पूजिता ॥ १२२॥

कलात्मिका कलानाथा काव्यालाप–विनोदिनी ।

सचामर–रमा–वाणी–सव्य–दक्षिण–सेविता ॥ १२३॥

आदिशक्तिर्अमेयाऽऽत्मा परमा पावनाकृतिः ।

अनेककोटि–ब्रह्माण्ड–जननी दिव्यविग्रहा ॥ १२४॥

क्लींकारी केवला गुह्या कैवल्य–पददायिनी ।

त्रिपुरा त्रिजगद्वन्द्या त्रिमूर्तिस् त्रिदशेश्वरी ॥ १२५॥

त्र्यक्षरी दिव्य–गन्धाढ्या सिन्दूर–तिलकाञ्चिता ।

उमा शैलेन्द्रतनया गौरी गन्धर्व–सेविता ॥ १२६॥

विश्वगर्भा स्वर्णगर्भाऽवरदा वागधीश्वरी ।

ध्यानगम्याऽपरिच्छेद्या ज्ञानदा ज्ञानविग्रहा ॥ १२७॥

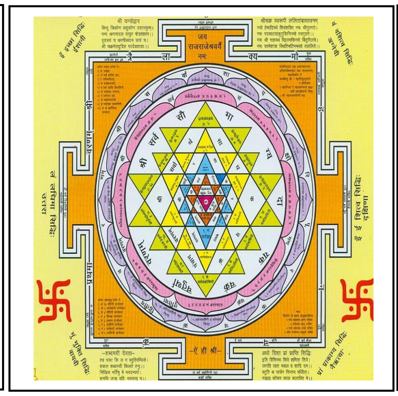
सर्ववेदान्त–संवेद्या सत्यानन्द–स्वरूपिणी ।

लोपामुद्रार्चिता लीला–क्लृप्त–ब्रह्माण्ड–मण्डला ॥ १२८॥

अदृश्या दृश्यरहिता विज्ञात्री वेद्यवर्जिता ।

योगिनी योगदा योग्या योगानन्दा युगन्धरा ॥ १२९॥







इच्छाशक्ति–ज्ञानशक्ति–क्रियाशक्ति–स्वरूपिणी ।

सर्वाधारा सुप्रतिष्ठा सदसद्रूप–धारिणी ॥ १३० ॥

अष्टमूर्तिर्अजाजैत्री लोकयात्रा–विधायिनी ।

एकाकिनी भूमरूपा निर्द्वैता द्वैतवर्जिता ॥ १३१ ॥

अन्नदा वसुदा वृद्धा ब्रह्मात्मैक्य–स्वरूपिणी ।

बृहती ब्राह्मणी ब्राह्मी ब्रह्मानन्दा बलिप्रिया ॥ १३२ ॥

भाषारूपा बृहत्सेना भावाभाव–विवर्जिता ।

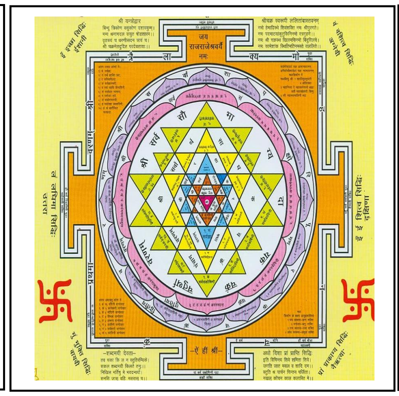
सुखाराध्या शुभकरी शोभना सुलभा गतिः ॥ १३३ ॥

राज–राजेश्वरी राज्य–दायिनी राज्य–वल्लभा ।

राजत्कृपा राजपीठ–निवेशित–निजाश्रिता ॥ १३४ ॥

राज्यलक्ष्मीः कोशनाथा चतुरङ्ग–बलेश्वरी ।

साम्राज्य–दायिनी सत्यसन्धा सागरमेखला ॥ १३५ ॥

दीक्षिता दैत्यशमनी सर्वलोक–वशङ्करी ।

सर्वार्थदात्री सावित्री सच्चिदानन्द–रूपिणी ॥ १३६॥

देश–कालापरिच्छिन्ना सर्वगा सर्वमोहिनी ।

सरस्वती शास्त्रमयी गुहाम्बा गुह्यरूपिणी ॥ १३७॥

सर्वोपाधि–विनिर्मुक्ता सदाशिव–पतिव्रता ।

सम्प्रदायेश्वरी साध्वी गुरुमण्डल–रूपिणी ॥ १३८॥

कुलोत्तीर्णा भगाराध्या माया मधुमती मही ।

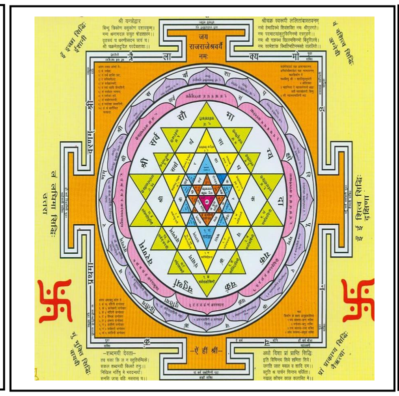
गणाम्बा गुह्यकाराध्या कोमलाङ्गी गुरुप्रिया ॥ १३९॥

स्वतन्त्रा सर्वतन्त्रेशी दक्षिणामूर्ति–रूपिणी ।

सनकादि–समाराध्या शिवज्ञान–प्रदायिनी ॥ १४०॥

चित्कलाऽऽनन्द–कलिका प्रेमरूपा प्रियङ्करी ।

नामपारायण–प्रीता नन्दिविद्या नटेश्वरी ॥ १४१॥

मिथ्या–जगदधिष्ठाना मुक्तिदा मुक्तिरूपिणी ।

लास्यप्रिया लयकरी लज्जा रम्भादिवन्दिता ॥ १४२॥

भवदाव–सुधावृष्टिः पापारण्य–दवानला ।

दौर्भाग्य–तूलवातूला जराध्वान्त–रविप्रभा ॥ १४३॥

भाग्याब्धि–चन्द्रिका भक्त–चित्तकेकि–घनाघना ।

रोगपर्वत–दम्भोलिर् मृत्युदारु–कुठारिका ॥ १४४॥

महेश्वरी महाकाली महाग्रासा महाशना ।

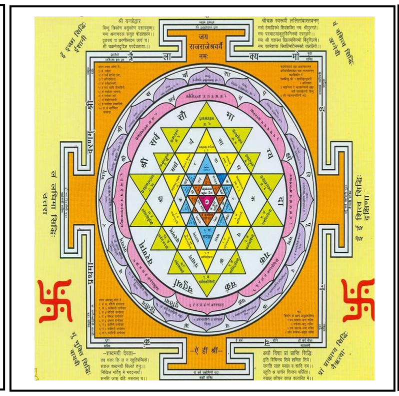
अपर्णा चण्डिका चण्डमुण्डासुर–निषूदिनी ॥ १४५॥

क्षराक्षरात्मिका सर्व–लोकेशी विश्वधारिणी ।

त्रिवर्गदात्री सुभगा त्र्यम्बका त्रिगुणात्मिका ॥ १४६॥

स्वर्गापवर्गदा शुद्धा जपापुष्प–निभाकृतिः ।

ओजोवती द्युतिधरा यज्ञरूपा प्रियव्रता ॥ १४७॥


दुराराध्या दुराधर्षा पाटली–कुसुम–प्रिया ।

महती मेरुनिलया मन्दार–कुसुम–प्रिया ॥ १४८॥

वीराराध्या विराड्रूपा विरजा विश्वतोमुखी ।

प्रत्यग्रूपा पराकाशा प्राणदा प्राणरूपिणी ॥ १४९॥

मार्ताण्ड–भैरवाराध्या मन्त्रिणीन्यस्त–राज्यधूः ।

त्रिपुरेशी जयत्सेना निस्त्रैगुण्या परापरा ॥ १५०॥

सत्य–ज्ञानानन्द–रूपा सामरस्य–परायणा ।

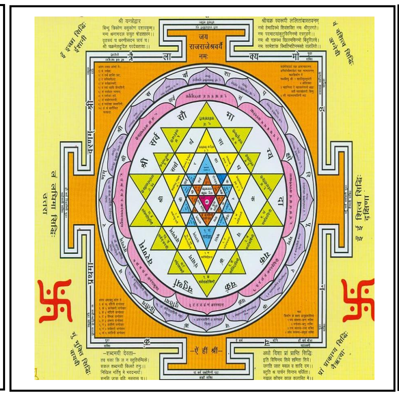
कपर्दिनी कलामाला कामधुक् कामरूपिणी ॥ १५१॥

कलानिधिः काव्यकला रसज्ञा रसशेवधिः ।

पुष्टा पुरातना पूज्या पुष्करा पुष्करेक्षणा ॥ १५२॥

परंज्योतिः परंधाम परमाणुः परात्परा ।

पाशहस्ता पाशहन्त्री परमन्त्र–विभेदिनी ॥ १५३॥


मूर्ताऽमूर्ताऽनित्यतृप्ता मुनिमानस–हंसिका ।

सत्यव्रता सत्यरूपा सर्वान्तर्यामिनी सती ॥ १५४॥

ब्रह्माणी ब्रह्मजननी बहुरूपा बुधार्चिता ।

प्रसवित्री प्रचण्डाऽऽज्ञा प्रतिष्ठा प्रकटाकृतिः ॥ १५५॥

प्राणेश्वरी प्राणदात्री पञ्चाशत्पीठ–रूपिणी ।

विशृङ्खला विविक्तस्था वीरमाता वियत्प्रसूः ॥ १५६॥

मुकुन्दा मुक्तिनिलया मूलविग्रह–रूपिणी ।

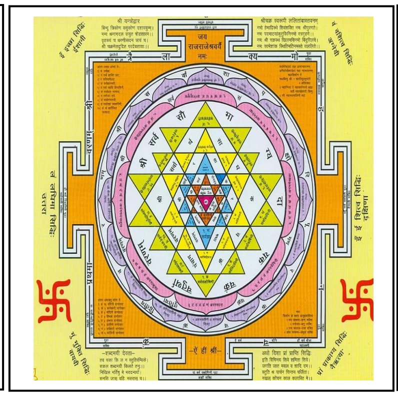
भावज्ञा भवरोगघ्नी भवचक्र–प्रवर्तिनी ॥ १५७॥

छन्दःसारा शास्त्रसारा मन्त्रसारा तलोदरी ।

उदारकीर्तिरुद्दामवैभवा वर्णरूपिणी ॥ १५८॥

जन्ममृत्यु–जरातप्त–जनविश्रान्ति–दायिनी ।

सर्वोपनिषद्–दुद्–घुष्टा शान्त्यतीत–कलात्मिका ॥ १५९॥

गम्भीरा गगनान्तस्था गर्विता गानलोलुपा ।

कल्पना–रहिता काष्ठाऽकान्ता कान्तार्ध–विग्रहा ॥ १६०॥

कार्यकारण–निर्मुक्ता कामकेलि–तरङ्गिता ।

कनत्कनकता–टङ्का लीला–विग्रह–धारिणी ॥ १६१॥

अजा क्षयविनिर्मुक्ता मुग्धा क्षिप्र–प्रसादिनी ।

अन्तर्मुख–समाराध्या बहिर्मुख–सुदुर्लभा ॥ १६२॥

त्रयी त्रिवर्गनिलया त्रिस्था त्रिपुरमालिनी ।

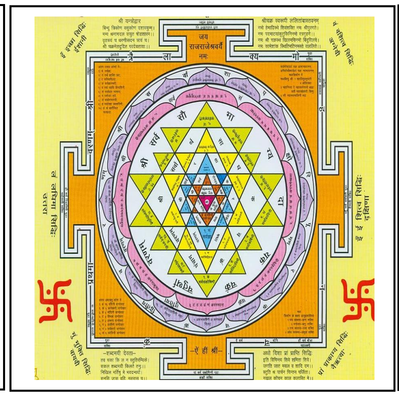
निरामया निरालम्बा स्वात्मारामा सुधासृतिः ॥ १६३॥

संसारपङ्क–निर्मग्न–समुद्धरण–पण्डिता ।

यज्ञप्रिया यज्ञकर्त्री यजमान–स्वरूपिणी ॥ १६४॥

धर्माधारा धनाध्यक्षा धनधान्य–विवर्धिनी ।

विप्रप्रिया विप्ररूपा विश्वभ्रमण–कारिणी ॥ १६५॥


विश्वग्रासा विद्रुमाभा वैष्णवी विष्णुरूपिणी ।

अयोनिर् योनिनिलया कूटस्था कुलरूपिणी ॥ १६६॥

वीरगोष्ठीप्रिया वीरा नैष्कर्म्या नादरूपिणी ।

विज्ञानकलना कल्या विदग्धा बैन्दवासना ॥ १६७॥

तत्त्वाधिका तत्त्वमयी तत्त्वमर्थ–स्वरूपिणी ।

सामगानप्रिया सौम्या सदाशिव–कुटुम्बिनी ॥ १६८॥

सव्यापसव्य–मार्गस्था सर्वापद्विनिवारिणी ।

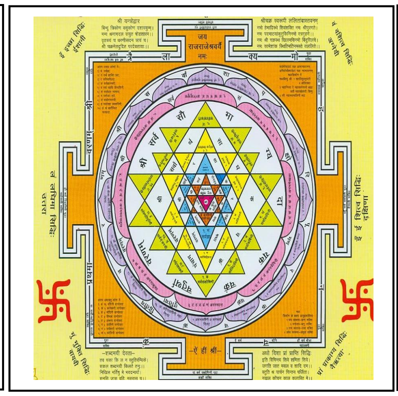
स्वस्था स्वभावमधुरा धीरा धीरसमर्चिता ॥ १६९॥

चौतन्यार्घ्य–समाराध्या चौतन्य–कुसुमप्रिया ।

सदोदिता सदातुष्टा तरुणादित्य–पाटला ॥ १७०॥

दक्षिणा–दक्षिणाराध्या दरस्मेर–मुखाम्बुजा ।

कौलिनी–केवलाऽनर्घ्य–कैवल्य–पददायिनी ॥ १७१॥

स्तोत्रप्रिया स्तुतिमती श्रुति–संस्तुत–वैभवा ।

मनस्विनी मानवती महेशी मङ्गलाकृतिः ॥ १७२॥

विश्वमाता जगद्धात्री विशालाक्षी विरागिणी ।

प्रगल्भा परमोदारा परामोदा मनोमयी ॥ १७३॥

व्योमकेशी विमानस्था वज्रिणी वामकेश्वरी ।

पञ्चयज्ञ–प्रिया पञ्च–प्रेत–मञ्चाधिशायिनी ॥ १७४॥

पञ्चमी पञ्चभूतेशी पञ्च–संख्योपचारिणी ।

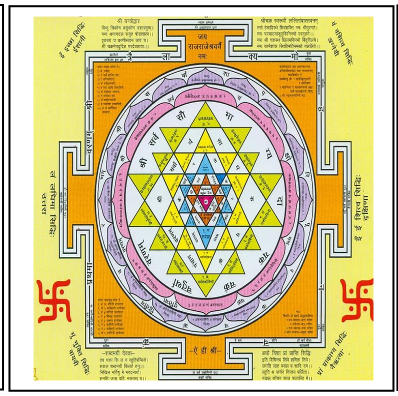
शाश्वती शाश्वतैश्वर्या शर्मदा शम्भुमोहिनी ॥ १७५॥

धराधरसुता धन्या धर्मिणी धर्मवर्धिनी ।

लोकातीता गुणातीता सर्वातीता शमात्मिका ॥ १७६॥

बन्धूक–कुसुमप्रख्या बाला लीलाविनोदिनी ।

सुमङ्गली सुखकरी सुवेषाढ्या सुवासिनी ॥ १७७॥

सुवासिन्यर्चन–प्रीताऽऽशोभना शुद्धमानसा ।

बिन्दु–तर्पण–सन्तुष्टा पूर्वजा त्रिपुराम्बिका ॥ १७८॥

दशमुद्रा–समाराध्या त्रिपुराश्री–वशङ्करी ।

ज्ञानमुद्रा ज्ञानगम्या ज्ञानज्ञेय–स्वरूपिणी ॥ १७९॥

योनिमुद्रा त्रिखण्डेशी त्रिगुणाम्बा त्रिकोणगा ।

अनघाऽद्भुत–चारित्रा वाञ्छितार्थ–प्रदायिनी ॥ १८०॥

अभ्यासातिशय–ज्ञाता षडध्वातीत–रूपिणी ।

अव्याज–करुणा–मूर्ति अज्ञान–ध्वान्त–दीपिका ॥ १८१॥

आबाल–गोप–विदिता सर्वानुल्लङ्घ्य–शासना ।

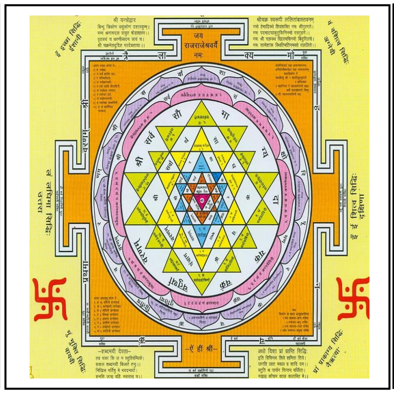
श्रीचक्रराज–निलया श्रीमत् त्रिपुरसुन्दरी ॥ १८२॥

श्रीशिवा शिव–शक्त्यैक्य–रूपिणी ललिताम्बिका ।

एवं श्रीललिता देव्या नाम्नां साहस्रकं जगुः ॥

॥ इति श्रीब्रह्माण्डपुराणे उत्तरखण्डे श्रीहयग्रीवागस्त्यसंवादे

श्रीललिता सहस्रनाम स्तोत्र कथनं सम्पूर्णम् ॥


फल श्रुति

विद्यां जपेत्सहस्रं वा त्रिशतं शतमेव वा ।

रहस्यनामसाहस्रमिदं पश्चात्पठेन्नरः ।।1।।

श्रीविद्या का जप एक सहस्र या तीन शत यद्वा शत जप कर पीछे सहस्रनाम का पाठ करे ।

जन्ममध्ये सकृच्चापि य एवं पठते सुधीः ।

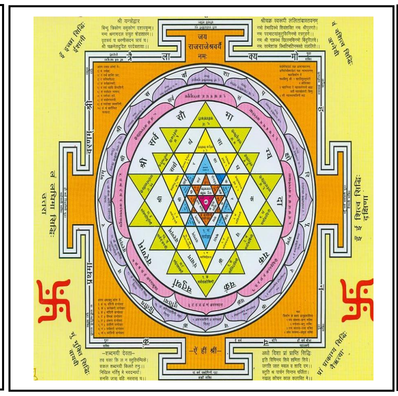
तस्य पुण्यफलं वक्ष्ये शृणु त्वं कुम्भसंभव ।।2।।

अपने जन्म में एक बार भी यदि जाननेवाला पुरुष इस सहस्रनाम का पाठ कर ले उसका माहात्म्य मैं तुमको बताता हूं ।

गंगादि सर्वतीर्थेषु यः स्नायात् कोटिजन्मसु ।

कोटिलिंगप्रतिष्ठां तु यः कुर्यादविमुक्तके ।।3।।

जिसने अनेक जन्मों में गङ्गा आदि सरिताओं में कोटि बार स्नान करके जो फल प्राप्त किया हो एवं करोड़ शिवलिङ्ग की प्रतिष्ठा की हो वह फल गङ्गा में बैठकर एक बार इस सहस्रनाम पाठ का है ।


कुरुक्षेत्रे तु यो दद्यात् कोटिवारं रविग्रहे ।

कोटिं सौवर्णभाराणां श्रोत्रियेषु द्विजन्मसु ।।4।।

कुरुक्षेत्र में कोटि बार सूर्य ग्रहण में कोटि भार स्वर्ण दान वेदवित् ब्राह्मणों को दान दिये हों, वह फल उसे होता है ।

यः कोटिं हयमेधानामाहरेंद्गाङ्गरोधसि ।

आचरेत्कृपकोटीर्यो निर्जले मरुभूतले ।।5।।

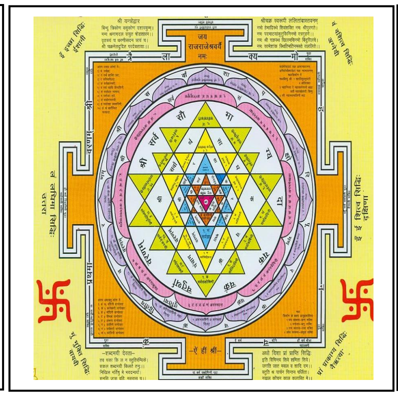
जिसने कोटि अश्वमेध यज्ञ किये हों तथा मरुभूमि में कोटि– कोटि कूप वावड़ी बनाई हो उसे जो फल होता है वह फल गङ्गागर्भ में सहस्रनाम पाठ से होता है ।

दुर्भिक्षं यरू प्रतिदिनं कोटिब्राह्मणभोजनम् ।

श्रद्धया परया कुर्यात्सहस्रपरिवत्सरान् ।।6।।

दुर्भिक्ष में कोटि ब्राह्मणों को सहस्रों वर्षों तक भोजन देने से जो फल होता है, वह श्रद्धापूर्वक इस सहस्रनाम पाठ से होता है ।







तत्पुण्यं कोटिगुणितं लभेत्पुण्यमनुत्तमम् ।

रहस्यनामसाहस्र नाम्नोऽप्येकस्य कीर्तनात्।।7।।

वह पुण्य कोटि–कोटि गुण उसे होता है जो गङ्गा में बैठकर ललितासहस्रनाम पाठ करता है ।

रहस्यनामसाहस्र नामैकमपि यः पठेत् ।

तस्य पापानि नश्यन्ति महान्त्यपि न संशयः ।।8।।

इस रहस्य सहस्रनाम में से एक नाम को भी जो श्रद्धा से जपता है उसके महापाप तक नाश हो जाते हैं ।

नित्यकर्माननुष्ठानान्निषिद्धकरणादपि ।

यत्पापं जायते पुंसां तत्सर्वं नश्यति द्रुतम् ।।9।।

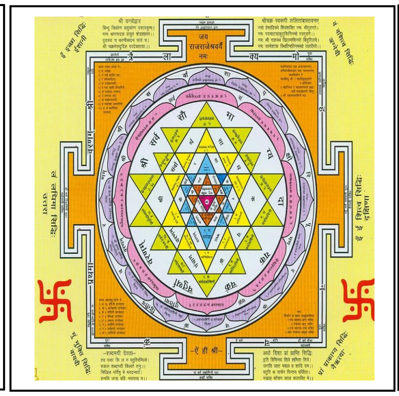
नित्यकर्म के परित्याग करने से तथा निषिद्ध कर्म के करने सेजो पाप होते हैं वे सब इस सहस्रनाम पाठ से नाश हो जाते हैं ।

बहुनात्र किमुक्तेन शृणु त्वं कलशीसुत ।

अत्रैकनाम्नो या शक्तिः पातकानां निवर्तने

।

तन्निवर्त्यमघं कर्तुं नालं लोकाश्चतुर्दश ।। 10।।


हे अगस्त्य मुनि ! अधिक क्या कहें इस सहस्रनाम में एक नाम में भी जो पापनाशिनी शक्ति है, वह चमत्कार चतुर्दश लोक में वह शक्ति नहीं है।

यस्त्यक्त्वानामसाहस्रं पापहानिमभीप्सति ।

स हि शीत निवृत्यर्थं हिमशैलं निषेवते ।।11।।

जो ललितासहस्रनाम का पाठ करे बिना पापों का नाश करना चाहता है उसकी यह प्रगति ऐसी है जैसी शीत पीड़ित व्यक्ति शीतवाधा निवारणार्थ हिमालय का आश्रय करे ।

भक्तो यः कीर्तयन्नित्यमिदं नाम सहस्रकम् ।

तस्मै श्रीललिता देवी प्रीताभीष्टं प्रयच्छति ।।12।।

जो भक्त इस सहस्रनाम का नित्य पाठ करता है भगवती श्री ललिता उसकी चाही हुई वस्तु उसे प्रदान करती है।

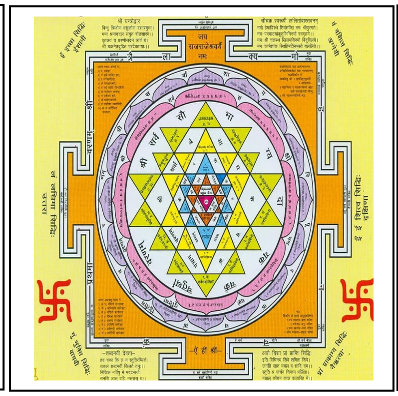
अकीर्तयन्निदं स्तोत्रं कथं भक्तो भविष्यति ।।13।।

इस सहस्रनाम का पाठ न करनेवाला भगवती ललिता का भक्त नहीं हो सकता है ।

नित्यं संकीर्तनाशक्तः कीर्तयेत्पुण्यवासरे ।

संक्रान्तौ विषुवे चौव स्वजन्मत्रितयेऽयने

।। 14 ।।

जो भक्त नित्य इस सहस्रनाम का पाठ करता है यद्वा संक्रान्तियों में तथा विषुवति संक्रान्ति और अपने जन्म दिन तथा उत्तरायण दक्षिणायन में ।

नवम्यां वा चतुर्दश्यां सितायां शुक्रवासरे ।

कीर्तयेन्नामसाहस्र पौर्णमास्यां विशेषतः ।।15।।

नवमी चतुर्दशी शुक्लपक्ष पूर्णमासी शुक्रवार को सहस्रनाम का पाठ करता है

पौर्णमास्यां चन्द्रविम्बे ध्यात्वा श्रीललिताम्बिकाम् ।

पञ्चोपचारैः संपूज्य पठेन्नामसहस्रकम् ।।16।।

पूर्णमासी को चन्द्रविम्ब में भगवती ललिता का ध्यान कर पञ्चोपचार से पूजन कर ललितासहस्रनाम का पाठ करे ।

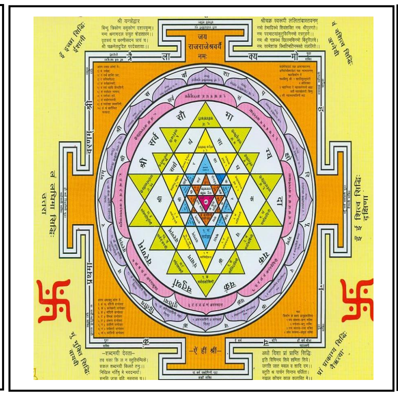
सर्वे रोगाः प्रणश्यन्ति दीर्घमायुश्च विन्दति ।

अयमायुष्करो नाम प्रयोगः कल्पनोदितः ।।17।।

उसके सम्पूर्ण रोग दूर होकर वह दीर्घायु प्राप्त करता है । कल्पशास्त्र में इस सहस्रनाम के पाठ को दीर्घायु करनेवाला बताया है ।

ज्वरात शिरसि स्पृष्ट्वा पठेन्नामसहस्रकम् ।

तत्क्षणात्प्रशमं याति शिरस्तोदो ज्वरोऽपि च ।।18।।

जिस ज्वर की बीमारी हो उसके शिर पर हाथ रखकर इस सहस्रनाम के पाठ करने से उसकी ज्वर–बाधा शान्त हो जाती है।

सर्वव्याधिनिवृत्त्यर्थं स्पृष्ट्वा भस्म जपेदिदम् ।

तद्भस्मधारणादेव नश्यन्ति व्याधयः क्षणात् ।।19।।

सब प्रकार की व्याधि शमन करने के हेतु हवन की शुद्ध भस्म लेकर इस सहस्रनाम पाठ कर उसे अभिमन्त्रित कर शरीर पर लगाने से सब प्रकार की शरीर की बीमारियां खुजली आदि शान्ति हो जाती हैं ।

जलं संमन्त्र्य कुम्भस्थं नामसाहस्रतो मुने ।

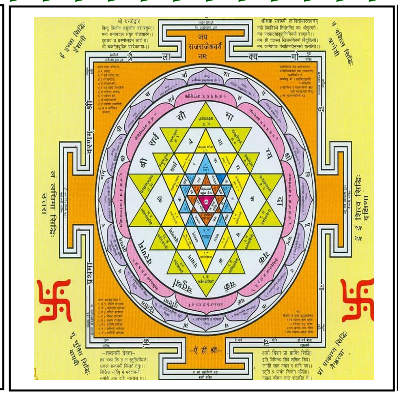
अभिषिञ्चेद्ग्रहप्रस्तान्ग्रहा नश्यन्ति तत्क्षणात् ।।20।।

जिसे ग्रह कष्टदायी आ रहे हैं। वह एक कुम्भ में जल को रखकर इस सहस्रनाम को पढ़ता हुआ जल को मन्त्रित कर उस जल से सहस्रनाम से अभिषेक करे तो दुष्ट ग्रहों की शान्ति हो जाती है ।

सुधासागरमध्यस्थां ध्यात्वा श्रीललिताम्बिकाम् ।

यः पठेन्नामसाहस्रं विषं तस्य विनश्यति ।।21।।

अपने मन में यह भावना करे कि भगवती ललिता अमृत के समुद्र में बैठी हुई है। इस प्रकार भावना कर सहस्रनाम का पाठ करने से विष का दोष शान्त हो जायगा ।


वन्ध्यानां पुत्रलाभाय नामसाहस्रमन्त्रितम् ।

नवनीतं प्रदद्यात्तु पुत्रलाभो भवेद्ध्रुवम् ।।22।।

जिस स्त्री के बच्चे न होते हों उसे नवनीत (मक्खन) को इस ललितासहस्रनाम से मन्त्रित कर ११ दिन तक देवे उसको पुत्र लाभ होगा ।

देव्याः पाशेन संबद्धामाकृष्टामङ्कशेन च ।

ध्यात्वाभीष्टां स्त्रियं रात्रौ पठेन्नामसहस्रकम्।।23।।

जो कोई पाश से बद्ध हो रस्सी से बँधा हुआ घसीटा जाता हो वह रात्रि में स्त्रीरूप में देवी का ध्यान कर सहस्रनाम को पढ़े तो पाश मुक्त हो जायगा ।

आयाति स्वसमीपं सा यद्यण्यन्तः पुरं गता ।

राजाकर्षण कामश्चेद्राजावसथदिङ्मुखः ।।24।।

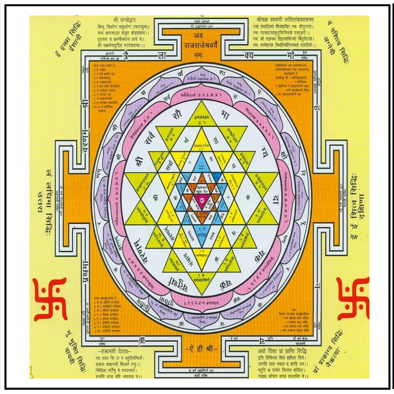
इस सहस्रनाम पाठ से स्त्री का एवं राजा का आकर्षण होता है।

त्रिरात्रं यः पठेदेतच्छ्रीदेवीध्यानतत्परः ।

स राजा पारवश्येन तुरंगं वा मतङ्गजम् ।।25।।

आरुह्य याति निकटं दासवत्प्रणिपत्य च ।

तस्मै राज्यं च कोशं च दद्यादेव वशंगतः ।।26।।


तीन रात्रि ध्यानपूर्वक जो इस सहस्रनाम को पढ़ता है, उसके पास घोड़े हाथी पर सवार होकर राजा आता है, उसके चरण में पड़ता है, अपना राज्य तक उसे न्योछावर करने को उद्यत हो जाता है ।

रहस्यनामसाहस्रं यः कीर्तयति नित्यशः ।

तन्मुखालोकमात्रेण मुघल्लोकत्रयं मुने ।।27।।

ललितासहस्रनाम जो नित्य पाठ करता है उसको देखकर त्रैलोक्य मोहित हो जाता है ।

यस्त्विद्नामसाहस्रं सकृत्पठति भक्तिमान् ।

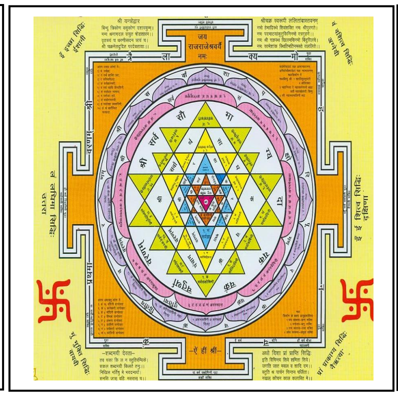
तस्य ये शत्रवस्तेषां निहन्ता शरभेश्वरः ।। 28।।

जो एक बार भी इस सहस्रनाम का पाठ करता है वह शत्रु पर विजय पानेवाला होता है ।

यो वाभिचारं कुरुते नामसहस्रपाठके ।

निवर्त्य तत्क्रियां हन्यात्तं वै प्रत्यङ्गिरा स्वयम् ।।29।।

जो सहस्रनाम पाठ करनेवाले को अभिचार मन्त्र करता है प्रत्यंगिरा रूप में भगवती स्वयं आकर उस जादू करनेवाले को मार देती है ।

ये क्रूरदृष्ट्या वीक्षन्ते नामसाहस्रपाठकम् ।

तानन्धाकुरुते क्षिप्रं स्वयं मार्तण्डभैरवः ।।30।।

जो सहस्रनाम पाठ करनेवाले को क्रूर दृष्टि से देखता है उसके नेत्र नष्ट हो जाते हैं अर्थात् अन्धा हो जाता है ।

धनं यो हरते चोरैर्नामसाहस्रजापिनः ।

यत्र कुत्रस्थितं वापि क्षेत्रपालो निहन्ति तम् ।।31।।

सहस्रनाम पाठ करनेवाले का जो चोरी करके धन ले जाता है क्षेत्रपाल उस चोर को मार देता है ।

विद्यासु कुरुते वादं यो विद्वान्नामजापिनः ।

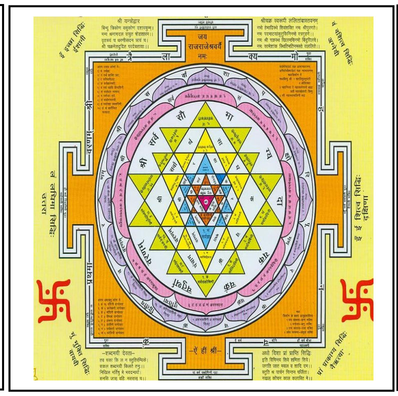
तस्य वाक्स्तम्भनं सद्यः करोति नकुलीश्वरी ।।32।।

जो विद्वान् सहस्रनामपाठी के साथ शास्त्रार्थ करता है नकुलीश्वरी देवी उस मिथ्यावादी की वाणी स्तम्भन कर देती है ।

यो राजा कुरुते वैरं नाम साहस्रजापिनः ।

चतुरंङ्गवलं तस्य दण्डिनी संहरेत्स्वयम् ।।33।।

जो राजा सहस्रनाम पाठ करनेवाले भक्त के साथ वैर–भाव रखता है दण्डनी शक्ति उस राजा के बल सैन्य को नाश कर देती है।

यः पठेन्नामसाहस्रं षण्मासं भक्तिसंयुतः ।

लक्ष्मीश्चांचल्यरहिता सदा तिष्ठति तद्गृहे ।।34।।

जो इस सहस्रनाम को निश्चल होकर षण्मास तक पाठ करता है उसके घर में लक्ष्मी निश्चल होकर रहती है ।

मासमेकं प्रतिदिनं त्रिवारं य पठेन्नरः ।

भारती तस्य जिह्वाग्रे रङ्ग नृत्यति नित्यशः ।।35।।

जो साधक एक महीने तक नित्य तीन वार सहस्रनाम पाठ करे उसकी जिह्वा में सरस्वती निवास करती है ।

यस्त्वेकवारं पठति पक्षमेकमतन्द्रितः ।

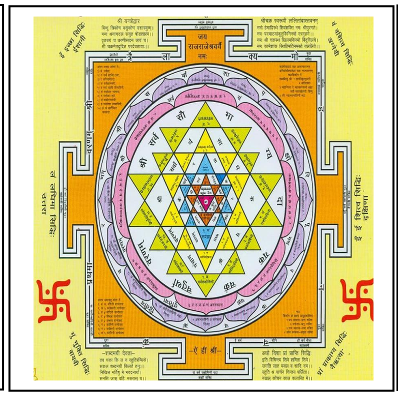
मुह्यन्ति कामवशगा मृगाक्ष्यस्तस्य वीक्षणात् ।।36।।

जो एक पक्ष तक नित्य एक वार पाठ करता है उसपर स्त्री वशीभूत हो जाती है ।

यः पठेन्नामसाहस्रं जलमध्ये सकृन्नरः ।

तद्दृष्टिगोचराः सर्वे मुच्यन्ते सर्वकिल्विषैः ।।37।।

जो जल के बीच जाकर सहस्रनाम पढ़ता है उसकी दृष्टि जहां पड़े उनके भी पाप नाश हो जाते हैं ।


यो वेत्ति नामसाहस्रं तस्मै देयं द्विजन्मने ।

अन्नं वस्त्रं धनं धान्यं नान्येभ्यस्तु कदाचन ।।38।।

जो ब्राह्मण सहस्रनाम का पाठ करता है उसे अन्न, वस्त्र, धन–धान्य देना चाहिये ।

श्री मन्त्रराजं यो वेत्ति श्रीचक्रं यः समर्चति ।

यः कीर्तयति नामानि तं सत्पात्रं विदुर्बुधा ।।39।।

जो श्री मंत्र राज षोडशाक्षरी को जानता है और श्री यंत्र का पूजन करता है तथा सहस्रनाम पाठ करता है वह सत्पात्र कहलाने योग्य है।

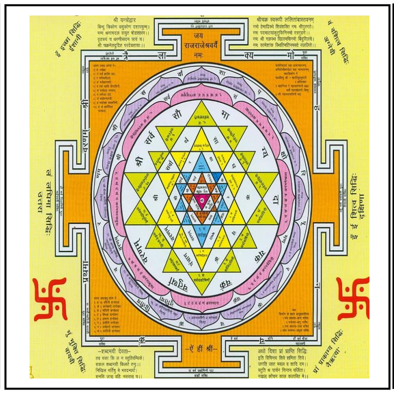
तस्मै देयं प्रयत्नेन श्रीदेवीप्रीतिमिच्छता ।

यः कीर्तयति नामानि मन्त्रराजं न वेत्ति यः ।।40।।

भगवती की प्रसन्नता चाहनेवाले को चाहिये उसको सब कुछ देवे। जो केवल नाम कीर्तन जानता है और मन्त्रराज श्री विद्या के मन्त्र को नहीं जानता है ।

पशुतुल्यः स विज्ञेयस्तस्मै दत्तं निरर्थकम् ।

परीक्ष्य विद्याविदुषस्तेभ्यो दद्याद्विचक्षणः ।।41।।


वह पशु तुल्य है उसे दान देना निरर्थक है अन्य साधक की परीक्षा श्री विद्या में पहले करे ।

श्रीमन्त्रराजसदृशो यथा मन्त्रो न विद्यते ।

देवता ललितातुल्या यथा नास्ति घटोद्भव ।।42।।

श्री मन्त्रराज के तुल्य और मन्त्र नहीं है एवं भगवती ललिता के समान उपासनाधिनायिका अन्य विद्या नहीं है ।

रहस्यनामसाहस्रतुल्या नास्ति तथा स्तुतिः ।

लिखित्वा पुस्तके यस्तु नामसाहस्रमुत्तमम् ।।43।।

इस सहस्रनाम रहस्य की तुलना अन्य किसी स्तोत्र पाठ से नहीं है। सहस्रनाम पुस्तक लिखकर उसका पूजन कर जो दान करता है उसपर भगवती प्रसन्न होती है ।

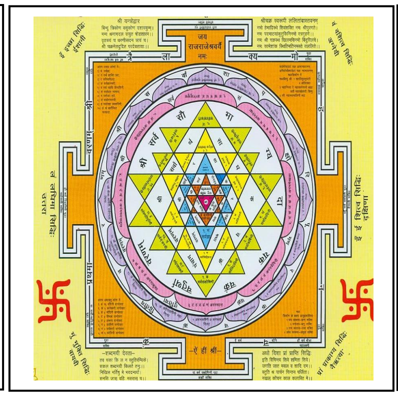
समर्चयेत्सदाभक्त्या तस्य तुष्यति सुन्दरी ।

बहुनात्र किमुक्तो न शृणु त्वं कुम्भसंभव ।।44।।

हे अगस्त्य मुनि ! अधिक क्या कहें तुम सुनो।

नानेन सदृशं स्तोत्रं सर्वतन्त्रेषु विद्यते ।

तस्मादुपासको नित्यं कीर्तयेदिदमादरात् ।।45।।

इस सहस्रनाम के सदृश दूसरा स्तोत्र नहीं अतः उपासक को इसका नित्य पाठ करना चाहिये ।

एभिर्नामसहस्र स्तु श्रीचक्रं योऽर्चयेत्सकृत् ।

पद्म वा तुलसीपुष्पैः कल्हारैर्वा कदम्बकैः ।।46।।

चम्पकैर्जातिकुसुमैर्मल्लिकाकरवीरकैः ।

उत्पलैर्बिल्वपत्रैर्वा कुन्दकेशरपाटलैः ।।47।।

अन्यैः सुगन्धिकुसुमैः केतकीमाधवीमुखैः ।

तस्य पुण्यफलं वक्तुं न शक्नोति महेश्वरः ।।48।।

जो साधक इस सहस्रनाम के एक नाम से विल्वपत्र या

तुलसीपत्र से जाती पुष्प कमल चम्पा पाटलपुष्प से ।

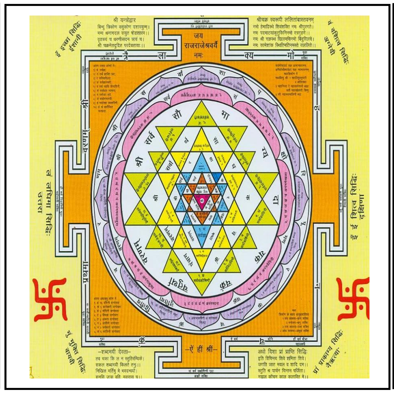
यद्वा अन्य सुगन्धित पुष्पों से उस उपासक पूजा करनेवाले को जो महान् फल होता है उसका वर्णन शिव भी नहीं कर सकते हैं ।

सा वेत्ति ललितादेवी स्वचक्रार्चनजं फलम् ।

अन्ये कथं विजानीयुत्र ब्रह्माद्याः स्वल्पमेधसः ।।49।।

भगवती ललिता ही उस पूजा का फल जान सकती है और ब्रह्मादिक नहीं जान सकते ।

प्रतिमासं पौर्णमास्या मेभिर्नामसहस्रकैः ।

रात्रौ यश्चक्रराजस्थामर्चयेत्परदेवताम् ।।50।।

स एव ललितारूपस्तद्रूपा ललिता स्वयम् ।

न तयोर्विद्यते भेदो भेदकृत्पापकृद्भवेत् ।।51।।

जो साधक प्रतिमास पूर्णमासी की रात्रि में श्री चक्र से ललिता का पूजन कर इस स्तोत्र को पढ़ता है वह देवी के स्वरूप को प्राप्त कर लेता है ।

महानवम्यां यो भक्तः श्रीदेवीं चक्रमध्यगाम् ।

अर्चयेन्नामसाहस्ररू तस्य मुक्तिः करे स्थिता ।।52।।

जो महानवमी के दिन भक्तिपूर्वक देवी की सहस्रनाम से पूजा करता है उसकी मुक्ति होती है ।

यस्तु नामसहस्रोण शुक्रवारे समर्चयेत् ।

चक्रराजे महादेवीं तस्य पुण्यफलं शृणु ।।53।।

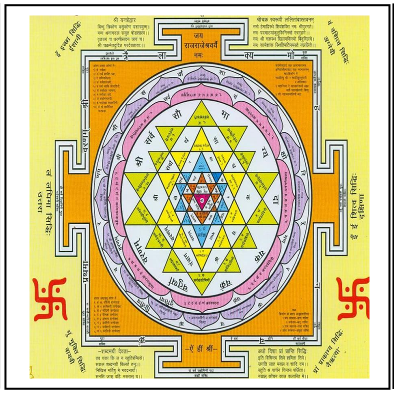
जो शुक्रवार को सहस्रनाम से देवी का पूजन करता है उसके पुण्य को श्रवण करो।

सर्वान् कामानवाप्येह सर्वसौभाग्यसंयुतः ।

पुत्रपौत्रादिसंयुक्तो भुक्त्वा भोगान्यथेप्सितान्।।54।।

अन्ते श्रीललितादेव्याः सायुज्यमतिदुर्लभम् ।

प्रार्थनीयं शिवाद्यैश्च प्राप्नोत्येव न संशयः ।।55।।

सहस्रनाम पाठ करनेवाले की सब कामना सफल हो जाती है वह सर्व सौभाग्य सम्पन्न पुत्र पौत्रादि सम्पन्न होकर संसार में सुख भोग भोगकर अन्त में भगवती ललिता देवी द्वारा सायुज्य मुक्ति को प्राप्त होता है ।

यः सहस्रं ब्राह्मणानामेभिर्नामसहस्रकैः ।

समर्च्य भोजयेद्भक्त्या पायसापूपषड्सैः।।56।।

जो इस सहस्रनाम के एक–एक नाम से एक सहस्र ब्राह्मणों का भक्ति से पूजन एवं षट्रस युक्त पायस और मालपूओं से भोजन करवाता है ।

तस्मै प्रीणाति ललिता स्वसाम्राज्यं प्रयच्छति ।

न तस्य दुर्लभं वस्तु त्रिषु लोकेषु विद्यते।।57।।

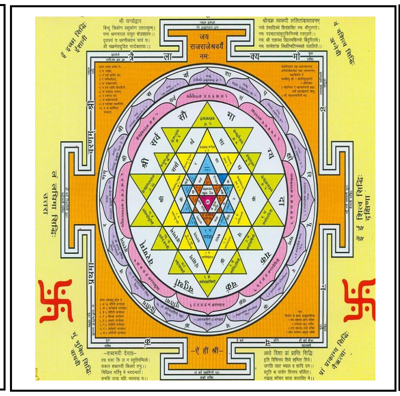
भगवती ललिता उस साधक पर प्रसन्न होकर उसे सायुज्य मुक्ति दे देती है उसको कुछ भी दुर्लभ नहीं है।

निष्कामः कीर्तयेद्यस्तु नामसाहस्रमुत्तमम् ।

ब्रह्मज्ञानमवाप्नोति येन मुच्येत बन्धनात् ।।58।।

जो साधक निष्काम इस सहस्रनाम से ललिता का पूजन करता है वह ब्रह्मज्ञान प्राप्त करता है ।

धनार्थी धनमाप्नोति यशोर्थि प्राप्नुयाद्यशः ।

विद्यार्थी चाप्नुयाद्विद्यां नामसाहस्रकीर्तनात् ।।59।।

विद्यार्थी पूर्ण विद्या प्राप्त कर लेता है इस सहस्रनाम के पाठ करने से तथा अन्त में भोग भोगकर मोक्ष प्राप्त करता है ।

नानेन सदृशं स्तोत्रं भोगभोक्षप्रदं मुने ।

कीर्तनीयमिदं तस्माद्भोगमोक्षार्थिभिनेरैः ।।60।।

इस कारण भोग मोक्षार्थी को इस सहस्रनाम का पाठ करना चाहिये ।

चतुराश्रमनिष्ठश्च कीर्तनीयमिदं सदा ।

स्वधर्मसमनुष्ठान वैकल्पपरिपूर्तये ।।61।।

चारों आश्रमवालों को अपने आश्रम धर्म के अनुष्ठान के समय ही इसका पाठ करना चाहिये ।

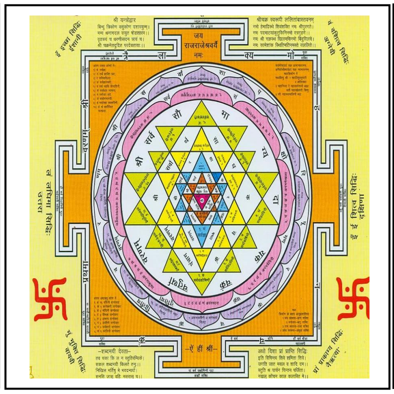
कलौ पापैकबहुले धर्मानुष्ठानवर्जिते ।

नामानुकीर्तनं मुक्त्वा नृणां नान्यत्परायणम् ।।62।।

कलियुग में पाप के प्रचुर होने से धर्मानुष्ठान से जनता वर्जित रह जाती है इस काल में मनुष्यों के उद्धार करनेवाला सहस्रनाम का पाठ ही है ।

लौकिकाद्वचनान्मुख्यं विष्णुनामा नुकीर्तनम् ।

विष्णुनामसहस्राच्च शिवनामैकमुत्तमम् ।।63।।


पुराणादि धर्म शास्त्रों से भी यही मिलता है कि विष्णु नाम कीर्तन श्रेष्ठ है विष्णु सहस्रनाम से शिव सहस्रनाम श्रेष्ठ है।

शिवनामसहस्राच्च देव्या नामैकमुत्तमम् ।

देवीनामसहस्राणि कोटिशः सन्ति कुम्भज ।।64।।

शिवसहस्रनाम से भी देवी सहस्रनाम उत्तम है। देवी सहस्र नाम भी कोटि–कोटि संख्या के है ।

तेषु मुख्यं दशविधं नामसाहस्रमुच्यते ।

रहस्यनामसाहस्रमिदं शस्तं दशस्वपि ।।65।।

उन सब सहस्रनामों में मुख्य दश महाविद्याओं के दश सहस्र नाम उन दश से भी ललितासहस्रनाम सर्वोपरि है ।

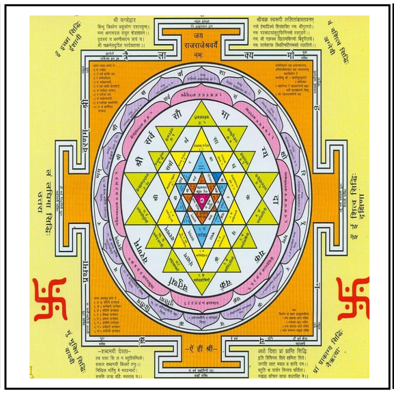
तस्मात्संकीर्तयेन्नित्यं कलिदोषनिवृत्तये ।

मुख्यं श्रीमातृनामेति न जानन्ति विमोहिताः ।।66।।

अतः कलिदोषों के विनाश के लिये ललितासहस्रनाम का पाठ करना श्रेष्ठ है ।जो साधक इन मुख्य नामों को नहीं जानते हैं ।

विष्णुनामपराः केचिच्छिवनामपराः परे ।

न कश्चिदपि लोकेषु ललितानामतत्परः ।।67।।

विष्णु सहस्रनाम के पाठक तथा शिवसहस्रनाम के पाठक कई मिल सकते हैं, परन्तु ललितासहस्रनाम पाठ करनेवाले संसार में बिरले ही है ।

येनान्यदेवतानाम कीर्तितं जन्मकोटिषु ।

तस्यैव भवति श्रद्धा श्रीदेवी नामकीर्तने ।।68।।

जिसने पहले जन्म में देवताओं का नाम कीर्तन किया है । उसी की इस जन्म में ललितासहस्रनाम पाठ करने की श्रद्धा होती है ।

चरमे जन्मनि यथा श्रीविद्योपासको भवेत् ।

नामसाहसपाठश्च तथा चरमजन्मनि ।।69।।

अन्तिम अवस्था में जिस प्रकार श्रीविद्या की उपासना हो उसी प्रकार पिछली अवस्था में सहस्रनाम का भी पाठ करे ।

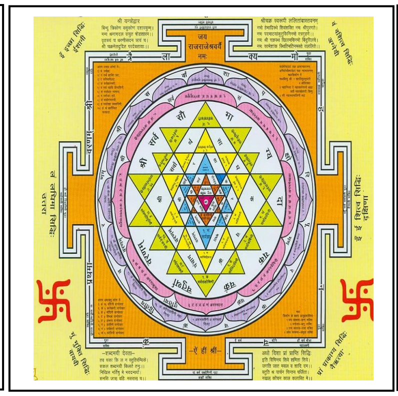
यथैव विरला लोके श्रीविद्याचारवे दिनः ।

तथैव विरलो गुह्यनामसाहसूपाठकः ।।70।।

जिस प्रकार संसार में श्री विद्या के उपासक कोई विरले मनुष्य होते है। इसी प्रकार सहस्रनाम पाठ करनेवाले विरले ही होते हैं ।

मन्त्रराजजपश्चौव चक्रराजार्चनं तथा ।

रहस्यनामपाठश्च नाल्पस्य तपसः फलम् ।।71।।

श्रीयन्त्र का पूजन, श्री विद्या का जप और ललितासहस्रनाम का पाठ जिसने बहुत पुण्य किये हो उसको मिलते हैं ।

अपठन्नामसाहस्रं प्रीणयेद्यो महेश्वरीम् ।

स चक्षुषा विना रूपं पश्येदेव विमूढधीः ।।72।।

जो चाहे बिना ललिता सहस्रनाम पाठ करे भगवती को प्रसन्न कर ले उसका यह विचार ऐसा है कि बिना नेत्रों के रूप को देखना ।

रहस्यनामसाहस्रं त्यक्त्वा यः सिद्धिकामुकः ।

स भोजनं विना नूनं क्षुन्निवृत्तिमभीप्सति ।।73।।

बिना सहस्रनाम पाठ करे जो साधक सिद्धि चाहता है उसका यह विचारना ऐसा है जैसे बिना भोजन किये पेट भर जाय ।

यो भक्तो ललितादेव्याः स नित्यं कीर्तयेदिदम् ।

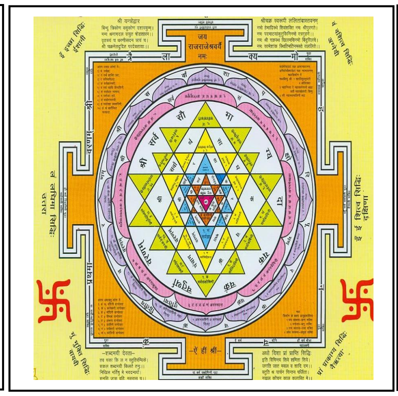
नान्यथा प्रीयते देवी कल्पकोटिशतैरपि ।।74।।

जो ललिता देवी का भक्त हो उसे चाहिये कि वह ललिता सहस्र नाम का नित्य पाठ करे ।अन्य किसी भी प्रकार से देवी प्रसन्न नहीं होती है ।

तस्माद्रहस्यनामानि श्रीमातुः प्रयतः पठेत् ।

इति ते कथितं स्तोत्रं रहस्यं कुम्भसंभव ।।75।।







अतः शुद्ध होकर भगवती के सहस्रनाम स्तोत्र का पाठ करे ।

हे अगस्त्य मुनि ! यह हमने तुमको ललिता का रहस्य प्रकट कर दिया है ।

नाविद्यानेदिने ब्रयान्नाभक्ताय कदाचन ।

यथैव गोप्या श्रीविद्या तथा गोप्यमिदं मुने ।।76।।

जो श्री विद्या का उपासक न हो तथा भगवती का भक्त न हो उसे यह सहस्रनाम नहीं बताना। जिस प्रकार श्री विद्या गोप्य है इसी प्रकार यह सहस्रनाम गोप्य है ।

पशुतुल्येषु न न याज्जनेषु स्तोत्रमुत्तमम् ।

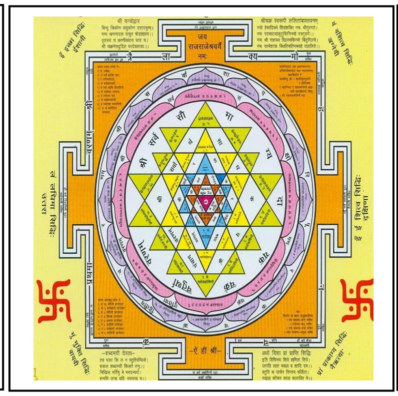
यो ददाति विमूढ़ात्मा श्रीविद्यारहिताय तु ।।77।।

पशु पास में जकड़े अर्थात् जो उपाशना नहीं जानते हैं उनको जो यह सहस्रनाम बताता है उसकी श्रीविद्या सिद्ध नहीं होती है।

तस्मै कुप्यन्ति योगिन्यः सोऽनर्थः सुमहान्स्मृतः ।

रहस्यनामसाहस्रं तस्मात्संगोपये दिदम् ।।78 ।।

इस प्रकार के अनधिकारी को जो यह सहस्रनाम बताता है योगिनी शक्ति उसपर कुपित होती है अतः अनधिकारी से इसे गुप्त रक्खे ।

स्वतन्त्रेण मया नोक्तं तवापि कलशीभव।

ललिताप्रेरणादेव मयोक्तं स्तोत्रमुत्तमम् ।।79।।

हयग्रीव भगवान् कहते हैं–– हे अगस्त्य मुनि ! यह मैंने स्वतंत्र रूप से तुम्हें नहीं कहा अपितु भगवती ललिता की प्रेरणा से ही तुझे बताया है।

कीर्तनीयमिदं भक्तया कुम्भयोने निरन्तरम् ।

तेन तुष्टा महादेवी तवाभीष्ट प्रदास्यति ।।80।।

हे अगस्त्य मुनि ! नित्य इस सहस्रनाम का पाठ करने से भगवती ललिता प्रसन्न होती है।

सूत उवाच

इत्युक्त्वा श्रीहयग्रीवो ध्यात्वा श्रीललिताम्बिकाम् ।

आनन्दममहृदयः सद्यः पुलकितोऽभवत् ।।81।।

इस प्रकार जब हयग्रीव भगवान् ने अगस्त्य को कहा तब अगस्त्यजी का हृदय आनन्द से मन और शरीर पुलकित हो गया ।

।। इति श्रीब्रह्माण्डपुराणे ललितोपाख्याने हयग्रीवागस्त्य

संवादे ललितासहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

ललिता गायत्रीः

ऊँ कमलासनाय विद्महे शिवप्रियाये धीमहि तन्नो ललिता प्रचोदयात्।।

पंचदशी मंत्रः

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

मैं कोई सिद्ध साधक या विद्वान नहीं हूँ, न ही मुझे शास्त्रों अथवा मंत्र तंत्र यंत्र आदि का विशेष ज्ञान है।

सिर्फ माँ ललिता का भक्त हूँ, मुझे जो जानकारी इंटरनेट से प्राप्त हुई उसे अपनी अल्प बुद्धि से संकलित कर यह रचना की है। इस पर मेरा कोई दावा या हक नहीं है, न ही इसको बेचने या इससे धन उपार्जन करने की ईच्छा है।

क्या सही है, क्या गलत मैं नहीं जानता,

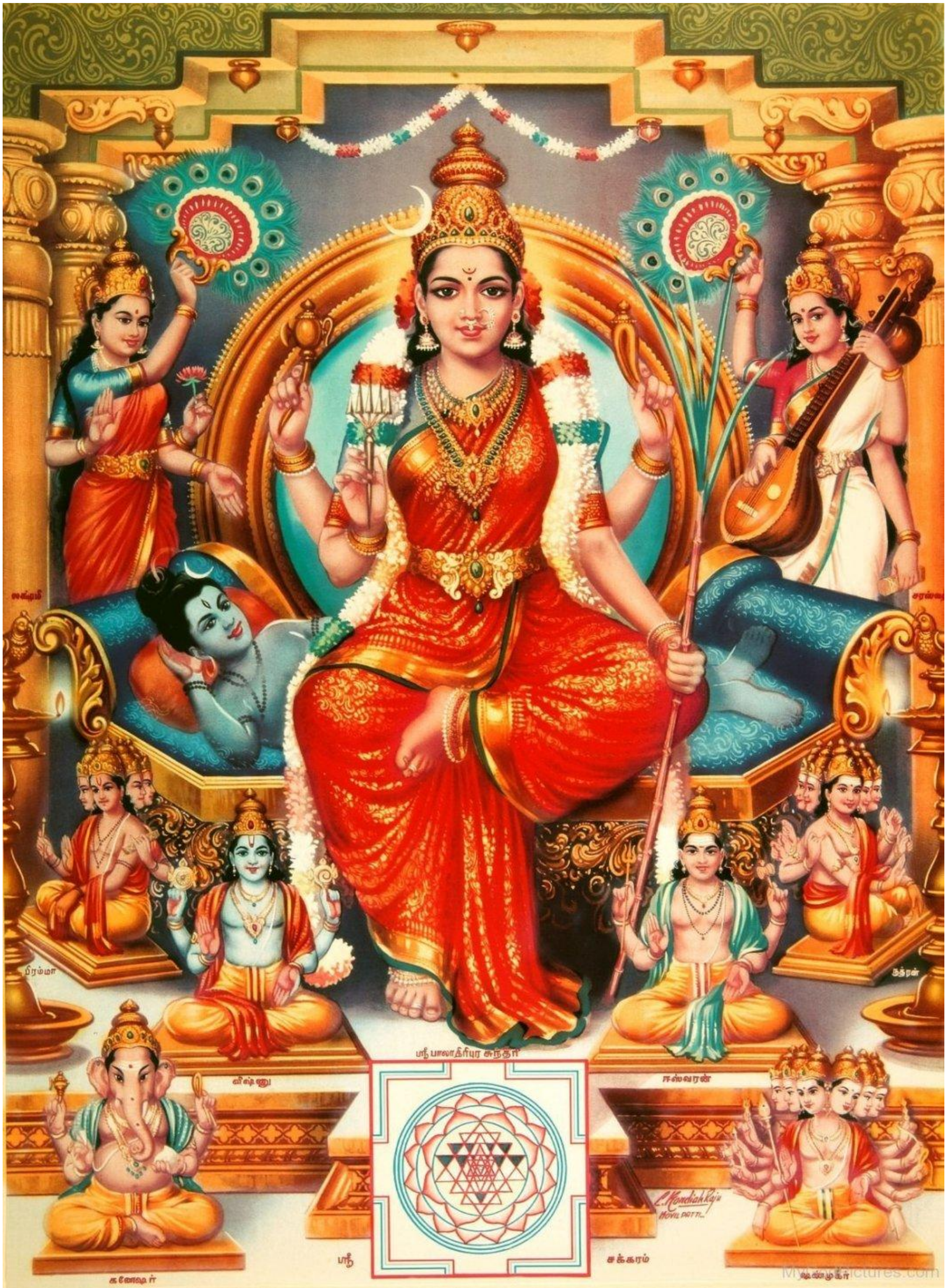
मैं तो माता का भक्त हूँ, पुत्र हूँ सिर्फ इतना जानता हूँ :

पुत्र कुपुत्र भवति।

माता कु माता न भवति।।

माँ ललिता मेरे अपराध को क्षमा करें ।

ॐ श्री मात्रे नमः।

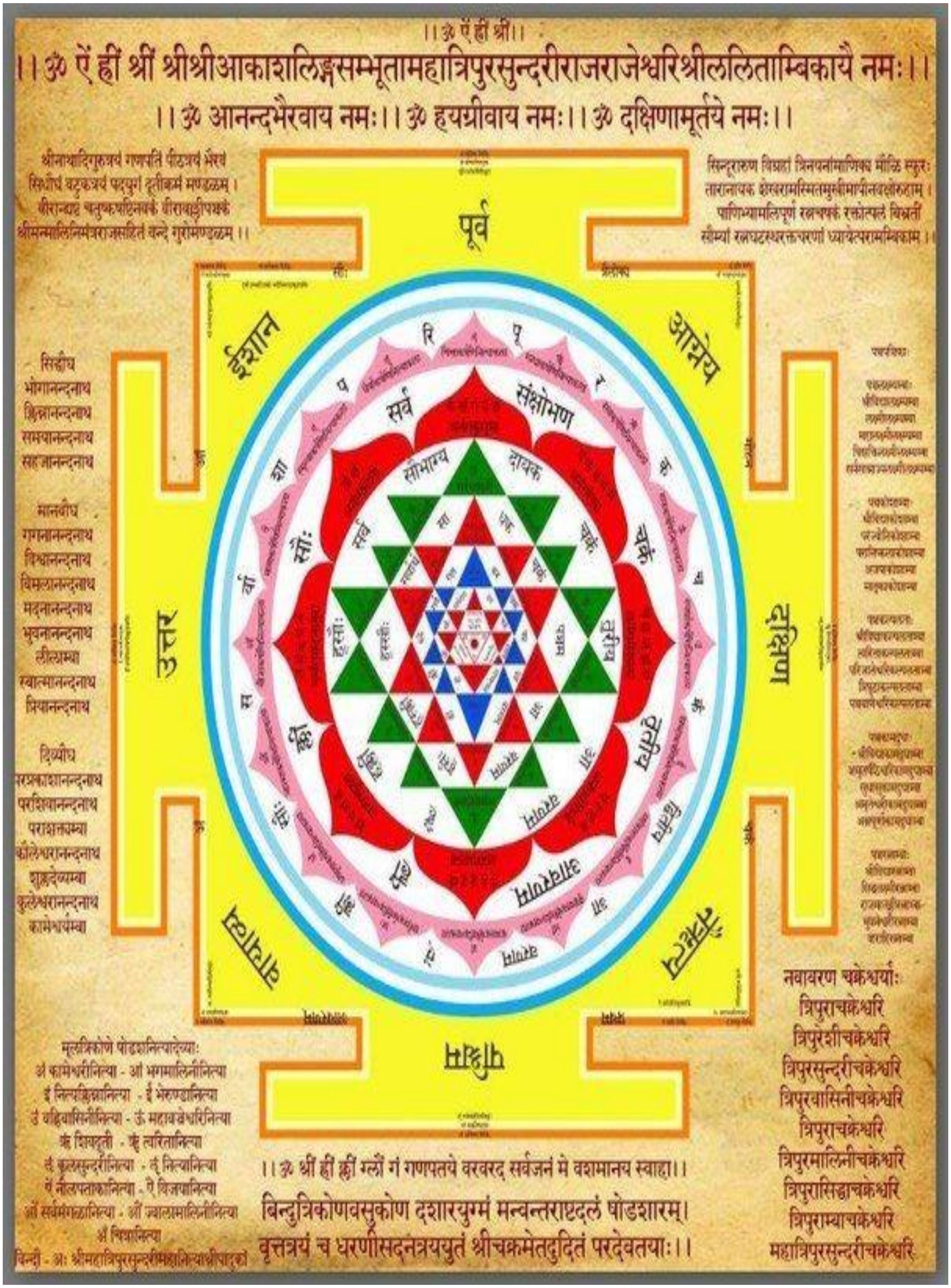

ஸ்ரீ பாலாதிரிபுர சுந்தரி
ஈஸ்வரன்
ஸ்ரீ
சக்கரம்



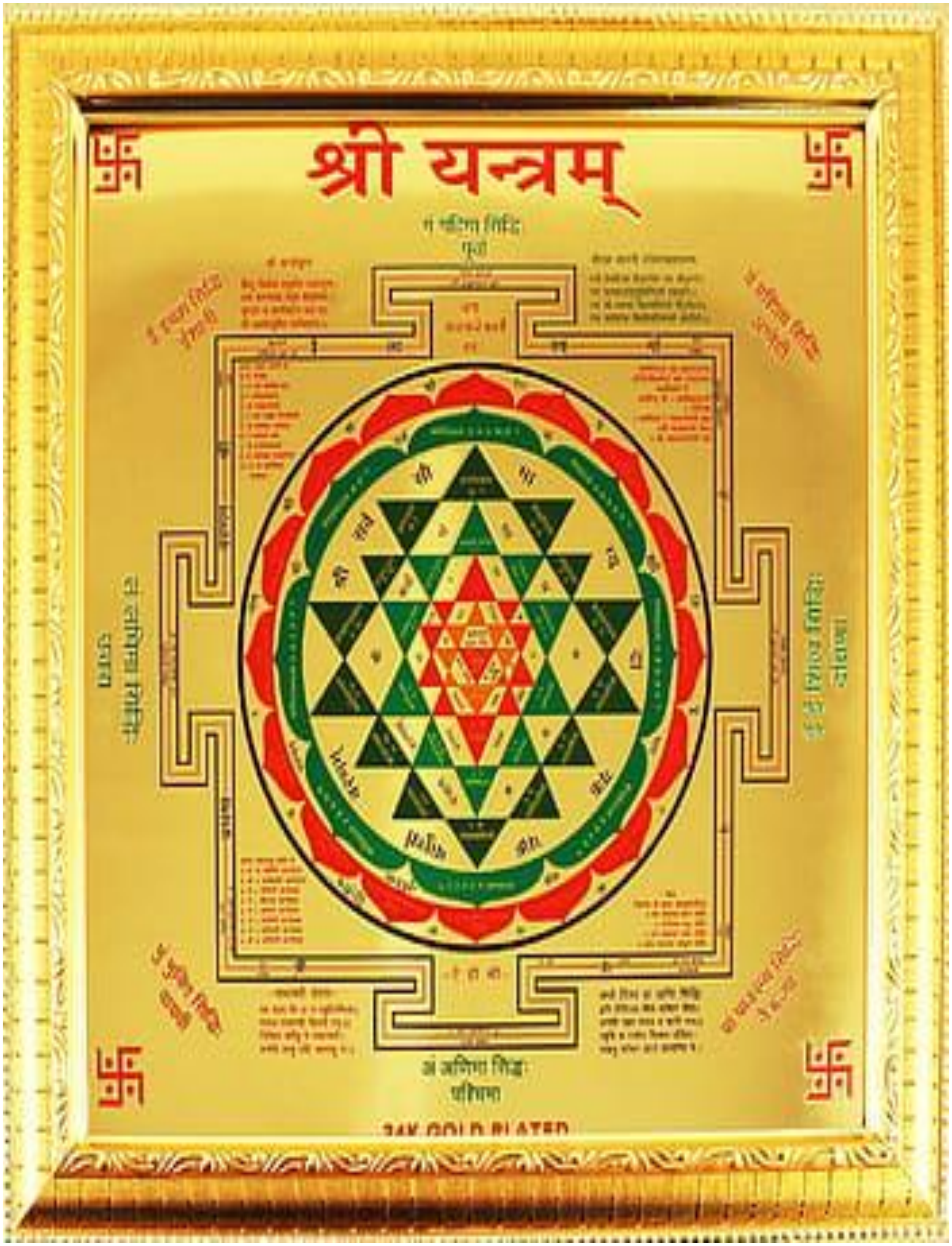
श्री ललिता सहस्त्रनाम

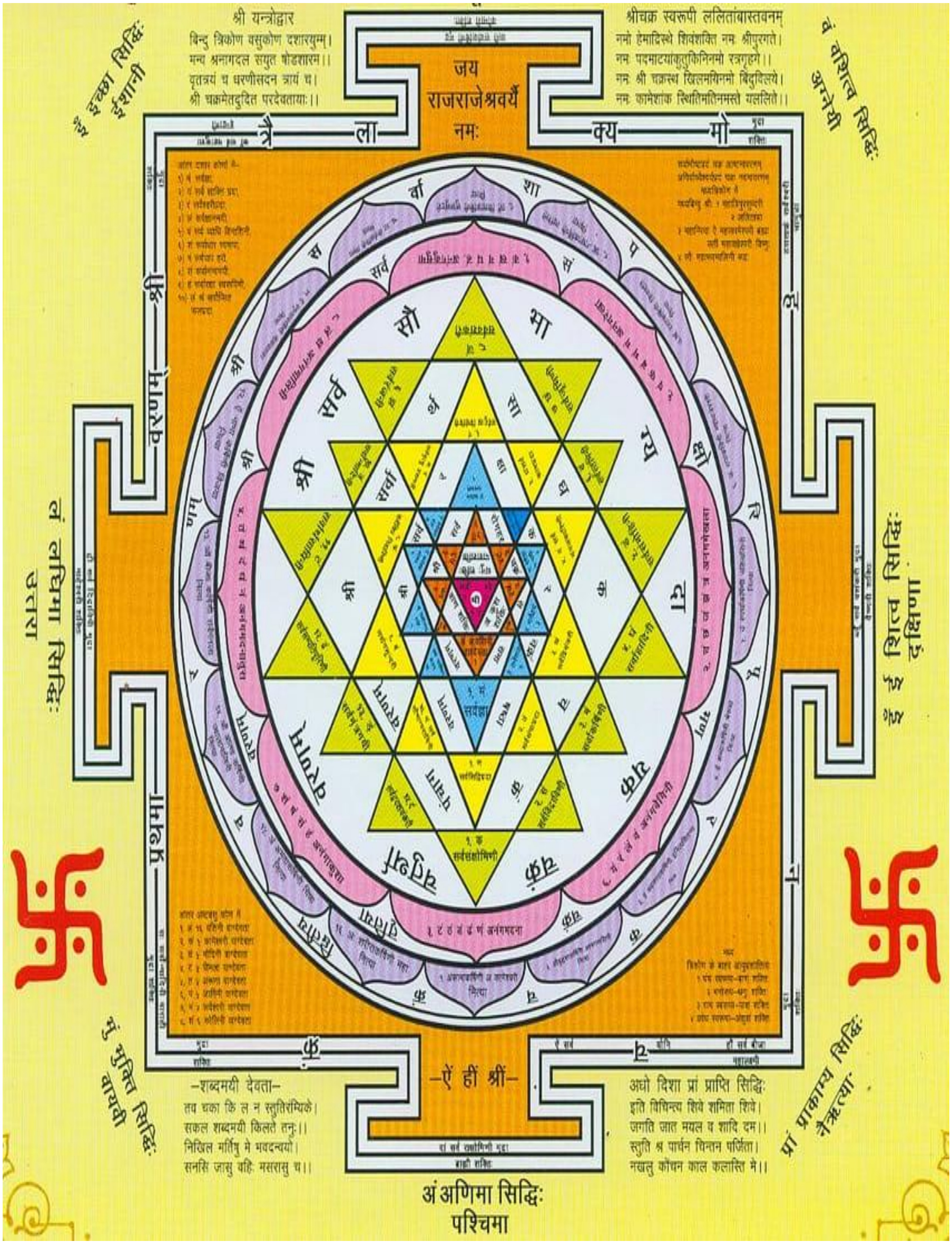
शंकर पुरस्वानी



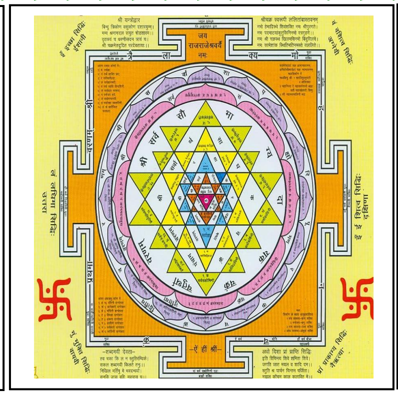

।।ॐ ऐं ह्रीं श्रीं।।
।।ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीश्रीआकाशलिङ्गसम्भूतामहात्रिपुरसुन्दरीराजराजेश्वरिश्रीललिताम्बिकायै नमः।।
।।ॐ आनन्दभैरवाय नमः।।ॐ हयग्रीवाय नमः।।ॐ दक्षिणामूर्तये नमः।।
पूर्व
ईशान
आग्नेय
उत्तर
दक्षिण
सिद्धौघ
भोगानन्दनाथ
क्लिन्नानन्दनाथ
समयानन्दनाथ
सहजानन्दनाथ
मानवौघ
गगनानन्दनाथ
विश्वानन्दनाथ
विमलानन्दनाथ
मदनानन्दनाथ
भुवनानन्दनाथ
लीलाम्बा
स्वात्मानन्दनाथ
प्रियानन्दनाथ
दिव्यौघ
परप्रकाशानन्दनाथ
परशिवानन्दनाथ
पराशक्त्यम्बा
कौलेश्वरानन्दनाथ
शुक्लदेव्यम्बा
कुलेश्वरानन्दनाथ
कामेश्वर्यम्बा
नवावरण चक्रेश्वर्यः
त्रिपुराचक्रेश्वरि
त्रिपुरेशीचक्रेश्वरि
त्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वरि
त्रिपुरवासिनीचक्रेश्वरि
त्रिपुराश्रीचक्रेश्वरि
त्रिपुरमालिनीचक्रेश्वरि
त्रिपुरासिद्धाचक्रेश्वरि
त्रिपुराम्बाचक्रेश्वरि
महात्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वरि
।।ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा।।
बिन्दुत्रिकोणवसुकोण दशारयुग्मं मन्वन्तराष्टदलं षोडशारम्।
वृत्तत्रयं च धरणीसदनत्रययुतं श्रीचक्रमेतदुदितं परदेवतायाः।।




श्री यन्त्रम्



श्री यन्त्रोद्धार
बिन्दु त्रिकोण वसुकोण दशारयुग्म।
मन्व श्रनागदल सयुत षोडशारम।।
वृतत्रयं च धरणीसदन त्रयं च।
श्री चक्रमेतदुदित परदेवतायाः।।
जय
राजराजेश्रवर्यै
नमः
श्रीचक्र स्वरूपी ललितांबास्तवनम्
नमो हेमादिस्थे शिवशक्ति नमः श्रीपुरगते।
नमः पदमाटयाकुतुकिनिनमो रत्नगृहगे।।
नमः श्री चक्रस्थ खिलमशिनमो बिंदुविलये।
नमः कामेशांक स्थितिमतिनमस्तो ललिते।।
–शब्दमयी देवता–
तव चका कि ल न स्तुतिरम्बिके।
सकल शब्दमयी किलते तनुः।।
निखिल मर्तिषु मे भवदन्वयो।
सनसि जासु बहिः मसरासु च।।
–ऐं ह्रीं श्रीं–
अधो दिशा प्रां प्राप्ति सिद्धिः
इति विचिन्त्य शिवे शमिता शिवे।
जगति जात मयल व शादि दम।।
स्तुति श्र पार्चन चिन्तन पर्जिता।
नखलु कौचन काल कलास्ति मे।।
अं अणिमा सिद्धिः
पश्चिमा
लं लघिमा सिद्धिः
उत्तरा
दक्षिणा


|| श्री ललिता सहस्रनाम ||

गुरुध्यानम्

श्री गुरुभ्यो नमः ।

श्री महागणपतयेनमः ।

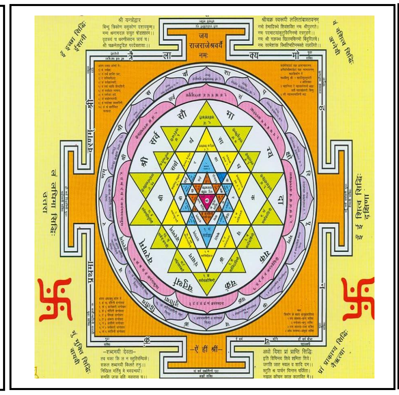
श्री मात्रे नमः ॥

गुरुब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।

गुरुस्साक्षात्परब्रह्म तस्मैश्रीगुरवे नमः॥

संकल्पम्

ममोपात्त समस्त दुरित क्षय द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं,श्री ललिता महा त्रिपुरसुन्दरी प्रसाद सिद्ध्यर्थं, तदेव लग्नं,सुदिनं तदेव, ताराबलं चंद्रबलं तदेव विद्याबलं देवबलं तदेव लक्ष्मीपते ते अघ्रियुगं स्मरामि ।


अस्य श्री भगवतः महाविष्णोः आदि पुरुषस्य आज्ञया, प्रवर्त मानस्य शुभयोग शुभकरण एवं गुणविशेषण विशिष्टायां अस्यां वर्तमानायां शुभ तिथौ अस्माकं सर्वेषां सह कुटुम्बानां क्षेमस्थैर्यादि सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थं धर्मार्थ काम मोक्षादि निखिल चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्ध्यर्थं, आयुः, आरोग्य, सौभाग्य, बल, श्री, कीर्ति, भाग्य, धन, धान्य, मणी, वस्त्र, भूषण, गृह, ग्राम, महाराज्य, साम्राज्यादि,जन्म कुंडली स्थित समस्त ग्रह दोष,पितृ दोष, काल सर्प दोष , वास्तु दोष, शत्रु द्वारा कृत यंत्र–मंत्र–तंत्र जनित बाधा, व्यापार बंधन, निवृत्यर्थं समस्त निखिलसुख अवाप्त्यर्थं, अस्मत् गुरु् वर्याणां ,श्रीविद्या पीठाधिपानां, श्रीविद्या गुरूणां ,समस्त गुरुमडलं स्मरण वंदन पूर्वकं, महत प्रोत्साहने, श्री ललिता सहस्रनाम कोटि अर्चना अङ्गत्वेन, ललिता सहस्रनाम अर्चना अद्य करिष्ये ||

आवाहनम्

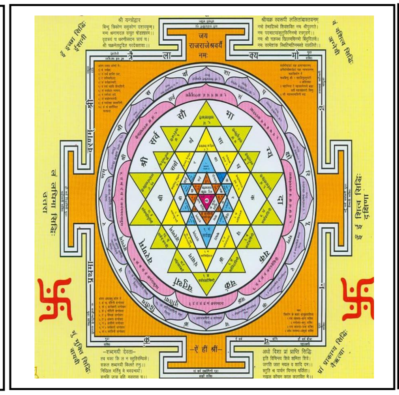
श्री ललितामहात्रिपुसुन्दरीम ध्यायामि,

श्री ललितामहात्रिपुसुन्दरीम आवाहयामि,

श्री ललितामहात्रिपुसुन्दरीम प्राणान् प्रतिष्ठापयामि,

श्री ललितामहात्रिपुसुन्दर्यै नमः समस्तोपचारान् समर्पयामि।।







विनियोगः

ॐ अस्य श्री ललिता दिव्य सहस्रनाम स्तोत्र महामन्त्रस्य, वशिन्यादि वाग्देवता ऋषयः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री ललिता पराभट्टारिका महा त्रिपुर सुन्दरी देवता, ऐं बीजं, क्लीं शक्तिः, सौः कीलकं, मम धर्मार्थ काम मोक्ष चतुर्विध फलपुरुषार्थ सिद्ध्यर्थे ललिता त्रिपुरसुन्दरी पराभट्टारिका सहस्र नाम जपे विनियोगः|

करन्यासः

ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः,

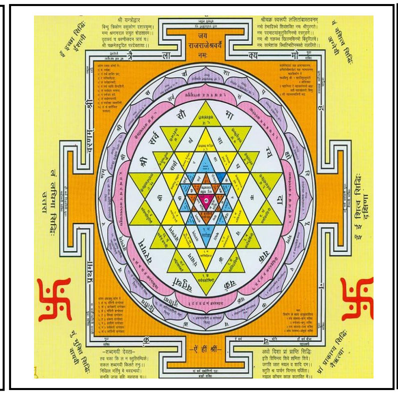
क्लीं तर्जनीभ्यां नमः,

सौः मध्यमाभ्यां नमः,

सौः अनामिकाभ्यां नमः,

क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः,

ऐं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः

अङ्गन्यासः

ऐं हृदयाय नमः,

क्लीं शिरसे स्वाहा,

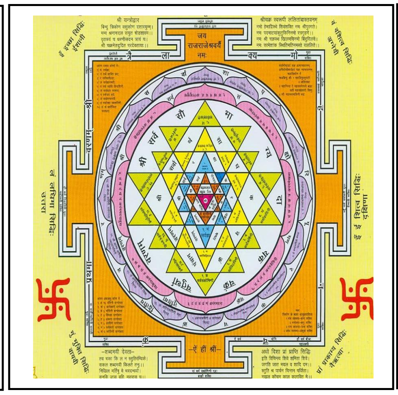
सौः शिखायै वषट्,

सौः कवच्हाय हुं,

क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्,

ऐं अस्त्रायफट्,

भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः।

ध्यानं

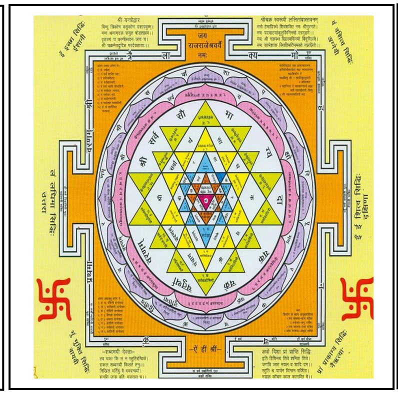
अरुणां करुणा तरङ्ङ्गिताक्षीं धृतपाशाङ्कुश पुष्पबाणचापाम् ।

अणिमादिभि रावृतां मयूखैः अहमित्येव विभावये भवानीम् ॥ 1 ॥

सर्वोच्च माता लालीमा रंग की हैं यानी आकाश का रंग , जैसा कि सुबह–सुबह वास्तविक सूर्योदय से ठीक पहले दिखाई देता है, जब नव किरणें आ रही होती हैं।

यह बहुत शांत और सुंदर समय है। यह एक अवर्णनीय रंग है; जिसकी सुंदरता को केवल देखा और आनंद लिया जाना चाहिए। रात का अँधेरा सूरज की किरणों को रास्ता देगा; चमक आकाश को ढक लेगी। यह रूप हमारे प्रति उनके प्रेम और स्नेह को दर्शाता है; यह सिखाता है कि उगते सूरज की तरह, वह हमारी सभी समस्याओं को दूर कर देगी।

व्यक्तिगत जरूरतों के आधार पर वह अपनी करुणा (करुणा) को, एक समय में थोड़ी–थोड़ी, लहरों (तरंगो) की तरह प्रकट करती है। उसकी कोमल और शांत आंखें (आक्षी) उसके दिल के भीतर मौजूद गहरे प्यार और करुणा को दर्शाती हैं।

हमें उनकी आंखों से बरस रही करुणा को ग्रहण करने की अपनी क्षमता बढ़ाने की जरूरत है।

वह अपने सभी महत्वपूर्ण हथियार – पाश (फंदा), अंकुश (बकरी), पुष्पबाण चाप (गन्ने से बना धनुष और फूलों से बने तीर) अपने हाथों में रखती हैं।

अणिमा, लघिमा आदि की 8 अलौकिक शक्तियां (अष्ट सिद्धियां) उन्हें किरणों की तरह घेर लेती हैं।

जिस प्रकार सूर्य इस सृष्टि के लाभ के लिए अपने चारों ओर किरणें बिखेरता है, उसी प्रकार देवी माँ अपने भक्तों के लाभ के लिए इन अलौकिक शक्तियों को बनाए रखती है।

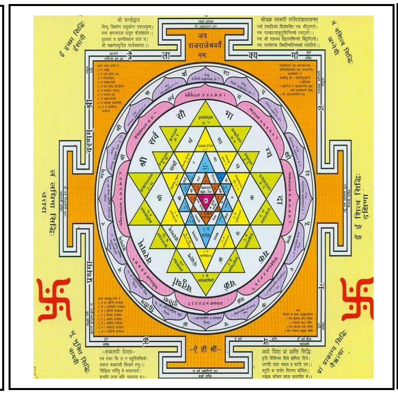
हे माँ, मैं इस दृढ़ विश्वास के साथ आपसे यह प्रार्थना करता हूं कि आप और मैं अविभाज्य हैं। हम दोनों में कोई अंतर नहीं है।

ध्यायेत् पद्मासनस्थां विकसितवदनां पद्म पत्रायताक्षीं

हेमाभां पीतवस्त्रां करकलित लसमद्धेमपद्मां वराङ्गीम् ।

सर्वालङ्कारयुक्तां सकलमभयदां भक्तनम्रां भवानीं

श्री विद्यां शान्तमूर्तिं सकल सुरसुतां सर्वसम्पत्–प्रदात्रीम् ॥ 2 ॥

मैं उस दिव्य माँ का ध्यान करता हूँ जो पद्मासन (कमल मुद्रा) में बैठी है। इसका यह भी अर्थ है कि वह पद्म (कमल) के भीतर विराजमान है।

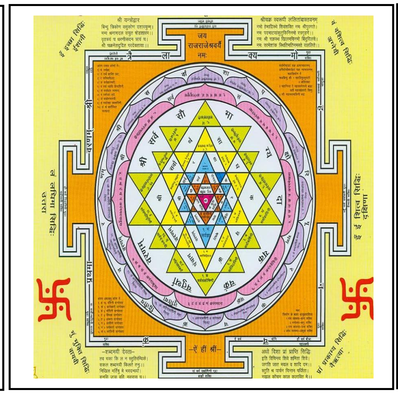
उनका एक आकर्षक चेहरा है जो हमारे उत्थान/विकास का कारण भी है। उसकी आंखें कमल की पंखुड़ियों की तरह लंबी हैं (कमल–आंखें) जो प्रतीक है कि वह हर प्राणी पर नजर रखती है।

वह पीले रंग के कपड़े (पीत वस्त्र) पहनती है, सुनहरे रंग की है और सुनहरी रोशनी की तरह चमक रही है (हेमा का अर्थ है सोना; भा का अर्थ है प्रकाश)।

सुंदर शरीर वाली, मध्यम चाल वाली, न बहुत मोटी, न बहुत पतली और हाथ में स्वर्ण कमल लिए हुए, वह सभी को आकर्षित करती है। यह स्वर्ण कमल जो मुरझा नहीं सकता, हमारे भीतर के कमल को चमका देता है।

उसने खुद को सभी प्रकार की सजावट (सर्व अलंकार) जैसे गहने, फूल आदि से सजाया है।

वह सभी प्राणियों के प्रति सुरक्षा की अभय मुद्रा (डर नहीं) प्रदर्शित करती है।

मैं पूर्ण श्रद्धा के साथ दिव्य माँ भवानी (भव या शिव की पत्नी) को नमन कर रहा हूँ।

वह श्रीविद्या के संपूर्ण ज्ञान का अवतार है। वह शान्त स्वरूप है। सभी सुरों (देवताओं) द्वारा उनकी बहुत श्रद्धा से पूजा की जाती है।

वह हर प्रकार की समृद्धि (सर्व सम्पद) प्रदान करती है। यहां समृद्धि का अर्थ ज्ञान (विद्या/ज्ञान) और योग है।

सकुङ्कुम विलेपना मलिकचुम्बि कस्तूरिकां

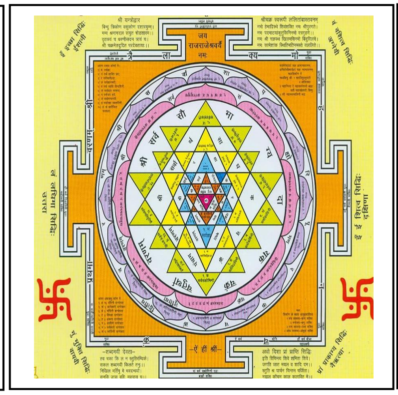
समन्द हसितेक्षणां सशरचाप पाशाङ्कुशाम् ।

अशेष जनमोहिनी मरुणमाल्य भूषोज्ज्वलां

जपाकुसुम भासुरां जपविधौ स्मरे दम्बिकाम् ॥ 3 ॥

उनका कुमकुम से अभिषेक किया जाता है। कुमकुम बहुत शुभ होता है और इसमें कई औषधीय गुण होते हैं। वह उन्हें अर्पित की गई कुमकुम की एक बूंद से भी प्रसन्न हो जाती हैं।

वह कस्तूरी बिंदी पहनती है जो वास्तव में उसकी असली सुंदरता है। इस चंदन के लेप की सुगंध से आकर्षित होकर भ्रमर और मधुमक्खियाँ उसे घेर लेती हैं।


उसकी हंसी कोमल, प्यारी, संपूर्ण और सुंदर है। वह अपने भक्तों को अत्यंत दयालु मुस्कान के साथ देखती हैं। उनकी मुस्कुराती आंखों में उनकी हंसी झलक रही है। वह अपने सभी हथियार रखती है – धनुष और तीर, अंकुश और पाश।

उसमें सार्वभौमिक आकर्षण की शक्ति है। भले ही कोई व्यक्ति उस पर विश्वास करता हो या नहीं, उसके लिए उससे बचना असंभव होगा और इसके बजाय वह उसकी ओर आकर्षित होगा।

वह जो लाल (अरुण) माला पहनती है, वह उत्तम है।

वह लाल हिबिस्कस फूल की तरह चमक रही है और इसे (जपाकुसुम) पहनती है।

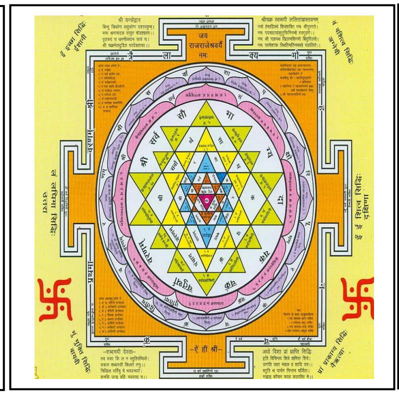
जप के दौरान (अर्थात इस सहस्रनाम के पाठ के दौरान) दिव्य माँ अंबिका के इस रूप का ध्यान करना होता है।

सिन्धूरारुण विग्रहां त्रिणयनां माणिक्य मौलिस्फुरत्तारानायक

शेखरां स्मितमुखी मापीन वक्षोरुहाम् ।

पाणिभ्या मलिपूर्ण रत्न चषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीं

सौम्यां रत्नघटस्थ रक्त चरणां ध्यायेत्परामम्बिकाम् ॥ 4 ॥

हम दिव्य माता का ध्यान करें जिनके शरीर में सिंदूर का लाल रंग है, जिसकी तीन आंखें हैं, जो माणिक जड़ित सुन्दर मुकुट धारण करता है,जो अर्धचंद्र से सुशोभित है,जिनके चेहरे पर सुंदर मुस्कान करुणा की निशानी है, जिसके सुंदर अंग हैं,जिनके हाथों में रत्न जड़ित स्वर्ण पात्र भरा हुआ है अमृत के साथ, और दूसरे में लाल कमल का फूल।

|| लमित्यादि पंचपूजा विभावयेत् ||

लं पृथिवी तत्त्वात्मिकायै श्री ललितादेव्यै गन्धं परिकल्पयामि

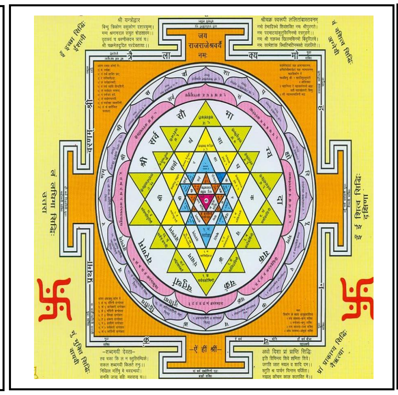
हं आकाश तत्त्वात्मिकायै श्री ललितादेव्यै पुष्पं परिकल्पयामि

यं वायु तत्त्वात्मिकायै श्री ललितादेव्यै धूपं परिकल्पयामि

रं वह्नि तत्त्वात्मिकायै श्री ललितादेव्यै दीपं परिकल्पयामि

वं अमृत तत्त्वात्मिकायै श्री ललितादेव्यै अमृत नैवेद्यं परिकल्पयामि

सं सर्व तत्त्वात्मिकायै श्री ललितादेव्यै ताम्बूलादि सर्वोपचारान् परिकल्पयामि


ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ।

ॐ कमलासनाय विदमहे शिवप्रियाये धीमहि तन्नो ललिता प्रचोदयात्।।

ह्रीं क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमात्रे नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहाराज्ञै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमत्सिंहासनेश्वर्यै नमः ।

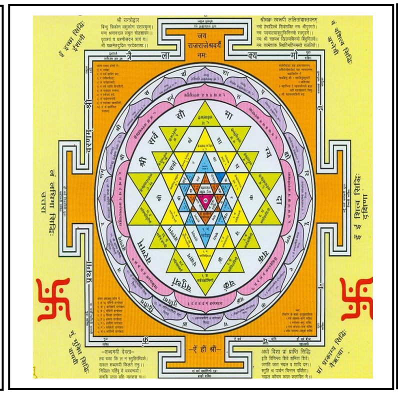
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चिदग्निकुण्ड सम्भूतायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं देवकार्यसमुद्यतायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उद्यद्भानु सहस्राभायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चतुर्बाहु समन्वितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रागस्वरूप पाशाढ्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रोधाकाराङ्कुशोज्ज्वलायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मनोरूपेक्षुकोदण्डायै नमः ।10

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पञ्चतन्मात्रसायकायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निजारुण प्रभापूर मज्जद् ब्रह्माण्डमण्डलायै नमः ।

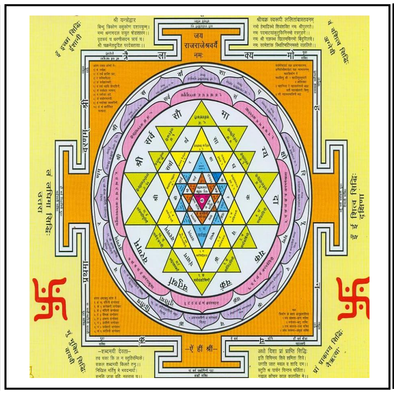
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चम्पकाशोक पुन्नाग सौगन्धिक लसत्कचायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कुरुविन्दमणि श्रेणी कनत्कोटीर मण्डितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अष्टमीचन्द्र विभ्राज दलिकस्थल शोभितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मुखचन्द्र कलङ्काभ मृगनाभिविशेषकायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वदनस्मर माङ्गल्य गृहतोरण चिल्लिकायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वक्त्रलक्ष्मी परीवाह चलन्मीनाभ लोचनायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नवचम्पक पुष्पाभ नासादण्ड विराजितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ताराकान्ति तिरस्कारि नासाभरण भासुरायै नमः । २०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कदम्बमञ्जरी क्लृप्तकर्णपूर मनोहरायै नमः ।

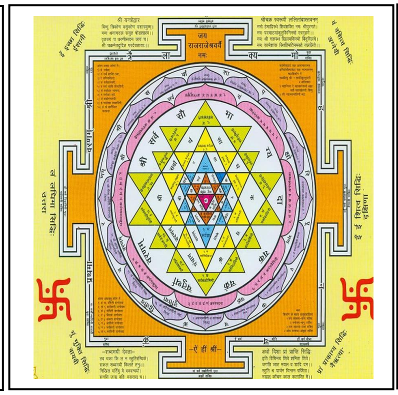
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ताटङ्क युगलीभूत तपनोडुप मण्डलायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पद्मराग शिलादर्श परिभावि कपोलभुवे नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नवविद्रुम बिम्बश्री न्यक्कारि रदनच्छदायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शुद्ध विद्याङ्कुराकार द्विजपङ्क्ति द्वयोज्ज्वलायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कर्पूर वीटिकामोद समाकर्षि दिगन्तरायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निजसल्लाप माधुर्य विनिर्भत्सित कच्छप्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मन्दस्मित प्रभापूर मज्जत्कामेश मानसायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अनाकलित सादृश्य चिबुकश्री विराजितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कामेश बद्ध माङ्गल्य सूत्र शोभित कन्धरायै नमः । ३०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कनकाङ्गद केयूर कमनीय भुजान्वितायै नमः ।

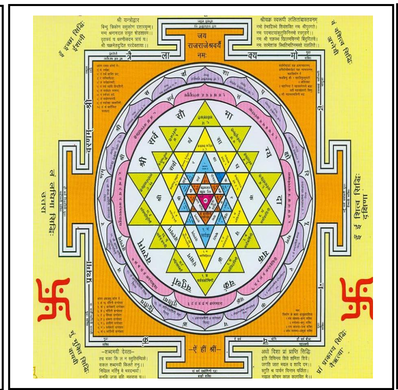
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रत्नग्रैवेय चिन्ताक लोल मुक्ता फलान्वितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कामेश्वर प्रेमरत्न मणि प्रतिपण स्तन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नाभ्यालवाल रोमालि लता फल कुचद्वय्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लक्ष्यरोम लताधारता समुन्नेय मध्यमायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्तनभार दलन्मध्य पट्टबन्ध वलित्रयायै नमः ।


ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अरुणारुण कौसुम्भ वस्त्र भास्व त्कटीतट्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रत्न किङ्किणिका रम्य रशना दाम भूषितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कामेश ज्ञात सौभाग्य मार्दवोरु द्वयान्वितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं माणिक्य मुकुटाकार जानुद्वय विराजितायै नमः । ४०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इन्द्रगोप परिक्षिप्त स्मरतूणाभ जङ्घिकायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गूढगुल्फायै नमः ।

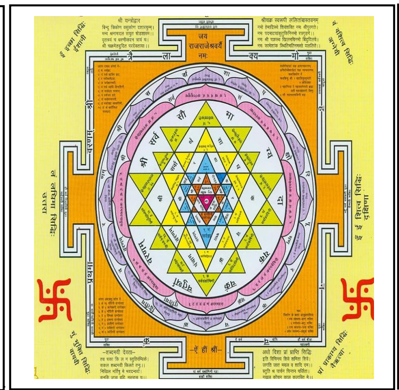
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कूर्मपृष्ठ जयिष्णु प्रपदान्वितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नख दीधिति सञ्छन्न नमज्जन तमोगुणायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पदद्वय प्रभाजाल पराकृत सरोरुहायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शिञ्जान मणिमञ्जीर मण्डित श्री पदाम्बुजायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मराली मन्दगमनायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महालावण्यशेवधये नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वारुणायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नवद्याङ्ग्यै नमः । ५०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वाभरणभूषितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शिवकामेश्वराङ्कस्थायै नमः ।

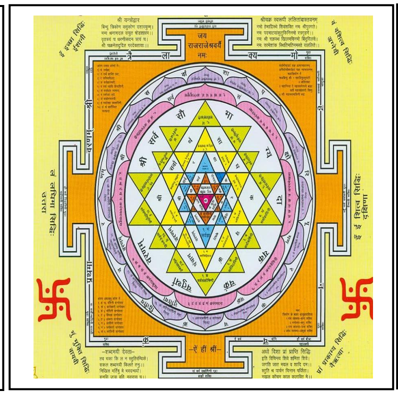
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शिवायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्वाधीनवल्लभायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सुमेरुमध्यशृङ्गस्थायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमन्नगरनायिकायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चिन्तामणिगृहान्तस्थायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पञ्चब्रह्मासनस्थितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महापद्माटवीसंस्थायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कदम्बवनवासिन्यै नमः । ६०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सुधासागर मध्यस्थायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कामाक्ष्यै नमः ।

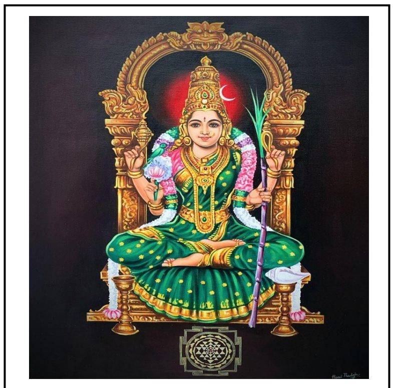
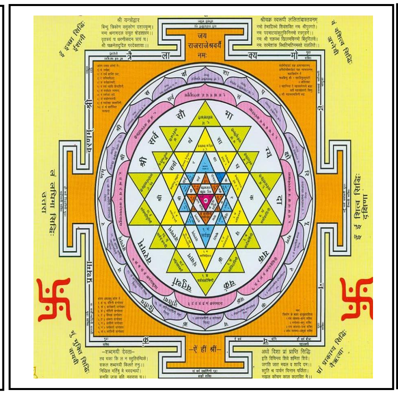
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कामदायिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं देवर्षि गण सङ्घात स्तूयमानात्म वैभावयै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भण्डासुर वधोद्युक्त शक्तिसेना समन्वितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सम्पत्करी समारूढ सिन्दुर व्रजसेवितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अश्वारूढ़ अधिष्ठिताश्व कोटि कोटिभिरावृतायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चक्रराज रथारूढ सर्वायुध परिष्कृतायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गेयचक्र रथारूढ मन्त्रिणी परिसेवितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं किरिचक्र रथारूढ दण्डनाथा पुरस्कृतायै नमः । ७०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ज्वाला मालिनिकाक्षिप्त वह्निप्राकार मध्यगायै नमः ।

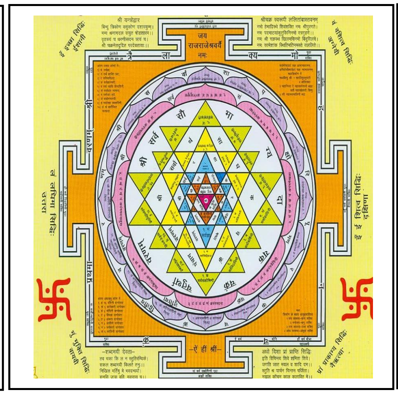
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भण्डसैन्य वधोद्युक्त शक्ति विक्रम हर्षितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नित्या पराक्रमाटोप निरीक्षण समुत्सुकायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भण्ड पुत्र वधोद्युक्त बाला विक्रम नन्दितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मन्त्रिण्यम्बा विरचित विषङ्ग वध तोषितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विशुक्र प्राणहरण वाराही वीर्य नन्दितायै नमः ।


ॐ ऐं ह्रीं श्रीं   कामेश्वर मुखालोक कल्पित श्रीगणेश्वरायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं   महागणेश निर्भिन्न विघ्नयन्त्र प्रहर्षितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं   भण्डासुरेन्द्र निर्मुक्त शस्त्रप्रत्यस्त्र वर्षिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं   कराङ्गुलि नखोत्पन्न नारायण दशाकृत्यै नमः । ८०

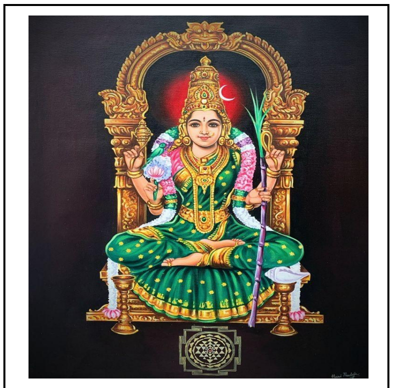
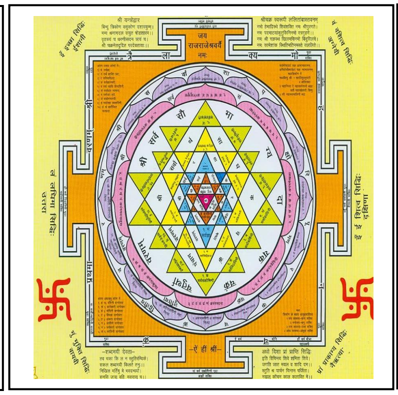
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं   महा पाशुपतास्त्राग्नि निर्दग्धासुर सैनिकायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं   कामेश्वरास्त्र निर्दग्ध सभाण्डासुर शून्यकायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं   ब्रह्मोपेन्द्र महेन्द्रादि देव संस्तुत वैभवायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं   हर नेत्राग्नि सन्दग्ध काम सञ्जीवनौषध्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं   श्रीमद्वाग्भव कूटैक स्वरूप मुख पङ्कजायै नमः ।


ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कण्ठाधः कटि पर्यन्त मध्यकूट स्वरूपिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शक्ति कूटैकतापन्न कट्यधोभाग धारिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलमन्त्रात्मिकायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलकूटत्रयकलेवरायै नमः ।

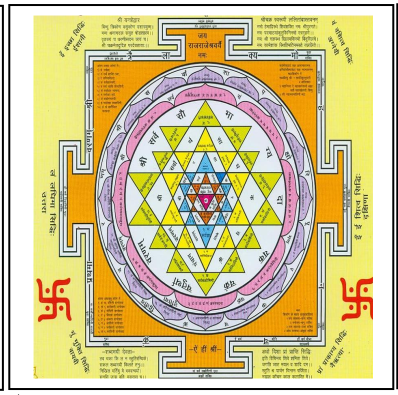
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कुलामृतैक रसिकायै नमः । ९०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कुलसङ्केत पालिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कुलाङ्गनायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कुलान्तस्थायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कौलिन्यै नमः ।


ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कुलयोगिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अकुलायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं समयान्तस्थायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं समयाचार तत्परायै नमः ।

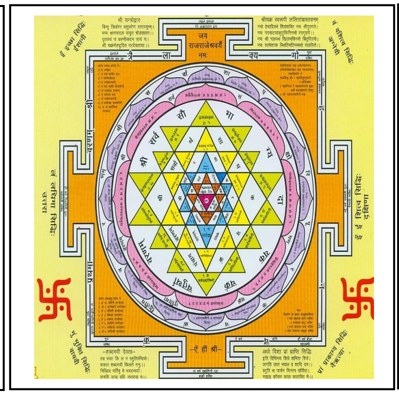
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलाधारैक निलयायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ब्रह्मग्रन्थि विभेदिन्यै नमः । १००

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मणिपूरान्तरुदितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विष्णुग्रन्थिविभेदिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आज्ञाचक्रन्तरालस्थायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रुद्रग्रन्थिविभेदिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सहस्राराम्बुजारूढायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सुधा साराभिवर्षिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तटिल्लतासमरुच्यै नमः ।

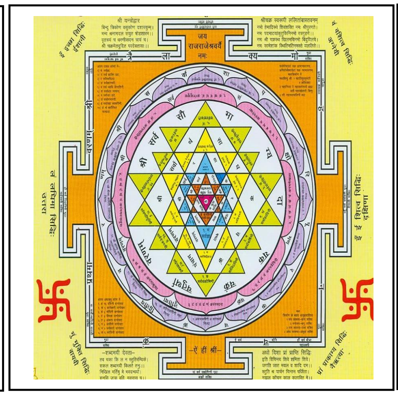
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं षट्चक्रोपरि संस्थितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महाशक्त्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कुण्डलिन्यै नमः । ११०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बिसतन्तुतनीयस्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भवान्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं   भावनागम्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं   भवारण्य कुठारिकायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं   भद्रप्रियायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं   भद्रमूर्त्यै नमः ।

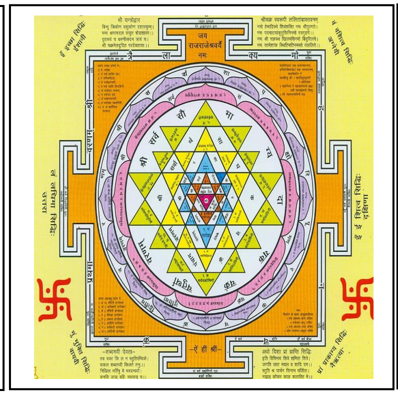
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं   भक्तसौभाग्यदायिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं   भक्तिप्रियायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं   भक्तिगम्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं   भक्तिवश्यायै नमः । १२०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं   भयापहायै नमः ।


ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शाम्भव्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शारदाराध्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शर्वाण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शर्मदायिन्यै नमः ।

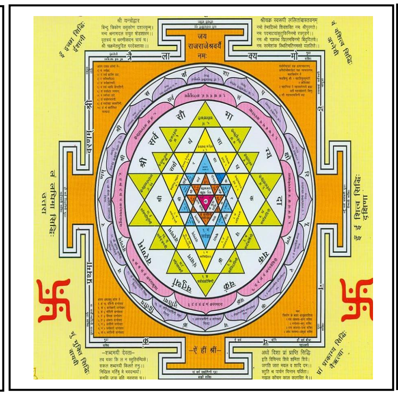
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शाङ्कर्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकर्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं साध्व्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शरच्चन्द्र निभाननायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शातोदर्यै नमः । १३०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शान्तिमत्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निराधारायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निरञ्जनायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निर्लेपायै नमः ।

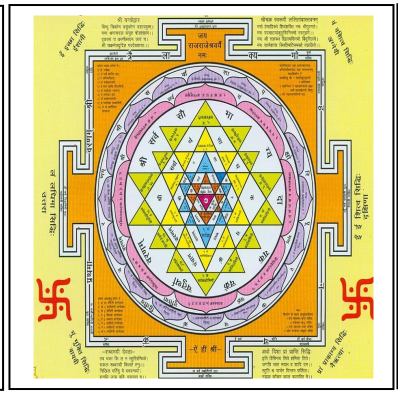
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निर्मलायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नित्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निराकारायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निराकुलायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निर्गुणायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निष्कलायै नमः । १४०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शान्तायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निष्कामायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निरुपप्लवायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नित्यमुक्तायै नमः ।

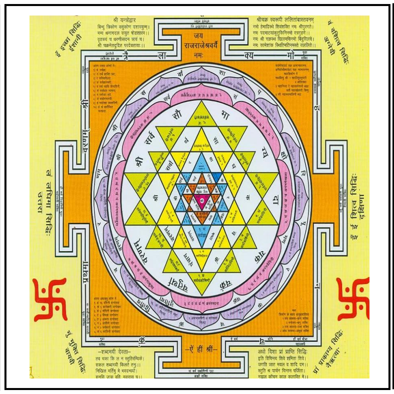
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निर्विकारायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निष्प्रपञ्चायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निराश्रयायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नित्यशुद्धायै नमः ।







ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नित्यबुद्धायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निरवद्यायै नमः । १५०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निरन्तरायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निष्कारणायै नमः ।

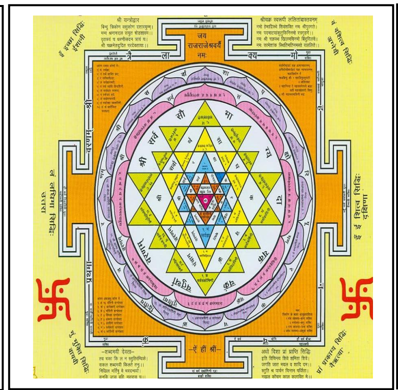
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निष्कलङ्कायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निरुपाधये नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निरीश्वरायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नीरागायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रागमथन्यै नमः ।


ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निर्मदायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मदनाशिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निश्चिन्तायै नमः । १६०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निरहङ्कारायै नमः ।

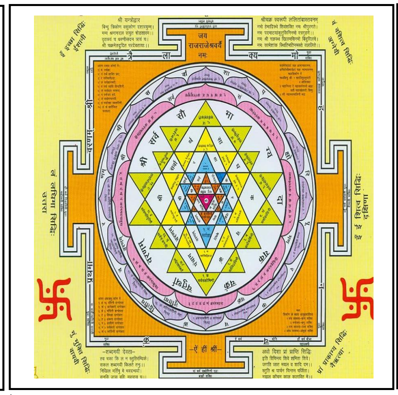
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निर्मोहायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मोहनाशिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निर्ममायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ममताहन्त्र्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निष्पापायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पापनाशिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निष्क्रोधायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रोधशमन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निर्लोभायै नमः । १७०

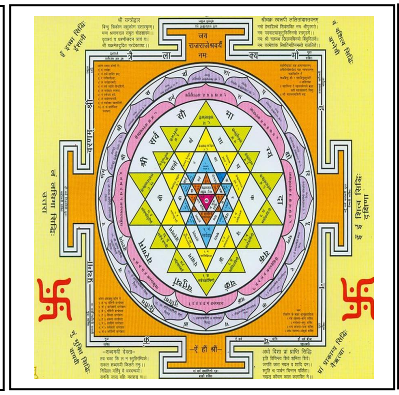
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लोभनाशिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निःसंशयायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं संशयघ्न्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निर्भवायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भवनाशिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पापनाशिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निष्क्रोधायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रोधशमन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निर्लोभायै नमः । १७०

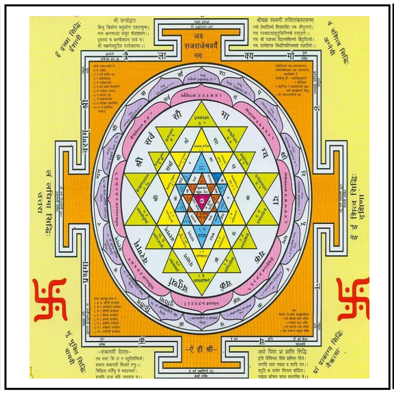
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लोभनाशिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निःसंशयायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं संशयघ्न्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निर्भवायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भवनाशिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निरत्ययायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दुर्लभायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दुर्गमायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दुर्गायै नमः । १६०

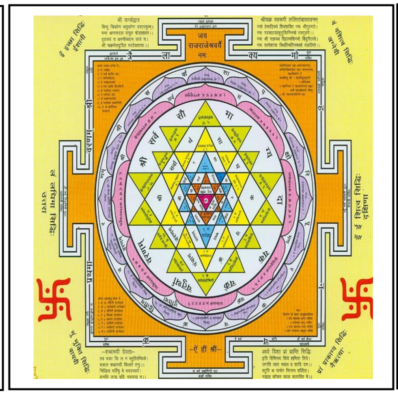
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दुःखहन्त्र्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सुखप्रदायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दुष्टदूरायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दुराचारशमन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दोषवर्जितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वज्ञायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सान्द्र करुणायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं समानाधिक वर्जितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वशक्तिमय्यै नमः ।

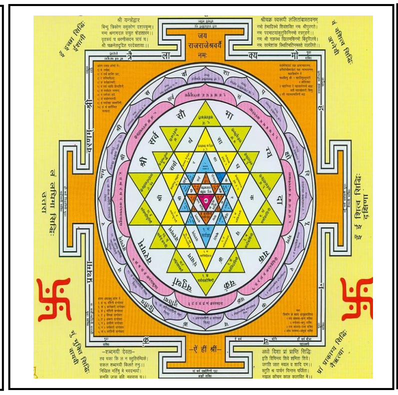
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वमङ्गलायै नमः । २००

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सद्गतिप्रदायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वेश्वर्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वमय्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वमन्त्र स्वरूपिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वयन्त्रात्मिकायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वतन्त्ररूपायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मनोन्मन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं माहेश्वर्यै नमः ।

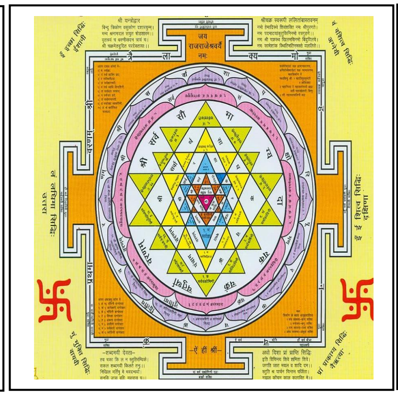
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महादेव्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः । २१०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मृडप्रियायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महारूपायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महापूज्यायै नमः ।


ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महापातक नाशिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महामायायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महासत्वायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महाशक्त्यै नमः ।

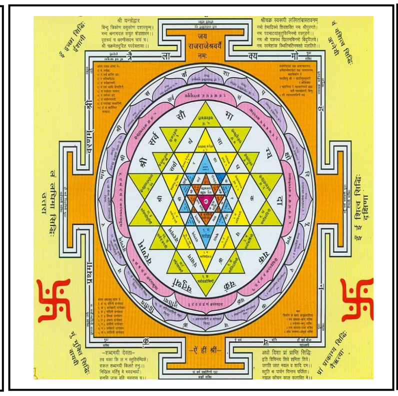
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महारत्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महाभोगायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महैश्वर्यायै नमः । २२०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महावीर्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महाबलायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महाबुद्ध्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महासिद्ध्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महायोगेश्वरेश्वर्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महातन्त्रायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महामन्त्रायै नमः ।

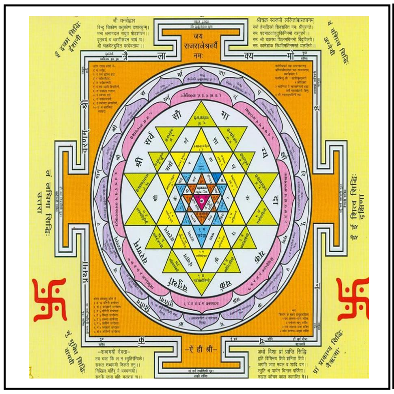
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महायन्त्रायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महासनायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महायाग क्रमाराध्यायै नमः । २३०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महाभैरवपूजितायै नमः ।







ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महेश्वर महाकल्प महाताण्डव साक्षिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महाकामेशमहिष्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चतुःषष्ट्युपचाराढ्यायै नमः ।

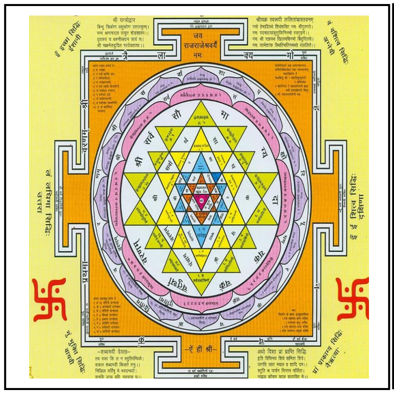
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चतुःषष्टिकलामय्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महाचतुःषष्टिकोटि योगिनी गण सेवितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मनुविद्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चन्द्रविद्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चन्द्रमण्डलमध्यगायै नमः । २४०


ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चारुरूपायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चारुहासायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चारुचन्द्रकलाधरायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चराचरजगन्नाथायै नमः ।

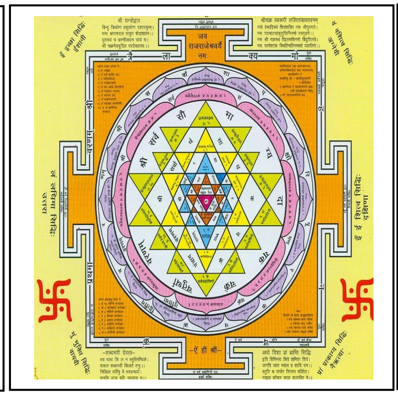
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चक्रराजनिकेतनायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पार्वत्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पद्मनयनायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पद्मरागसमप्रभायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पञ्चप्रेतासनासीनायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पञ्चब्रह्मस्वरूपिण्यै नमः । २५०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चिन्मय्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं परमानन्दायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विज्ञानघनरूपिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ध्यान ध्यातृ ध्येयरूपायै नमः ।

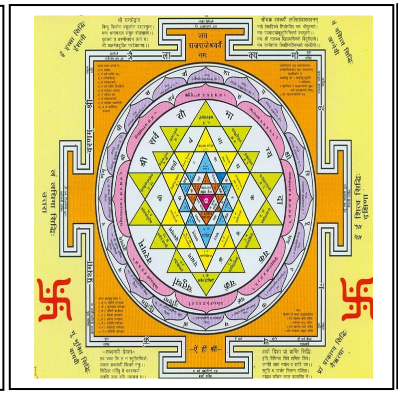
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धर्माधर्मविवर्जितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विश्वरूपायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जागरिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्वपत्न्यै नमः ।







ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तैजसात्मिकायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सुप्तायै नमः । २६०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्राज्ञात्मिकायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तुर्यायै नमः ।

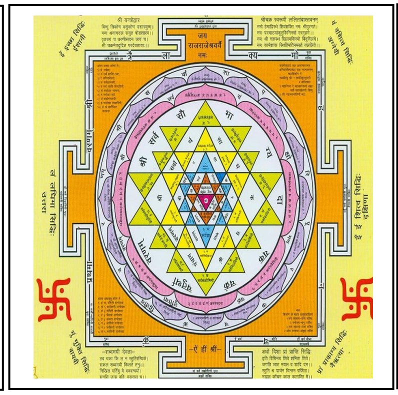
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वावस्था विवर्जितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सृष्टिकर्त्र्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ब्रह्मरूपायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गोप्त्र्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गोविन्दरूपिण्यै नमः ।


ॐ ऐं ह्रीं श्रीं संहारिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रुद्ररूपायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तिरोधानकर्यै नमः । २७०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईश्वर्यै नमः ।

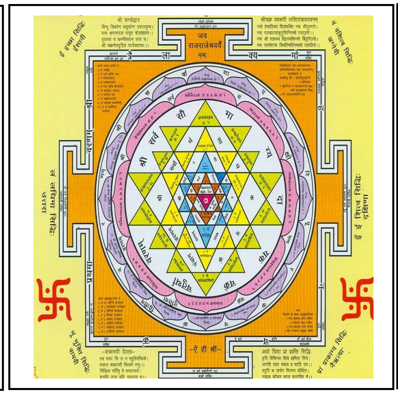
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सदाशिवायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अनुग्रहदायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पञ्चकृत्य परायणायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भानुमण्डल मध्यस्थायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भैरव्यै नमः ।


ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भगमालिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पद्मासनायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भगवत्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पद्मनाभ सहोदर्यै नमः । २८०

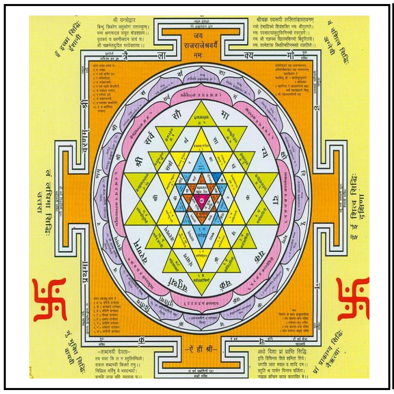
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उन्मेषनिमिषोत्पन्न विपन्न भुवनावल्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सहस्रशीर्षवदनायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सहस्राक्ष्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सहस्रपदे नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आब्रह्म कीट जनन्यै नमः ।


ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वर्णाश्रम विधायिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निजाज्ञारूप निगमायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पुण्यापुण्यफलप्रदायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रुतिसीमन्त सिन्दूरीकृत पादाब्ज धूलिकायै नमः ।

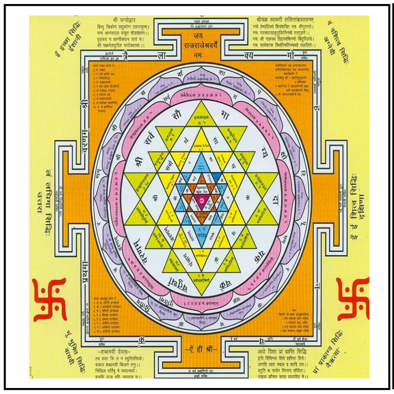
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सकलागम सन्दोह शुक्ति सम्पुट मौक्तिकायै नमः । २९०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पुरुषार्थप्रदायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पूर्णायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भोगिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भुवनेश्वर्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अम्बिकायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अनादिनिधनायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हरिब्रह्मेन्द्रसेवितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नारायण्यै नमः ।

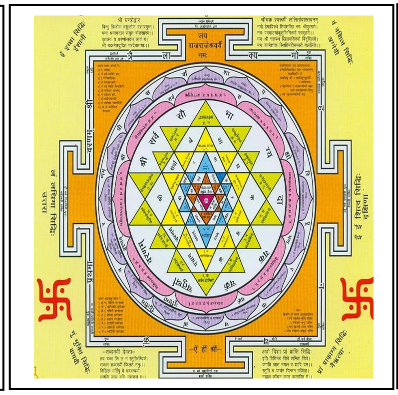
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नादरूपायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नामरूप विवर्जितायै नमः । ३००

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीङ्कार्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीमत्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हृद्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हेयोपादेयवर्जितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं राजराजार्चितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं राज्ञै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रम्यायै नमः ।

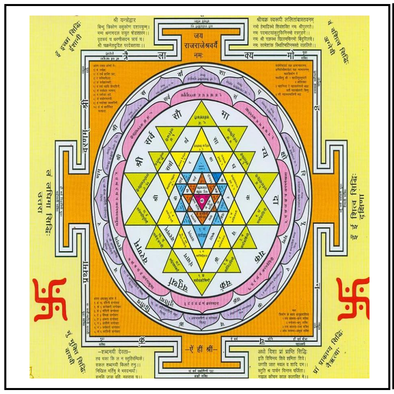
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं राजीवलोचनायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रञ्जन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रमण्यै नमः । ३१०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रस्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रणत्किङ्किणिमेखलायै नमः ।


ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रमायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं राकेन्दुवदनायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रतिरूपायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रतिप्रियायै नमः ।

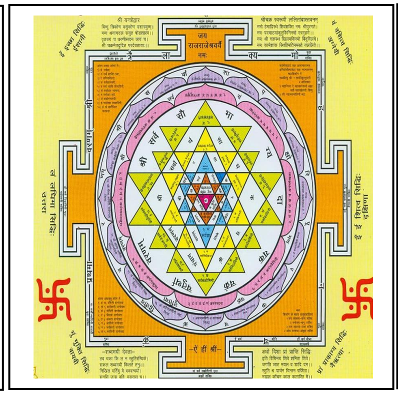
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रक्षाकर्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं राक्षसघ्न्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रामायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रमणलम्पटायै नमः । ३२०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं काम्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कामकलारूपायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कदम्बकुसुमप्रियायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कल्याण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जगतीकन्दायै नमः ।

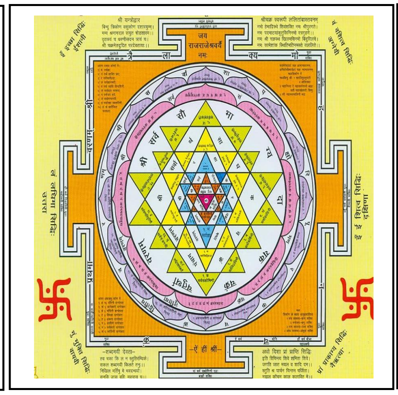
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं करुणारससागरायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कलावत्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कलालापायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कान्तायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कादम्बरीप्रियायै नमः । ३३०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वरदायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वामनयनायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वारुणी मद विह्वलायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विश्वाधिकायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वेदवेद्यायै नमः ।

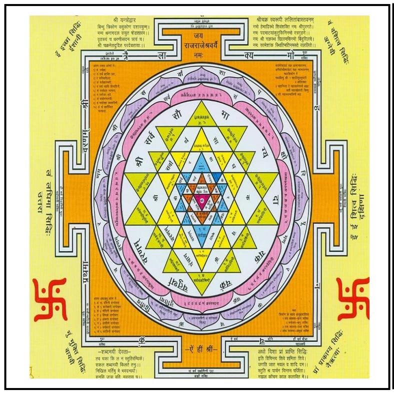
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विन्ध्याचलनिवासिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विधात्र्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वेदजनन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विष्णुमायायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विलासिन्यै नमः । ३४०


ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षेत्रस्वरूपायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षेत्रेश्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षेत्रक्षेत्रज्ञपालिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षयवृद्धि विनिर्मुक्तायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षेत्रपाल समर्चितायै नमः ।

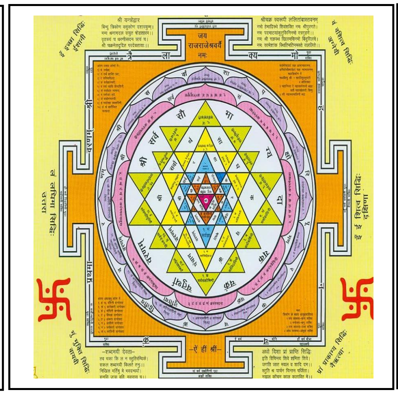
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विजयायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विमलायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वन्द्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वन्दारु जन वत्सलायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वाग्वादिन्यै नमः । ३५०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वामकेश्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वह्निमण्डलवासिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भक्तिमत् कल्पलतिकायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पशुपाशविमोचिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं संहृताशेष पाषण्डायै नमः ।

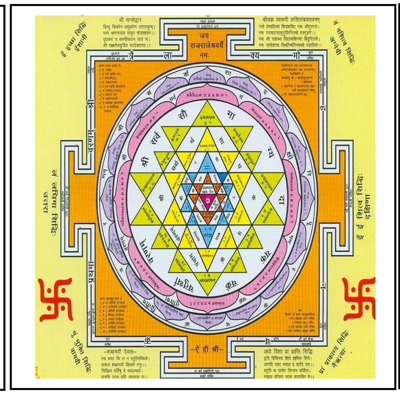
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सदाचार प्रवर्तिकायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तापत्रयाग्नि सन्तप्त समाह्लादन चन्द्रिकायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तरुण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तापसाराध्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तनुमध्यायै नमः । ३६०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तमोपहायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चित्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तत्पद लक्ष्यार्थायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चिदेक रसरूपिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्वात्मानन्द लवीभूत ब्रह्माद्यानन्द सन्तत्यै नमः ।

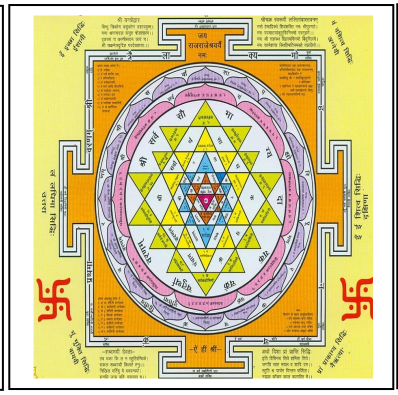
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं परायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यक्ष चितीरूपायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पश्यन्त्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं परदेवतायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मध्यमायै नमः । ३७०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वैखरीरूपायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भक्तमानस हंसिकायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कामेश्वर प्राणनाड्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कृतज्ञायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कामपूजितायै नमः ।

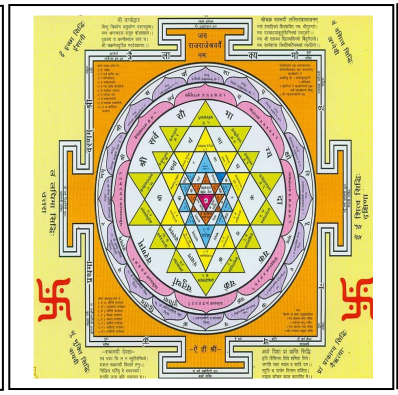
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शृङ्गार रस सम्पूर्णायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जयायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जालन्धरस्थितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओड्याणपीठ निलयायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बिन्दु मण्डल वासिन्यै नमः । ३८०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रहोयाग क्रमाराध्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रहस्तर्पण तर्पितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सद्यः प्रसादिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विश्वसाक्षिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं साक्षिवर्जितायै नमः ।

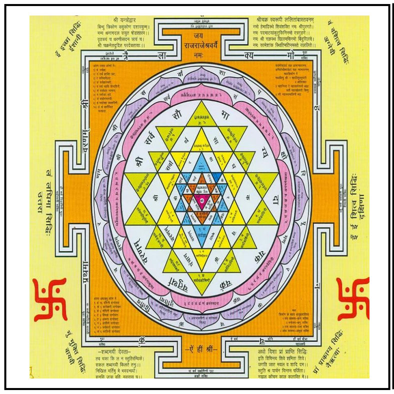
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं षडङ्ग देवता युक्तायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं षाड्गुण्य परिपूरितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नित्यक्लिन्नायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निरुपमायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निर्वाण सुख दायिन्यै नमः । ३६०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नित्याषोडशिकारूपायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकण्ठार्ध शरीरिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रभावत्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रभारूपायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रसिद्धायै नमः ।

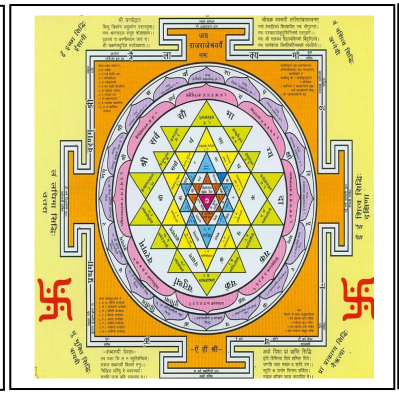
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं परमेश्वर्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलप्रकृत्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अव्यक्तायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं व्यक्ताव्यक्तस्वरूपिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं व्यापिन्यै नमः । ४००

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विविधाकारायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विद्याविद्यास्वरूपिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महाकामेश नयन कुमुदाह्लाद कौमुद्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भक्ताहार्द तमोभेद भानुमद्भानु सन्तत्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शिवदूत्यै नमः ।

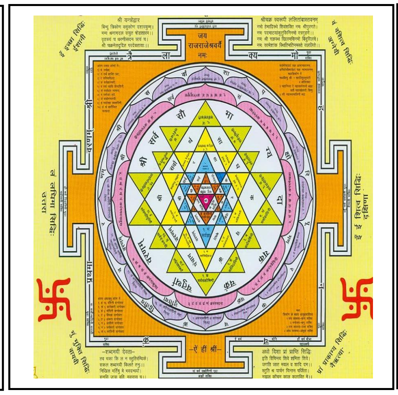
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शिवाराध्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शिवमूर्त्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शिवङ्कर्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शिवप्रियायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शिवपरायै नमः । ४१०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शिष्टेष्टायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शिष्टपूजितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अप्रमेयायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्वप्रकाशायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मनोवाचाम अगोचरायै नमः ।

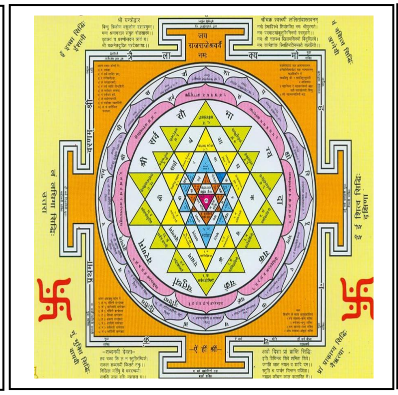
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चिच्छक्त्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चेतनारूपायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जडशक्त्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जडात्मिकायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गायत्र्यै नमः । ४२०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं व्याहृत्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सन्ध्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं द्विजवृन्द निषेवितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तत्त्वासनायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तस्मै नमः ।

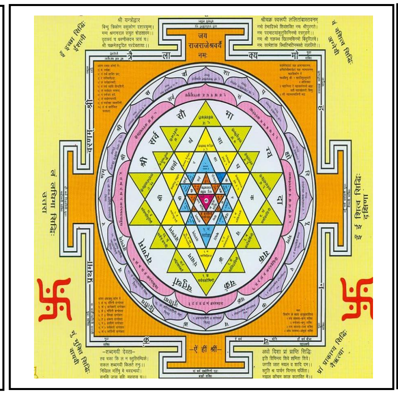
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तुभ्यं नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अय्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पञ्चकोशान्तरस्थितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निःसीममहिम्ने नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नित्ययौवनायै नमः । ४३०


ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मदशालिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मदघूर्णित रक्ताक्ष्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मदपाटल गण्डभुवे नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चन्दन द्रव दिग्धाङ्ग्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चाम्पेय कुसुम प्रियायै नमः ।

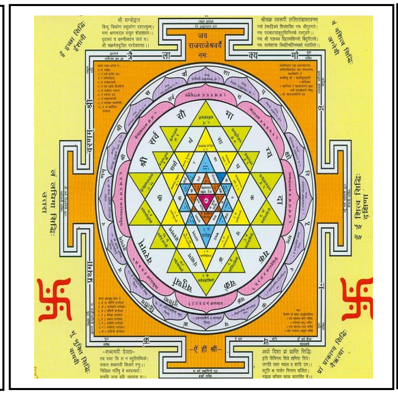
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कुशलायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कोमलाकारायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कुरुकुल्लायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कुलेश्वर्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कुलकुण्डालयायै नमः । ४४०


ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कौलमार्ग तत्पर सेवितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कुमार गणनाथाम्बायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तुष्ट्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पुष्ट्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मत्यै नमः ।

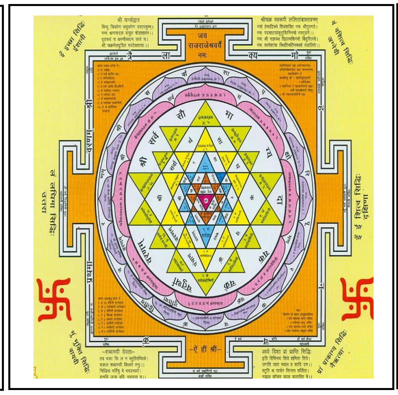
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धृत्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शान्त्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्वस्तिमत्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कान्त्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नन्दिन्यै नमः । ४५०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विघ्ननाशिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तेजोवत्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रिनयनायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लोलाक्षी कामरूपिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मालिन्यै नमः ।

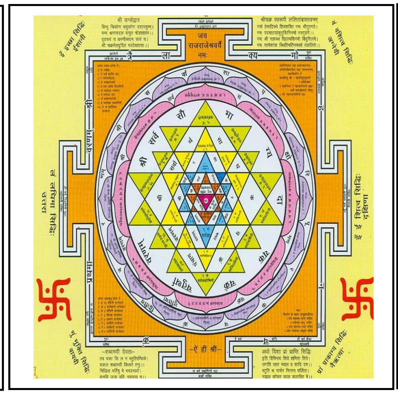
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हंसिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मात्रे नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मलयाचल वासिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सुमुख्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नलिन्यै नमः । ४६०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सुभ्रुवे नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शोभनायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सुरनायिकायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कालकण्ठ्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कान्तिमत्यै नमः ।

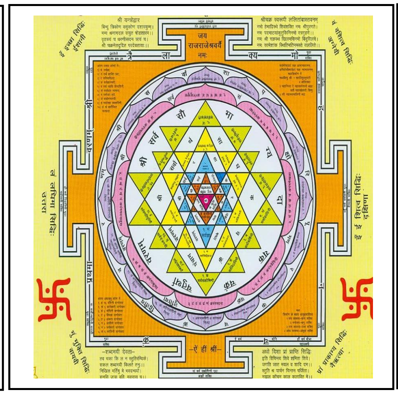
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षोभिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सूक्ष्मरूपिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वज्रेश्वर्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वामदेव्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वयोऽवस्था विवर्जितायै नमः । ४७०


ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धेश्वर्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धविद्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धमात्रे नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यशस्विन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विशुद्धिचक्र निलयायै नमः ।

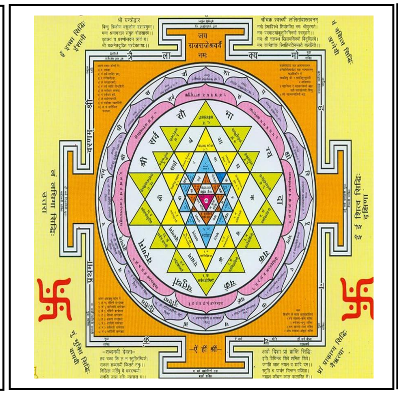
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आरक्तवर्णायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रिलोचनायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं खट्वाङ्गादि प्रहरणायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वदनैक समन्वितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पायसान्नप्रियायै नमः । ४८०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्वक्स्थायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पशुलोक भयङ्कर्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अमृतादि महाशक्ति संवृतायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं डाकिनीश्वर्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अनाहताब्जनिलयायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्यामाभायै नमः ।

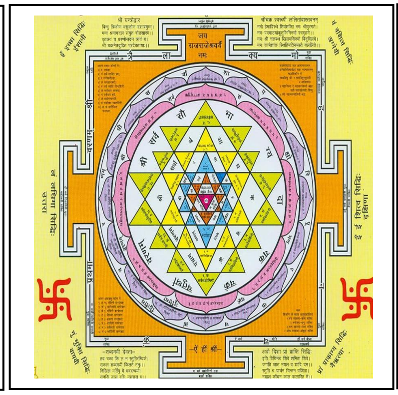
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वदनद्वयायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दंष्ट्रोज्वलायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अक्षमालादिधरायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रुधिर संस्थितायै नमः । ४६०







ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कालरात्र्यादि शक्त्यौघ वृतायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्निग्धौदनप्रियायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महावीरेन्द्र वरदायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं राकिण्यम्बा स्वरूपिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मणिपूराब्जनिलयायै नमः ।

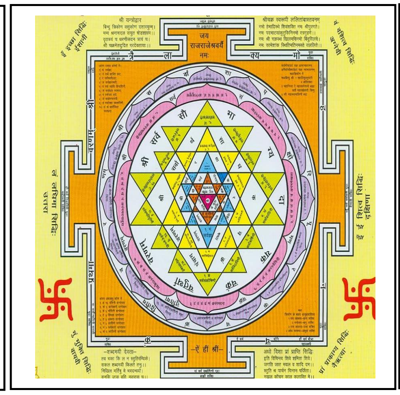
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वदनत्रयसंयुतायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वज्राधिकायुधोपेतायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं डामर्यादिभिरावृतायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रक्तवर्णायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मांसनिष्ठायै नमः । ५००

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गुडान्नप्रीत मानसायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं समस्त भक्त सुखदायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लाकिन्यम्बा स्वरूपिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्वाधिष्ठानाम्बुजगतायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चतुर्वक्त्र मनोहरायै नमः ।

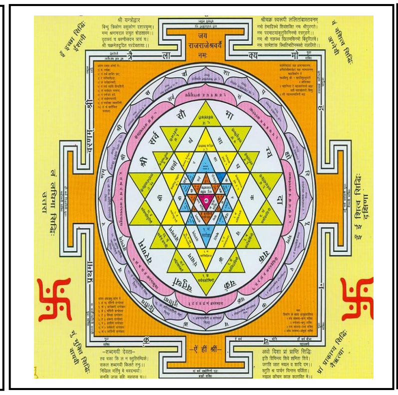
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शूलाद्यायुध सम्पन्नायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पीतवर्णायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अतिगर्वितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मेदोनिष्ठायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मधुप्रीतायै नमः । ५१०



ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बन्दिन्यादि समन्वितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दध्यन्नासक्त हृदयायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं काकिनीरूप धारिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलाधाराम्बुजारूढायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पञ्चवक्त्रायै नमः ।

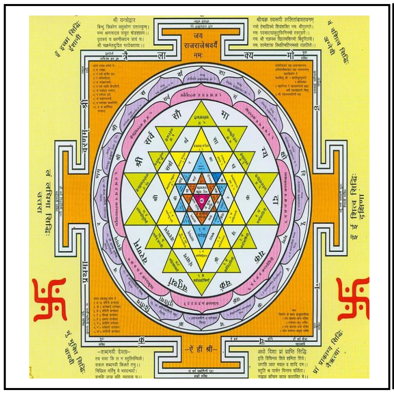
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अस्थिसंस्थितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अङ्कुशादि प्रहरणायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वरदादि निषेवितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मुद्गौदनासक्त चित्तायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं साकिन्यम्बा स्वरूपिण्यै नमः । ५२०


ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आज्ञाचक्राब्जनिलायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शुक्लवर्णायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं षडाननायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मज्जासंस्थायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हंसवती मुख्य शक्तिसमन्वितायै नमः ।

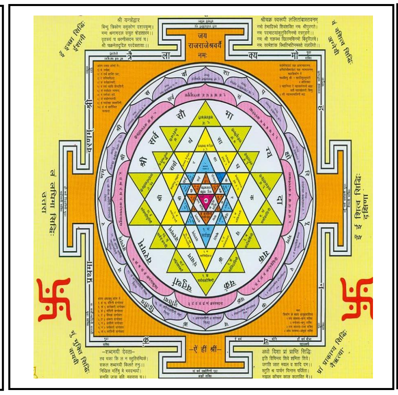
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हरिद्रान्नैक रसिकायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हाकिनी रूपधारिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सहस्रदल पद्मस्थायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्व वर्णोप शोभितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वायुधधरायै नमः । ५३०


ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शुक्लसंस्थितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वतोमुख्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वौदनप्रीतचित्तायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं याकिन्यम्बास्वरूपिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्वाहायै नमः ।

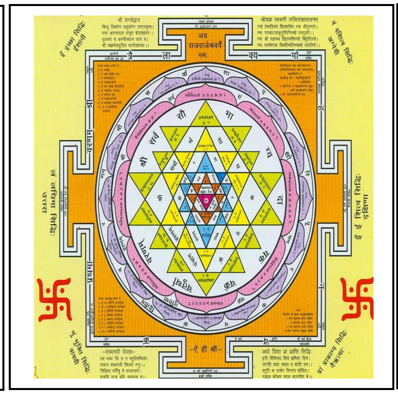
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्वधायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अमत्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मेधायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रुत्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्मृत्यै नमः । ५४०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अनुत्तमायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पुण्यकीर्त्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पुण्यलभ्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पुण्यश्रवणकीर्तनायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पुलोमजार्चितायै नमः ।

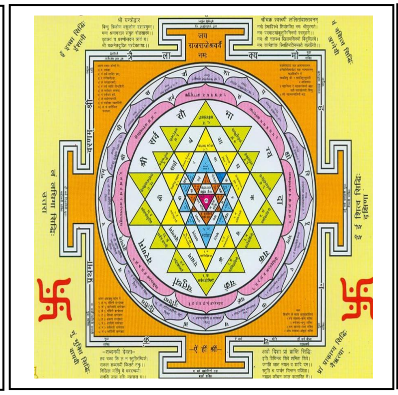
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बन्धमोचन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बन्धुरालकायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विमर्शरूपिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विद्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वियदादि जगत्प्रसुवे नमः । ५५०


ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्व व्याधिप्रशमन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्व मृत्युनिवारिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अग्रगण्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अचिन्त्यरूपायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कलिकल्मषनाशिन्यै नमः ।

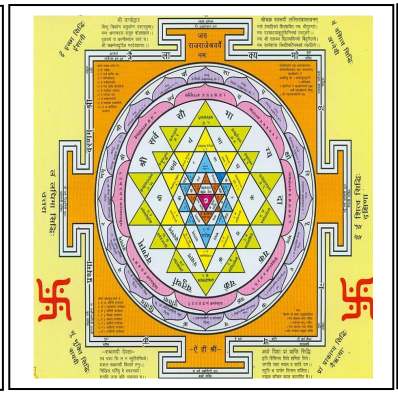
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कात्यायन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कालहन्त्र्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कमलाक्षनिषेवितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ताम्बूलपूरितमुख्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दाडिमी कुसुमप्रभायै नमः । ५६०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मृगाक्ष्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मोहिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मुख्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मृडान्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मित्ररूपिण्यै नमः ।

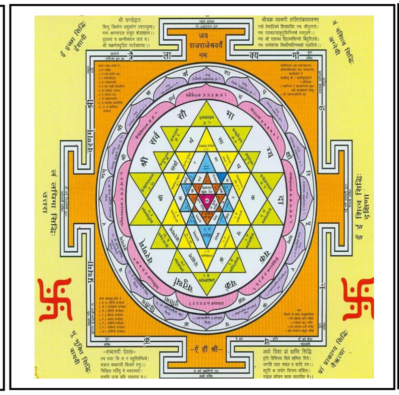
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नित्यतृप्तायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भक्तनिधये नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नियन्त्र्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निखिलेश्वर्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मैत्र्यादि वासना लभ्यायै नमः । ५७०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महाप्रलयसाक्षिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पराशक्त्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं परानिष्ठायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रज्ञानघनरूपिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं माध्वीपानालसायै नमः ।

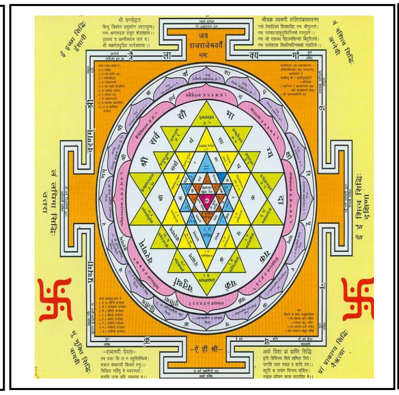
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मत्तायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मातृकावर्ण रूपिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महाकैलासनिलयायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मृणाल मृदु दोर्लतायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महनीयायै नमः । ५८०


ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दयामूर्त्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महासाम्राज्यशालिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आत्मविद्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महाविद्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविद्यायै नमः ।

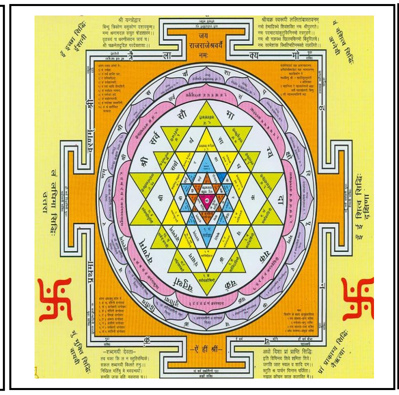
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कामसेवितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीषोडशाक्षरीविद्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रिकूटायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कामकोटिकायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कटाक्ष किङ्करी भूत कमला कोटिसेवितायै नमः । ५६०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शिरःस्थितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चन्द्रनिभायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भालस्थायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इन्द्रधनुःप्रभायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हृदयस्थायै नमः ।

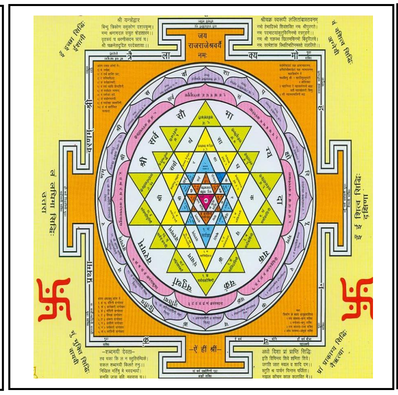
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रविप्रख्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रिकोणान्तर दीपिकायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दाक्षायण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दैत्यहन्त्र्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दक्षयज्ञ विनाशिन्यै नमः । ६००

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दरान्दोलित दीर्घाक्ष्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दर हासोज्ज्वलन्मुख्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गुरुमूर्तये नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गुणनिधये नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गोमात्रे नमः ।

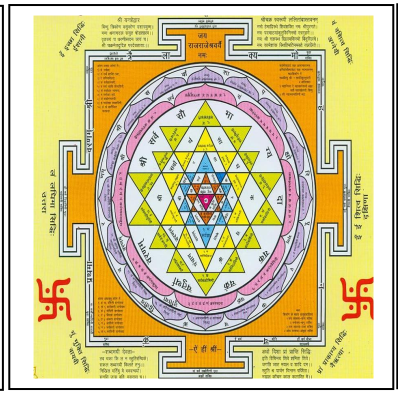
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गुहजन्मभुवे नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं देवेश्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दण्डनीतिस्थायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दहराकाशरूपिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रतिपन्मुख्य राकान्त तिथि मण्डल पूजितायै नमः । ६१०


ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कलात्मिकायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कलानाथायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं काव्यालाप विनोदिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सचामर रमा वाणी सव्य दक्षिण सेवितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आदिशक्त्यै नमः ।

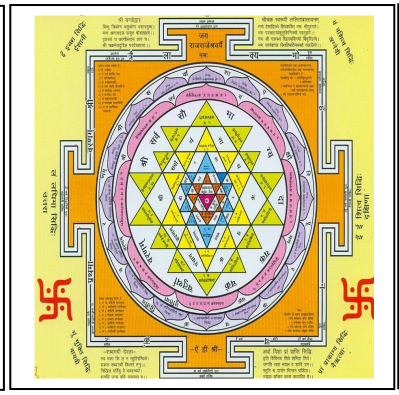
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अमेयायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आत्मने नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं परमायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पावनाकृतये नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अनेककोटिब्रह्माण्डजनन्यै नमः । ६२०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दिव्यविग्रहायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीङ्कार्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं केवलायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गुह्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कैवल्यपददायिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुरायै नमः ।

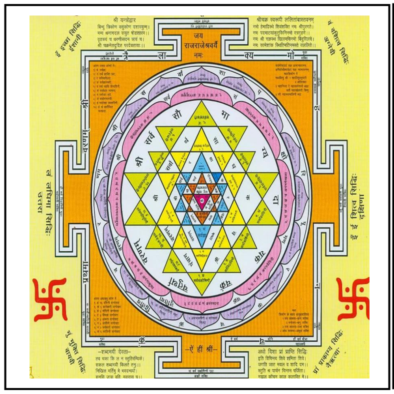
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रिजगद्वन्द्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रिमूर्त्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रिदशेश्वर्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्र्यक्षर्यै नमः । ६३०







ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दिव्यगन्धाढ्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिन्दूर तिलकाञ्चितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उमायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शैलेन्द्रतनयायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गौर्यै नमः ।

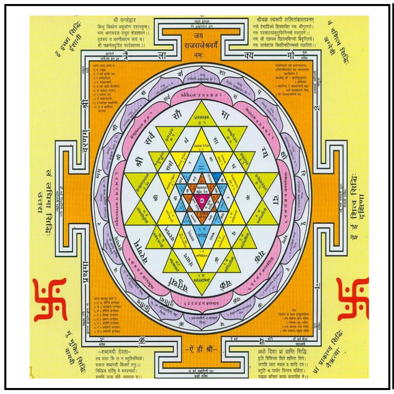
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गन्धर्वसेवितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विश्वगर्भायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्वर्णगर्भायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अवरदायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वागधीश्वर्यै नमः । ६४०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ध्यानगम्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अपरिच्छेद्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ज्ञानदायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ज्ञानविग्रहायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्व वेदान्त संवेद्यायै नमः ।

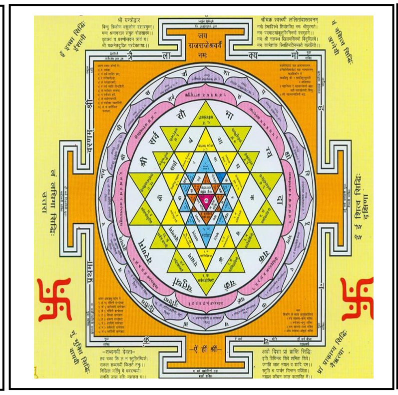
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सत्यानन्दस्वरूपिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लोपामुद्रार्चितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लीला क्लृप्त ब्रह्माण्डमण्डलायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अदृश्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दृश्यरहितायै नमः । ६५०


ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विज्ञात्र्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वेद्यवर्जितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं योगिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं योगदायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं योग्यायै नमः ।

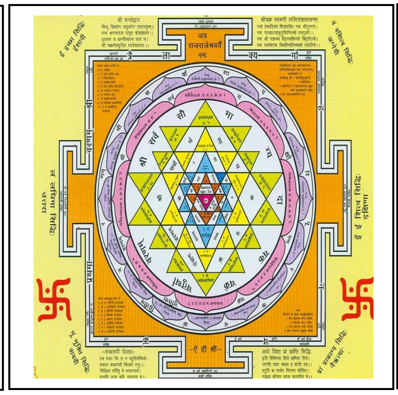
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं योगानन्दायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं युगन्धरायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इच्छाशक्ति ज्ञानशक्ति क्रियाशक्ति स्वरूपिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वाधारायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सुप्रतिष्ठायै नमः । ६६०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सदसद्रूपधारिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अष्टमूर्त्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अजाजैत्र्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लोकयात्राविधायिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एकाकिन्यै नमः ।

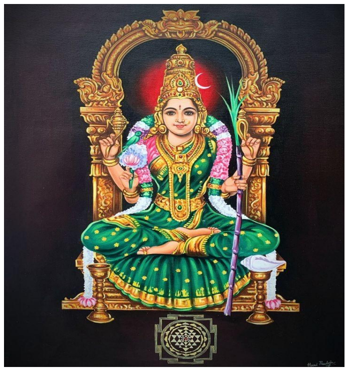
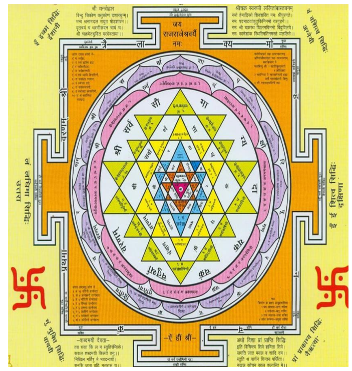
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भूमरूपायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निर्द्वैतायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं द्वैतवर्जितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अन्नदायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वसुदायै नमः । ६७०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वृद्धायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ब्रह्मात्मैक्य स्वरूपिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बृहत्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ब्राह्मण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ब्राह्म्यै नमः ।

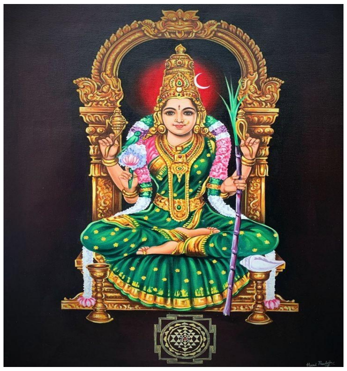
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ब्रह्मानन्दायै नमः ।

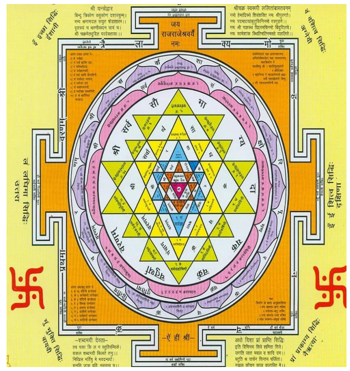
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बलिप्रियायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भाषारूपायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बृहत्सेनायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भावाभाव विर्जितायै नमः । ६८०







ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सुखाराध्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शुभकर्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शोभनासुलभागत्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं राजराजेश्वर्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं राज्यदायिन्यै नमः ।

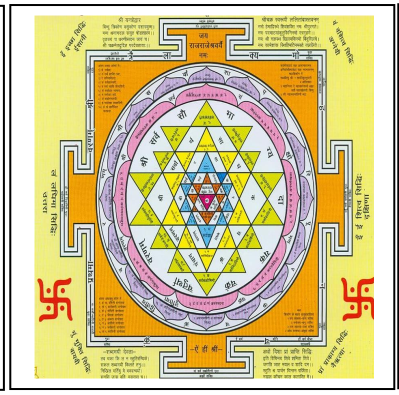
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं राज्यवल्लभायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं राजत्कृपायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं राजपीठ निवेशित निजाश्रितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं राज्यलक्ष्म्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कोशनाथायै नमः । ६९०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चतुरङ्गबलेश्वर्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं साम्राज्यदायिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सत्यसन्धायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सागरमेखलायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दीक्षितायै नमः ।

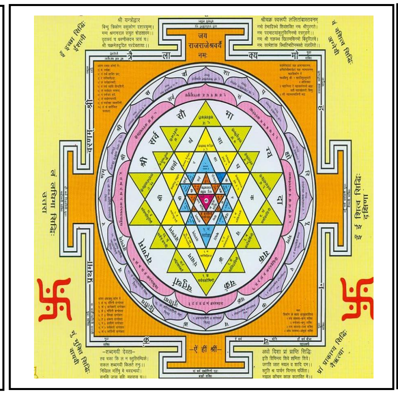
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दैत्यशमन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वलोकवंशकर्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वार्थदात्र्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सावित्र्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सच्चिदानन्दरूपिण्यै नमः । ७००


ॐ ऐं ह्रीं श्रीं देशकाला परिच्छिन्नायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वगायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वमोहिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सरस्वत्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शास्त्रमय्यै नमः ।

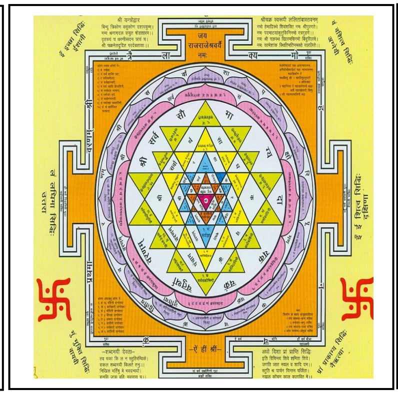
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गुहाम्बायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गुह्यरूपिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वोपाधि विनिर्मुक्तायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सदाशिव पतिव्रतायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सम्प्रदायेश्वर्यै नमः । ७१०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं साधुने नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गुरुमण्डलरूपिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कुलोत्तीर्णायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भगाराध्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मायायै नमः ।

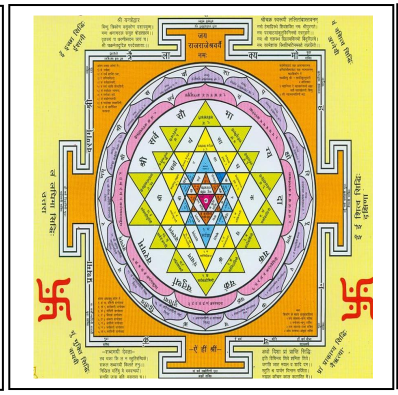
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मधुमत्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मह्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गणाम्बायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गुह्यकाराध्यायै नमः । ७२०







ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कोमलाङ्ग्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गुरुप्रियायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्वतन्त्रायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वतन्त्रेश्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दक्षिणामूर्तिरूपिण्यै नमः ।

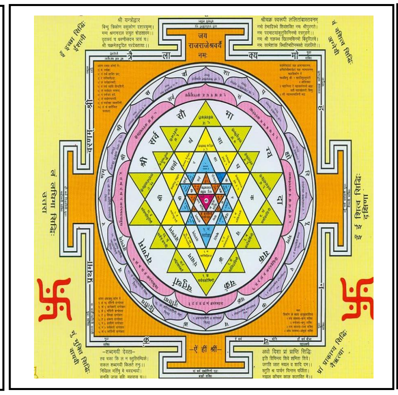
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सनकादिसमाराध्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शिवज्ञानप्रदायिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चित्कलायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आनन्दकलिकायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रेमरूपायै नमः । ७३०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रियङ्कर्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नामपारायणप्रीतायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नन्दिविद्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नटेश्वर्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मिथ्या जगदधिष्ठानायै नमः ।

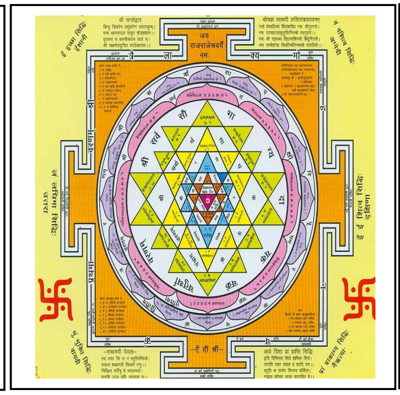
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मुक्तिदायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मुक्तिरूपिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लास्यप्रियायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लयकर्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लज्जायै नमः । ७४०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं   रम्भादिवन्दितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं   भवदावसुधावृष्ट्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं   पापारण्य दवानलायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं   दौर्भाग्य तूलवातूलायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं   जराध्वान्त रविप्रभायै नमः ।

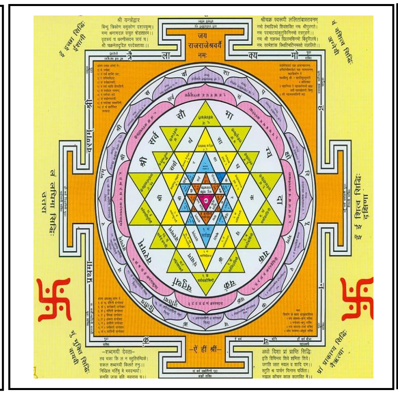
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं   भाग्याब्धि चन्द्रिकायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं   भक्तचित्तकेकि घनाघनायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं   रोगपर्वतदम्भोलये नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं   मृत्युदारुकुठारिकायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं   महेश्वर्यै नमः । ७५०


ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महाकाल्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महाग्रासायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महाशनायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अपर्णायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चण्डिकायै नमः ।

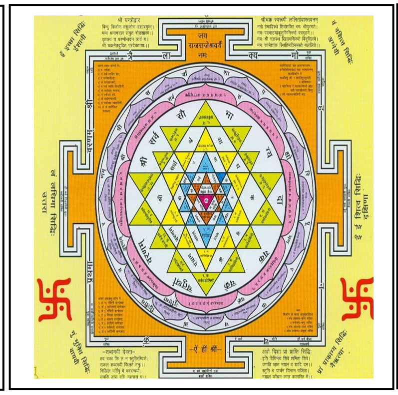
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चण्डमुण्डासुरनिषूदिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षराक्षरात्मिकायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वलोकेश्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विश्वधारिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रिवर्गदात्र्यै नमः । ७६०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सुभगायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्र्यम्बकायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रिगुणात्मिकायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्वर्गापवर्गदायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शुद्धायै नमः ।

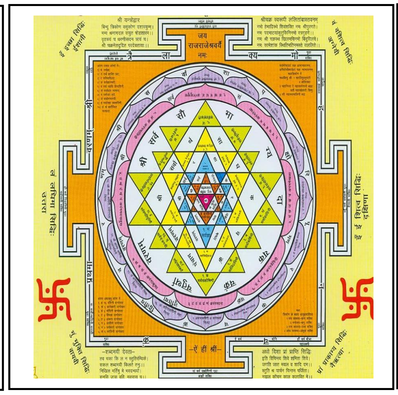
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जपापुष्पनिभाकृतये नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओजोवत्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं द्युतिधरायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यज्ञरूपायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रियव्रतायै नमः । ७७०


ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दुराराध्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दुराधर्षायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पाटलीकुसुमप्रियायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महत्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मेरुनिलयायै नमः ।

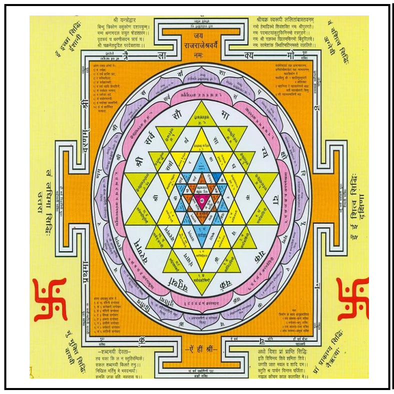
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मन्दारकुसुमप्रियायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वीराराध्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विराड्रूपायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विरजसे नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विश्वतोमुख्यै नमः । ७८०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यग्रूपायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पराकाशायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्राणदायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्राणरूपिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मार्ताण्ड भैरवाराध्यायै नमः ।

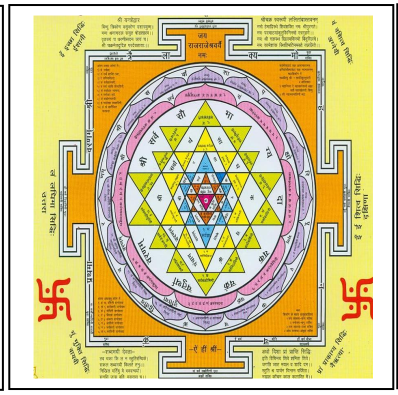
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मन्त्रिणीन्यस्त राज्यधुरे नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुरेश्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जयत्सेनायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निस्त्रैगुण्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं परापरायै नमः । ७६०


ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सत्यज्ञानानन्दरूपायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सामरस्य परायणायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कपर्दिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कलामालायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कामदुघे नमः ।

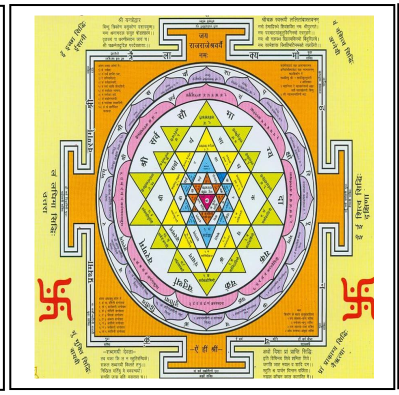
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कामरूपिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कलानिधये नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं काव्यकलायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रसज्ञायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रसशेवधये नमः । ८००

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पुष्टायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पुरातनायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पूज्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पुष्करायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पुष्करेक्षणायै नमः ।

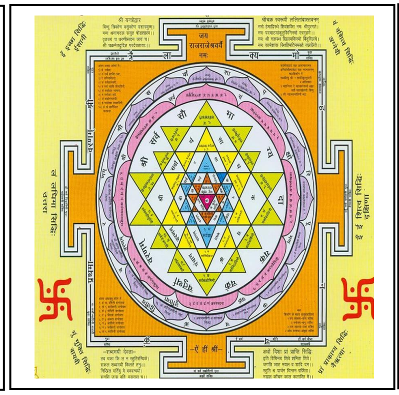
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं परस्मै ज्योतिषे नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं परस्मै धाम्ने नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं परमाणवे नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं परात्परायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पाशहस्तायै नमः । ८१०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पाशहन्त्र्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं परमन्त्रविभेदिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूर्तायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अमूर्तायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अनित्यतृप्तायै नमः ।

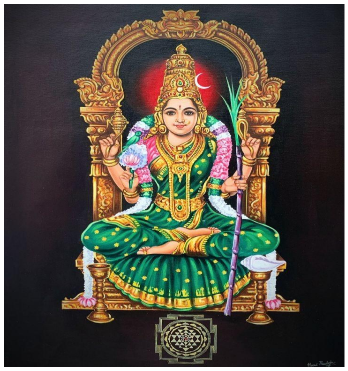
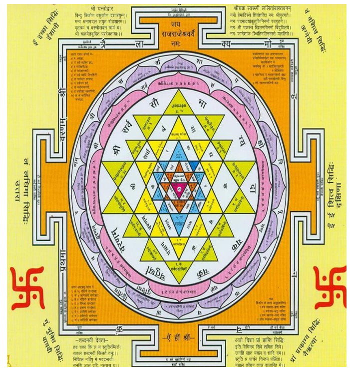
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मुनि मानस हंसिकायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सत्यव्रतायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सत्यरूपायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वान्तर्यामिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सत्यै नमः । ८२०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ब्रह्माण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ब्रह्मणे नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जनन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बहुरूपायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बुधार्चितायै नमः ।

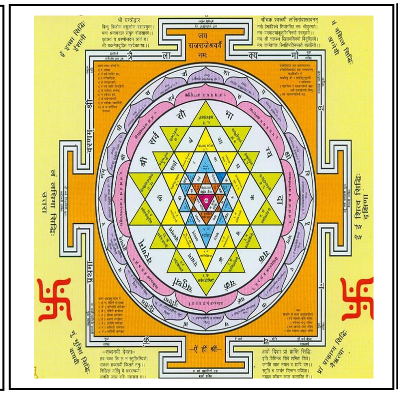
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रसवित्र्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रचण्डायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आज्ञायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रतिष्ठायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रकटाकृतये नमः । ८३०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्राणेश्वर्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्राणदात्र्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पञ्चाशत्पीठरूपिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विशृङ्खलायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विविक्तस्थायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वीरमात्रे नमः ।

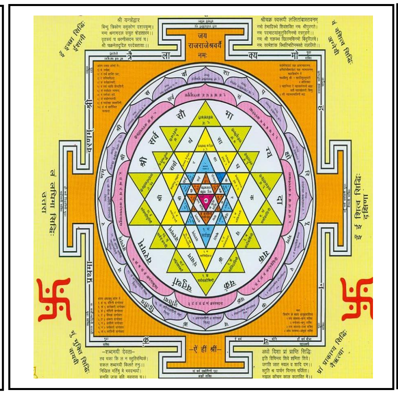
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वियत्प्रसुवे नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मुकुन्दायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मुक्तिनिलयायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलविग्रहरूपिण्यै नमः । ८४०







ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भावज्ञायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भवरोगघ्न्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भवचक्र प्रवर्तिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं छन्दःसारायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शास्त्रसारायै नमः ।

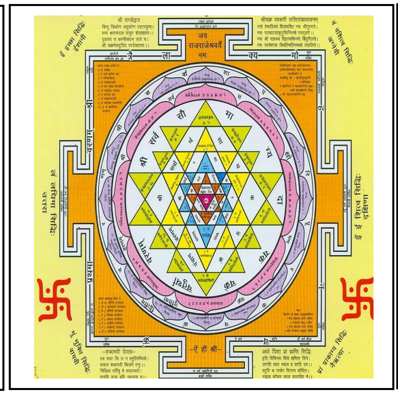
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मन्त्रसारायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तलोदर्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उदारकीर्तये नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उद्दामवैभवायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वर्णरूपिण्यै नमः । ८५०


ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जन्म मृत्यु जरा तप्तजन विश्रान्तिदायिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वोपनिषदुद् घुष्टायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शान्त्यतीत कलात्मिकायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गम्भीरायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गगनान्तस्थायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गर्वितायै नमः ।

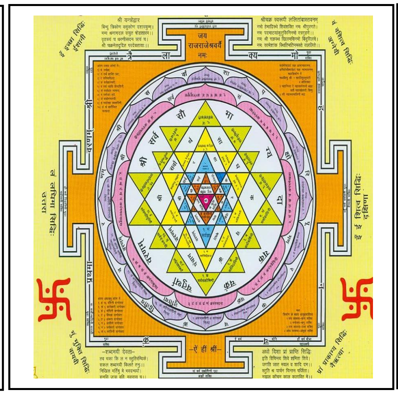
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गानलोलुपायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कल्पनारहितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं काष्ठायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अकान्तायै नमः । ८६०







ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कान्तार्धविग्रहायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कार्यकारण निर्मुक्तायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कामकेलि तरङ्गितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कनत् कनक ताटङ्कायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लीलाविग्रहधारिण्यै नमः ।

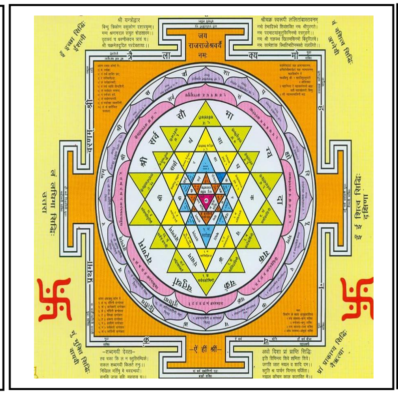
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अजायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षयविनिर्मुक्तायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मुग्धायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षिप्रप्रसादिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अन्तर्मुखसमाराध्यायै नमः । ८७०


ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बहिर्मुखसुदुर्लभायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रय्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रिवर्गनिलयायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रिस्थायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुरमालिन्यै नमः ।

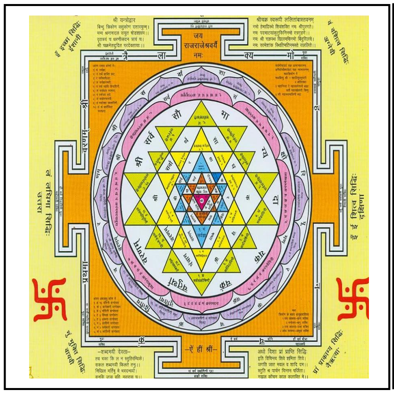
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निरामयायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निरालम्बायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्वात्मारामायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सुधासृत्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं संसारपङ्क निर्मग्न समुद्धरण पण्डितायै नमः । ८८०


ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यज्ञप्रियायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यज्ञकर्त्र्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यजमानस्वरूपिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धर्माधारायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धनाध्यक्षायै नमः ।

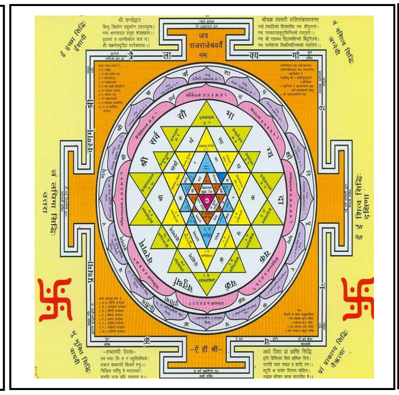
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धनधान्यविवर्धिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विप्रप्रियायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विप्ररूपायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विश्वभ्रमण कारिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विश्वग्रासायै नमः । ८६०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विद्रुमाभायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वैष्णव्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विष्णुरूपिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अयोन्यै नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं योनिनिलयायै नमः ।

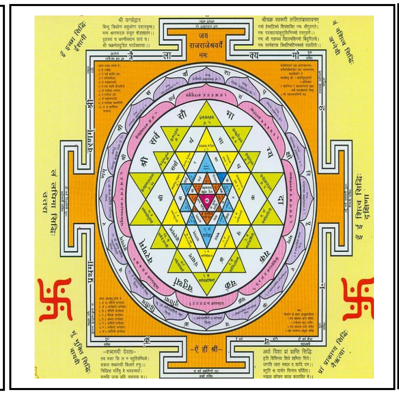
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कूटस्थायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कुलरूपिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वीरगोष्ठीप्रियायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वीरायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नैष्कर्म्यायै नमः । ६००

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नादरूपिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विज्ञानकलनायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कल्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विदग्धायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बैन्दवासनायै नमः ।

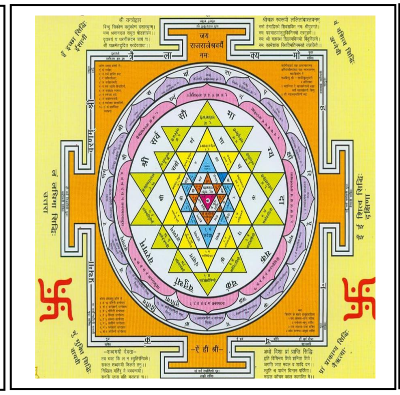
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तत्त्वाधिकायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तत्त्वमय्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तत्त्वमर्थस्वरूपिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सामगानप्रियायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौम्यायै नमः । ६१०


ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सदाशिव कुटुम्बिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सव्यापसव्य मार्गस्थायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वापद्विनिवारिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्वस्थायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्वभावमधुरायै नमः ।

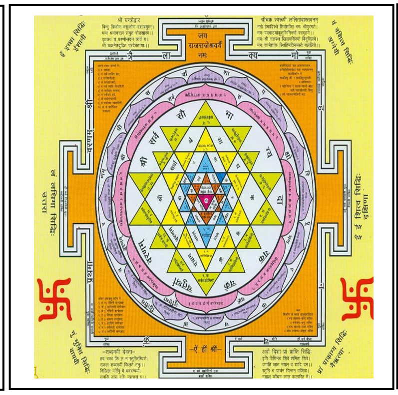
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धीरायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धीरसमर्चितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चैतन्यार्घ्य समाराध्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चैतन्य कुसुमप्रियायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सदोदितायै नमः । ६२०


ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सदातुष्टायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तरुणादित्यपाटलायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दक्षिणा दक्षिणाराध्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दरस्मेरमुखाम्बुजायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कौलिनीकेवलायै नमः ।

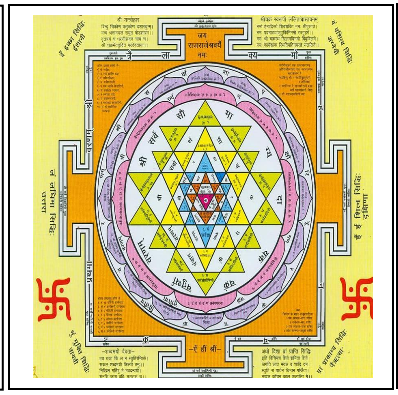
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अनर्घ्य कैवल्यपद दायिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्तोत्रप्रियायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्तुतिमत्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रुति संस्तुत वैभवायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मनस्विन्यै नमः । ६३०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मानवत्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महेश्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मङ्गलाकृतये नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विश्वमात्रे नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जगद्धात्र्यै नमः ।

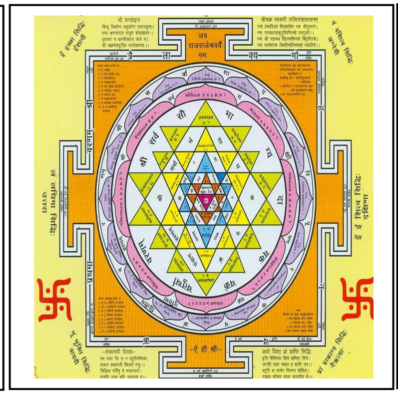
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विशालाक्ष्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विरागिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रगल्भायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं परमोदारायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं परामोदायै नमः । ६४०


ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मनोमय्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं व्योमकेश्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विमानस्थायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वज्रिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वामकेश्वर्यै नमः ।

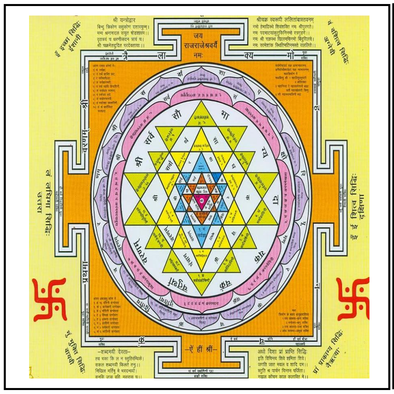
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पञ्चयज्ञप्रियायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पञ्चप्रेत मञ्चाधिशायिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पञ्चम्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पञ्चभूतेश्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पञ्चसङ्ख्योपचारिण्यै नमः । ६५०


ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शाश्वत्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शाश्वतैश्वर्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शर्मदायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शम्भुमोहिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धरायै नमः ।

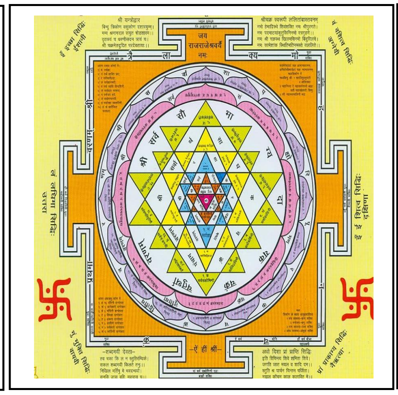
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धरसुतायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धन्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धर्मिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धर्मवर्धिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लोकातीतायै नमः । ६६०


ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गुणातीतायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वातीतायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शमात्मिकायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बन्धूककुसुमप्रख्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बालायै नमः ।

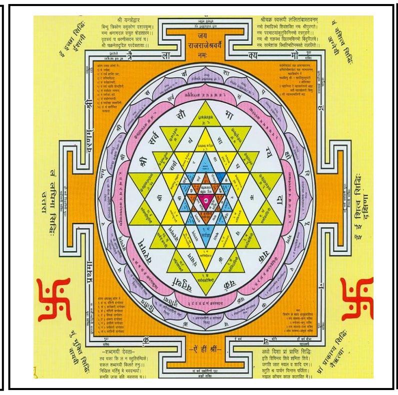
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लीलाविनोदिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सुमङ्गल्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सुखकर्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सुवेषाढ्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सुवासिन्यै नमः । ६७०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सुवासिन्यर्चन प्रीतायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आशोभनायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शुद्धमानसायै नम

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बिन्दुतर्पण सन्तुष्टायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पूर्वजायै नमः ।

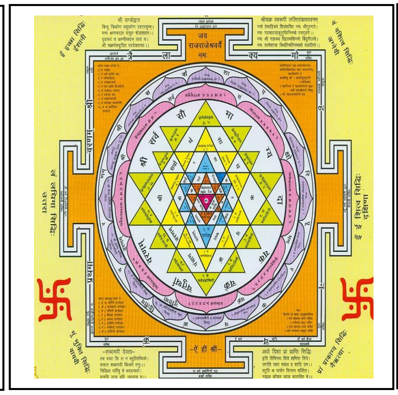
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुराम्बिकायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दशमुद्रा समाराध्यायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुराश्री वशङ्कर्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ज्ञानमुद्रायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ज्ञानगम्यायै नमः । ६८०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ज्ञानज्ञेयस्वरूपिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं योनिमुद्रायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रिखण्डेश्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रिगुणायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अम्बायै नमः ।

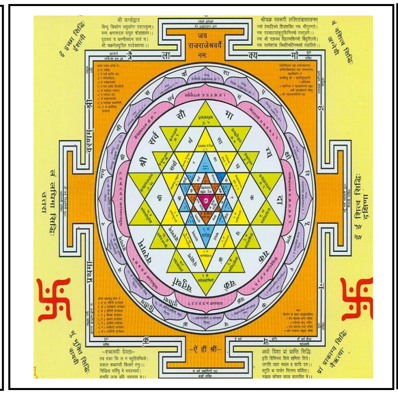
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रिकोणगायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अनघायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अद्भुतचारित्रायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वाञ्छितार्थ प्रदायिन्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अभ्यासातिशय ज्ञातायै नमः । ९९०


ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शडध्वातीत रूपिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अव्याजकरुणामूर्तये नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अज्ञानध्वान्तदीपिकायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आबालगोप विदितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वानुल्लङ्घ्य शासनायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीचक्रराज निलयायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमत् त्रिपुरसुन्दर्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशिवाशिवयै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शिवशक्त्यैक्यरूपिण्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ललिताम्बिकायै नमः । १००० ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु तत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु ||

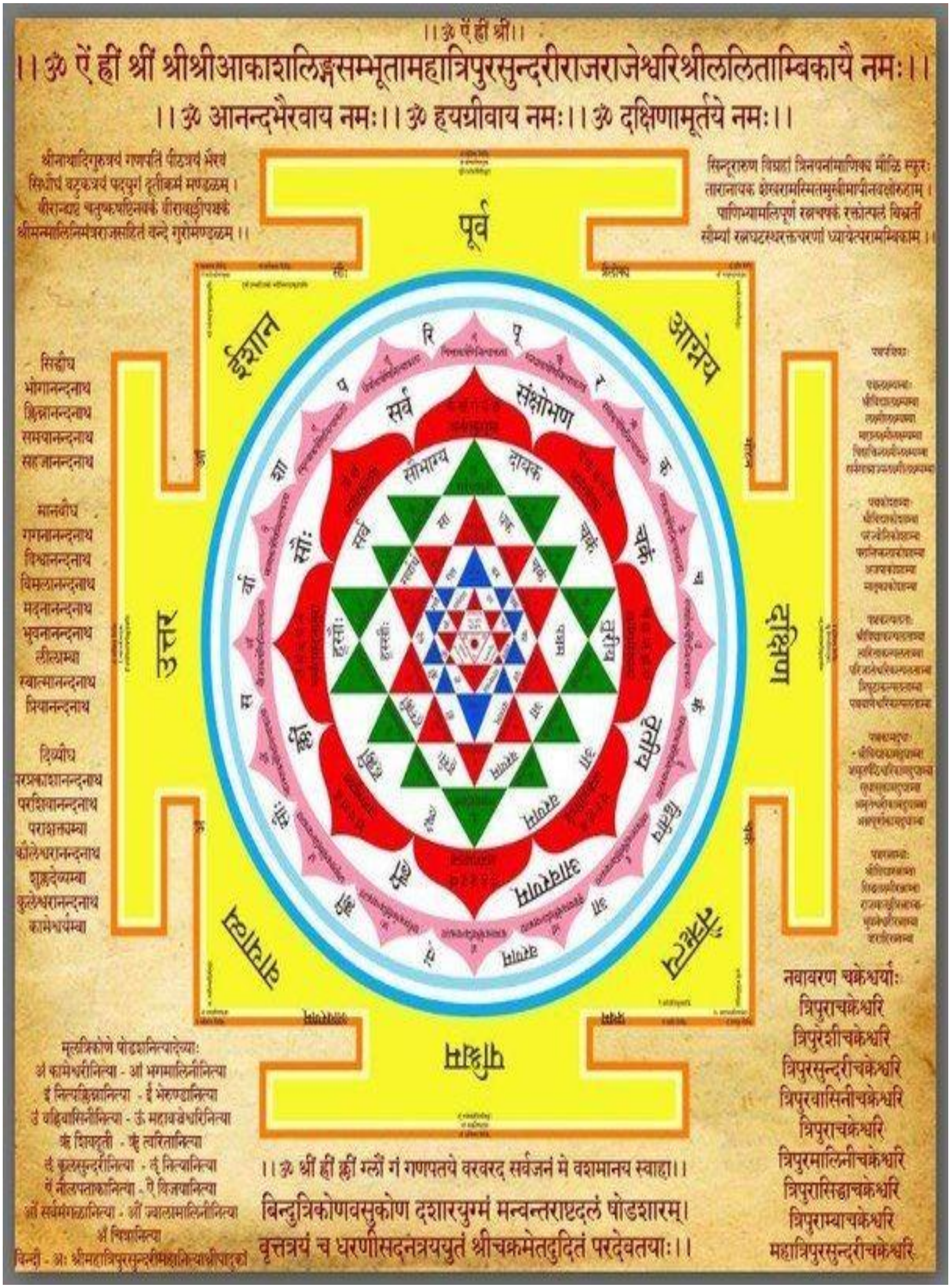
|| इति श्रीललितासहस्रनामावलिः सम्पूर्णा ||



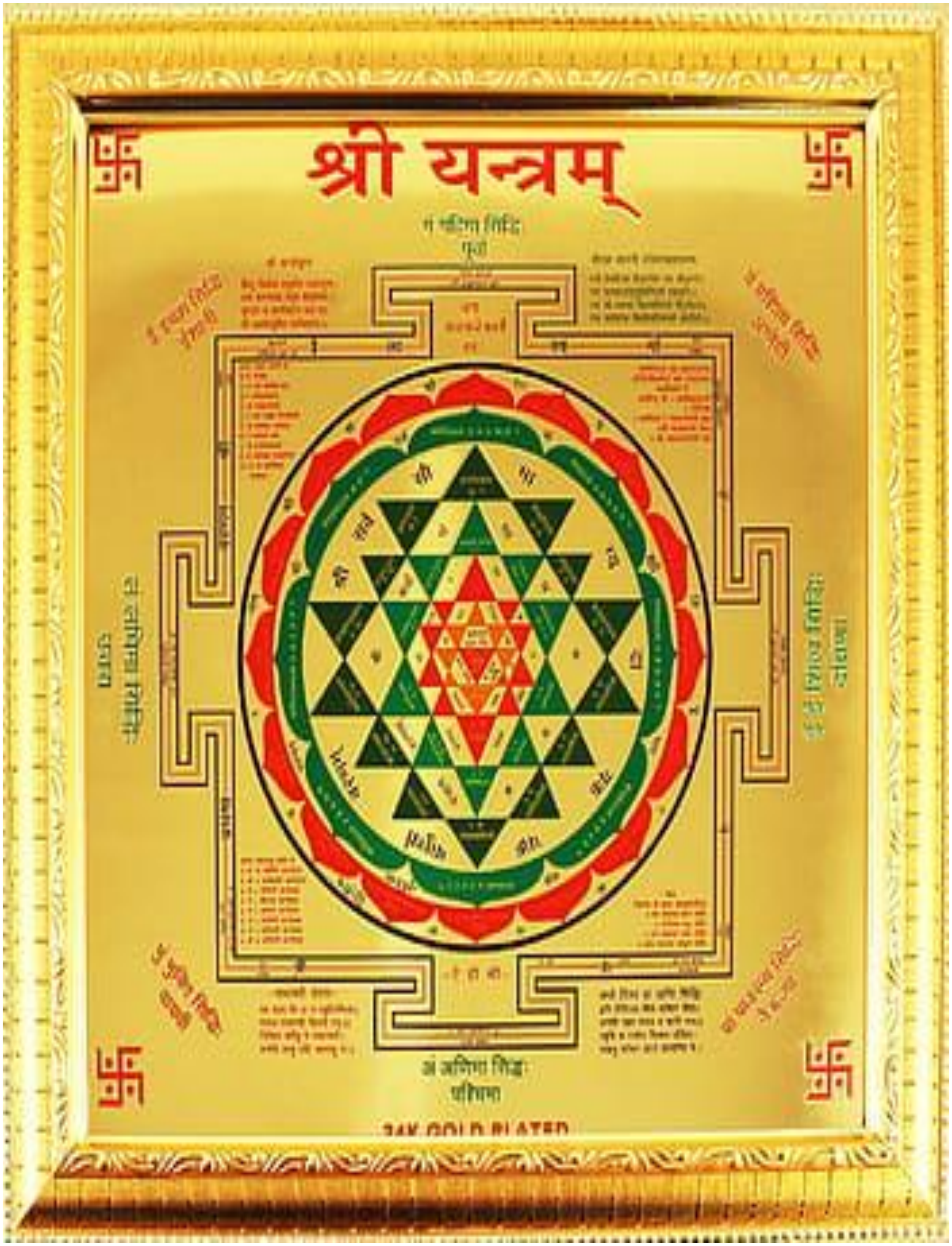
श्री ललिता सहस्त्रनाम

शंकर पुरस्वानी




।।ॐ ऐं ह्रीं श्रीं।।
।। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीश्रीआकाशलिङ्गसम्भूतामहात्रिपुरसुन्दरीराजराजेश्वरिश्रीललिताम्बिकायै नमः।।
।। ॐ आनन्दभैरवाय नमः।। ॐ हयग्रीवाय नमः।। ॐ दक्षिणामूर्तये नमः।।
पूर्व
आग्नेय
दक्षिण
पश्चिम
वायव्य
उत्तर
ईशान
सिद्धौघ
भोगानन्दनाथ
क्लिन्नानन्दनाथ
समयानन्दनाथ
सहजानन्दनाथ
मानवौघ
गगनानन्दनाथ
विश्वानन्दनाथ
विमलानन्दनाथ
मदनानन्दनाथ
भुवनानन्दनाथ
लीलाम्बा
स्वात्मानन्दनाथ
प्रियानन्दनाथ
दिव्यौघ
परप्रकाशानन्दनाथ
परशिवानन्दनाथ
पराशक्त्यम्बा
कौलेश्वरानन्दनाथ
शुक्लदेव्यम्बा
कुलेश्वरानन्दनाथ
कामेश्वर्यम्बा
नवावरण चक्रेश्वर्यः
त्रिपुराचक्रेश्वरि
त्रिपुरेशीचक्रेश्वरि
त्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वरि
त्रिपुरवासिनीचक्रेश्वरि
त्रिपुराश्रीचक्रेश्वरि
त्रिपुरमालिनीचक्रेश्वरि
त्रिपुरासिद्धाचक्रेश्वरि
त्रिपुराम्बाचक्रेश्वरि
महात्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वरि
।। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा।।
बिन्दुत्रिकोणवसुकोण दशारयुग्मं मन्वन्तराष्टदलं षोडशारम्।
वृत्तत्रयं च धरणीसदनत्रययुतं श्रीचक्रमेतदुदितं परदेवतायाः।।




श्री यन्त्रम्

।। श्री ललिता सहस्रनाम।।

गुरुध्यानम्

श्री गुरुभ्यो नमः ।

श्री महागणपतयेनमः ।

श्री मात्रे नमः ॥

परमेष्ठिगुरुः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः हंसः शिवः सोहं हंसः ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः सहक्षमलवरयीं स्हौः हंसः शिवः सोहं हंसः स्वात्मारामपञ्चर

विलीनतेजसे श्रीपरमेष्ठि गुरवे नमः श्री शिव श्रीपादुकां पूजयामि नमः॥

परमगुरु

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सोहं हंसः शिवः ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः सहक्षमलवरयीं स्हौः सोहं हंसः शिवः स्वच्छप्रकाश

विमर्शहेतवे श्री परमगुरवे नमः श्री शिव श्रीपादुकां पूजयामि नमः॥

श्रीगुरु

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः हंसः शिवः सोहं ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः सहक्षमलवरयीं स्हौः हंसः शिवः सोहं स्वरूप

निरूपण हेतवे श्रीगुरवे नमः श्री शिव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥

ॐ नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः! आचार्य सिद्धेश्वरपादुकाभ्योनमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्यो!!1!!

मैं पूज्य गुरुदेव को प्रणाम करता हूँ, मेरी उच्चतम भक्ति गुरु चरणों और उनकी पादुका केप्रति हैं, क्योंकि गंगा–यमुना आदि समस्त नदियाँ और संसार के समस्त तीर्थ उनके चरणों में समाहित हैं, यह पादुकाएं ऐसे चरणों से आप्लावित रहती हैं, इसलिए मैं इस पादुकाओं को प्रणाम करता हु, यह मुझे भवसागर से पार उतारने में सक्षम हैं, यह पूर्णता देने में सहायक हैं, ये परमगुरु

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सोहं हंसः शिवः ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः सहक्षमलवरयीं स्हौः सोहं हंसः शिवः स्वच्छप्रकाश

विमर्शहेतवे श्री परमगुरवे नमः श्री शिव श्रीपादुकां पूजयामि नमः||

श्रीगुरु

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः हंसः शिवः सोहं ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः सहक्षमलवरयीं स्हौः हंसः शिवः सोहं स्वरूप

निरूपण हेतवे श्रीगुरवे नमः श्री शिव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः||

ॐ नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः! आचार्य सिद्धेश्वरपादुकाभ्योनमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्यो!!1!!

मैं पूज्य गुरुदेव को प्रणाम करता हूँ, मेरी उच्चतम भक्ति गुरु चरणों और उनकी पादुका केप्रति हैं, क्योंकि गंगा–यमुना आदि समस्त नदियाँ और संसार के समस्त तीर्थ उनके चरणों में समाहित हैं, यह पादुकाएं ऐसे चरणों से आप्लावित रहती हैं, इसलिए मैं इस पादुकाओं को प्रणाम करता हु, यह मुझे भवसागर से पार उतारने में सक्षम हैं, यह पूर्णता देने में सहायक हैं, ये पादुकाएं आचार्य और सिद्ध

योगी केचरणों में सुशोभित रहती हैं, और ज्ञान के पुंज को अपने ऊपर उठाया हैं, इसीलिए ये पादुकाएं ही सही अर्थों में सिद्धेश्वर बन गई हैं, इसीलिए मैं इस गुरु पादुकाओं कोभक्ति भावः से प्रणाम करता हूँ!!1!!

ऐंकार ह्रींकाररहस्ययुक्त श्रींकारगूढार्थ महाविभूत्या !

ओंकारमर्म प्रतिपादिनीभ्याम नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम!!2!!

गुरुदेव "ऐंकार" रूप युक्त हैं, जो कि साक्षात् सरसवती के पुंज हैं, गुरुदेव"ह्रींकार" युक्त हैं, एक प्रकार से देखा जाये तो वे पूर्णरूपेण लक्ष्मी युक्त हैं, मेरे गुरुदेव"श्रींकार" युक्त हैं, जो संसार के समस्त वैभव, सम्पदा और सुख से युक्त हैं, जो सही अर्थों में महान विभूति हैं, मेरे गुरुदेव "ॐ" शब्द के मर्म को समझाने में सक्षम हैं, वे अपने शिष्यों को भी उच्च कोटि कि साधना सिद्ध कराने में सहायक हैं, ऐसे गुरुदेव के चरणों में लिपटी रहने वाली ये पादुकाएं साक्षात् गुरुदेव का ही विग्रह हैं, इसीलिए मैं इन पादुकाओं को श्रद्धा दृ भक्ति युक्त प्रणाम करता हूँ!!2!!

होत्राग्नि होत्राग्नि हविश्यहोतृ दृ होमादिसर्वाकृतिभासमानं !यद् ब्रह्म तद्बोधवितारिणीभ्याम नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम!!3!!

ये पादुकाएं अग्नि स्वरूप हैं, जो मेरे समस्त पापो को समाप्त करने में समर्थ हैं, ये पादुकाएं मेरे नित्य प्रति के पाप, असत्य, अविचार, और अचिन्तन से युक्त दोषों को दूर करनेमें समर्थ हैं, ये अग्नि कि तरह हैं, जिनका पूजन करने से मेरे समस्त पाप एक क्षण में ही नष्ट हो जाते हैं, इनके पूजन से मुझे करोडो यज्ञो का फल प्राप्त होता हैं, जिसकीवजह से मैं स्वयं ब्रह्मस्वरुप होकर ब्रह्म को पहिचानने कि क्षमता प्राप्त कर सका हूँ, जब गुरुदेव मेरे पास नहीं होते, तब ये पादुकाएं ही उनकी उपस्थिति का आभास प्रदान कराती रहती हैं, जो मुझे भवसागर से पार उतारने में सक्षम हैं, ऐसी गुरु पादुकाओं को मैं पूर्णता के साथ प्रणाम करता हूँ!!3!!

कामादिसर्प वज्रगारूडाभ्याम विवेक वैराग्यनिधिप्रदाभ्याम.बोधप्रदाभ्याम द्रुतमोक्षदाभ्याम नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम!!4!!

मेरे मन में काम, क्रोध, लोभ, मोह और अंहकार के सर्प विचरते ही रहते हैं, जिसकी वजह से मैं दुखी हूँ, और साधनाओं में मैं पूर्णता प्राप्त नहीं कर पाता, ऐसी स्थिति में गुरु पादुकाएं गरुड़ के समान हैं, जो एक क्षण में ही ऐसे कामादि सर्पों को भस्म कर देती हैं, और मेरे ह्रदय में विवेक, वैराग्य, ज्ञान, चिंतन, साधना और सिद्धियों का बोध प्रदान करती हैं, जो मुझे उन्नति की ओर ले जाने में समर्थ हैं, जो मुझे मोक्ष प्रदान करने में सहायक हैं, ऐसी गुरु पादुकाओं को मैं प्रणाम करता हूँ!!4!!

अनंतसंसार समुद्रतार नौकायिताभ्यां स्थिरभक्तिदाभ्यां!जाड्याब्धिसंशोषणवाड्वाभ्यां नमो नमः श्री

गुरुपादुकाभ्याम!!5!!

यह संसार विस्तृत हैं, इस भवसागर पार करने में ये पादुकाएं नौका की तरहहैं, जिसके सहारे मैं इस अनंत संसार सागर को पार कर सकता हूँ, जो मुझे स्थिर भक्ति देने में समर्थ हैं, मेरे अन्दर अज्ञान की घनी झाडियाँ हैं, उसे अग्नि की तरह जला कर समाप्त करने में सहायक हैं, ऐसी पादुकाओंको मैं भक्ति सहित प्रणाम करता हूँ!!5!!

श्री गुरु पादुका स्तोत्रम्–२

गुरु पादुका स्तोत्रम्

अनंतसंसार समुद्रतार नौकायिताभ्यां गुरुभक्तिदाभ्याम् ।

वैराग्यसाम्राज्यदपूजनाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् || 1 ||

कवित्ववाराशिनिशाकराभ्यां दौर्भाग्यदावां बुदमालिकाभ्याम् ।

दूरिकृतानम्र विपत्ततिभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् || 2 ||

नता ययोः श्रीपतितां समीयुः कदाचिदप्याशु दरिद्रवर्याः ।

मूकार्श्च वाचस्पतितां हि ताभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् || 3 ||

नालीकनीकाश पदाहृताभ्यां नानाविमोहादि निवारिकाभ्यां ।

नमज्जनाभीष्टततिप्रदाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् || 4 ||

नृपालि मौलिव्रजरत्नकांति सरिद्विराजत् झषकन्यकाभ्यां ।

नृपत्वदाभ्यां नतलोकपंकतेरू नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् || 5 ||

पापांधकारार्क परंपराभ्यां तापत्रयाहींद्र खगेर्श्वराभ्यां ।

जाड्याब्धि संशोषण वाडवाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् || 6 ||

शमादिषट्क प्रदवैभवाभ्यां समाधिदान व्रतदीक्षिताभ्यां ।

रमाधवांध्रिस्थिरभक्तिदाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् || 7 ||

स्वार्चापराणां अखिलेष्टदाभ्यां स्वाहासहायाक्षधुरंधराभ्यां ।

स्वांताच्छभावप्रदपूजनाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् || 8 ||

कामादिसर्प व्रजगारुडाभ्यां विवेकवैराग्य निधिप्रदाभ्यां ।

बोधप्रदाभ्यां दृतमोक्षदाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ‖ ९ ‖

गुरुब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।

गुरुस्साक्षात्परब्रह्म तस्मैश्रीगुरवे नमः ‖

संकल्पम्

ममोपात्त समस्त दुरित क्षय द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं,श्री ललिता महा त्रिपुरसुन्दरी प्रसाद सिद्ध्यर्थं, तदेव लग्नं,सुदिनं तदेव, ताराबलं चंद्रबलं तदेव विद्याबलं देवबलं तदेव लक्ष्मीपते ते अंघ्रियुगं स्मरामि ।

अस्य श्री भगवतः महाविष्णोः आदि पुरुषस्य आज्ञया, प्रवर्त मानस्य शुभयोग शुभकरण एवं गुणविशेषण विशिष्टायां अस्यां वर्तमानायां शुभ तिथौ अस्माकं सर्वेषां सह कुटुम्बानां क्षेमस्थैर्यादि सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थं धर्मार्थ काम मोक्षादि निखिल चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्ध्यर्थं, आयुः, आरोग्य, सौभाग्य, बल, श्री, कीर्ति, भाग्य, धन, धान्य, मणी, वस्त्र, भूषण, गृह, ग्राम, महाराज्य, साम्राज्यादि,जन्म कुंडली स्थित समस्त ग्रह दोष,पितृ दोष, काल सर्प दोष , वास्तु दोष, शत्रु द्वारा कृत यंत्र–मंत्र–तंत्र जनित बाधा, व्यापार बंधन, निवृत्यर्थं समस्त निखिलसुख अवाप्त्यर्थं, अस्मत् गुरु् वर्याणां ,श्रीविद्या पीठाधिपानां, श्रीविद्या गुरूणां ,समस्त गुरुमडलं स्मरण वंदन पूर्वकं, महत प्रोत्साहने, श्री ललिता सहस्रनाम कोटि अर्चना अङ्गत्वेन,

ललिता सहस्रनाम अर्चना अद्य करिष्ये ‖

आवाहनम्

श्री ललितामहात्रिपुसुन्दरीम ध्यायामि,

श्री ललितामहात्रिपुसुन्दरीम आवाहयामि,

श्री ललितामहात्रिपुसुन्दरीम प्राणान् प्रतिष्ठापयामि,

श्री ललितामहात्रिपुसुन्दर्यै नमः समस्तोपचारान् समर्पयामि।।

विनियोगः

ॐ अस्य श्री ललिता दिव्य सहस्रनाम स्तोत्र महामन्त्रस्य, वशिन्यादि वाग्देवता ऋषयः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री ललिता पराभट्टारिका महा त्रिपुर सुन्दरी देवता, ऐं बीजं, क्लीं शक्तिः, सौः कीलकं, मम धर्मार्थ काम मोक्ष चतुर्विध फलपुरुषार्थ सिद्धयर्थे ललिता त्रिपुरसुन्दरी पराभट्टारिका सहस्र नाम जपे विनियोगः।

करन्यासः

ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः,

क्लीं तर्जनीभ्यां नमः,

सौः मध्यमाभ्यां नमः,

सौः अनामिकाभ्यां नमः,

क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः,

ऐं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः

अङ्गन्यासः

ऐं हृदयाय नमः,

क्लीं शिरसे स्वाहा,

सौः शिखायै वषट्,

सौः कवचाय हुं,

क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्,

ऐं अस्त्रायफट्,

भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः।

ध्यानं

अरुणां करुणा तरङ्गिताक्षीं धृतपाशाङ्कुश पुष्पबाणचापाम् ।

अणिमादिभि रावृतां मयूखैः अहमित्येव विभावये भवानीम् ॥ 1 ॥

सर्वोच्च माता लालीमा रंग की हैं यानी आकाश का रंग , जैसा कि सुबह–सुबह वास्तविक सूर्योदय से ठीक पहले दिखाई देता है, जब नव किरणें आ रही होती हैं।

यह बहुत शांत और सुंदर समय है। यह एक अवर्णनीय रंग है; जिसकी सुंदरता को केवल देखा और आनंद लिया जाना चाहिए। रात का अँधेरा सूरज की किरणों को रास्ता देगा; चमक आकाश को ढक लेगी। यह रूप हमारे प्रति उनके प्रेम और स्नेह को दर्शाता है; यह सिखाता है कि उगते सूरज की तरह, वह हमारी सभी समस्याओं को दूर कर देगी।

व्यक्तिगत जरूरतों के आधार पर वह अपनी करुणा (करुणा) को, एक समय में थोड़ी–थोड़ी, लहरों (तरंगो) की तरह प्रकट करती है। उसकी कोमल और शांत आंखें (आक्षी) उसके दिल के भीतर मौजूद गहरे प्यार और करुणा को दर्शाती हैं।

हमें उनकी आंखों से बरस रही करुणा को ग्रहण करने की अपनी क्षमता बढ़ाने की जरूरत है।

वह अपने सभी महत्वपूर्ण हथियार – पाश (फंदा), अंकुश (बकरी), पुष्पबाण चाप (गन्ने से बना धनुष और फूलों से बने तीर) अपने हाथों में रखती हैं।

अणिमा, लघिमा आदि की 8 अलौकिक शक्तियां (अष्ट सिद्धियां) उन्हें किरणों की तरह घेर लेती हैं।

जिस प्रकार सूर्य इस सृष्टि के लाभ के लिए अपने चारों ओर किरणें बिखेरता है, उसी प्रकार देवी माँ अपने भक्तों के लाभ के लिए इन अलौकिक शक्तियों को बनाए रखती है।

हे माँ, मैं इस दृढ़ विश्वास के साथ आपसे यह प्रार्थना करता हूं कि आप और मैं अविभाज्य हैं। हम दोनों में कोई अंतर नहीं है।

ध्यायेत् पद्मासनस्थां विकसितवदनां पद्म पत्रायताक्षीं

हेमाभां पीतवस्त्रां करकलित लसमद्धेमपद्मां वराङ्गीम् ।

सर्वालङ्कारयुक्तां सकलमभयदां भक्तनम्रां भवानीं

श्री विद्यां शान्तमूर्तिं सकल सुरसुतां सर्वसम्पत्–प्रदात्रीम् ॥ 2 ॥

मैं उस दिव्य माँ का ध्यान करता हूँ जो पद्मासन (कमल मुद्रा) में बैठी है। इसका यह भी अर्थ है कि वह पद्म (कमल) के भीतर विराजमान है।

उनका एक आकर्षक चेहरा है जो हमारे उत्थान/विकास का कारण भी है। उसकी आंखें कमल की पंखुड़ियों की तरह लंबी हैं (कमल–आंखें) जो प्रतीक है कि वह हर प्राणी पर नजर रखती है।

वह पीले रंग के कपड़े (पीत वस्त्र) पहनती है, सुनहरे रंग की है और सुनहरी रोशनी की तरह चमक रही है (हेमा का अर्थ है सोना; भा का अर्थ है प्रकाश)।

सुंदर शरीर वाली, मध्यम चाल वाली, न बहुत मोटी, न बहुत पतली और हाथ में स्वर्ण कमल लिए हुए, वह सभी को आकर्षित करती है। यह स्वर्ण कमल जो मुरझा नहीं सकता, हमारे भीतर के कमल को चमका देता है।

उसने खुद को सभी प्रकार की सजावट (सर्व अलंकार) जैसे गहने, फूल आदि से सजाया है।

वह सभी प्राणियों के प्रति सुरक्षा की अभय मुद्रा (डर नहीं) प्रदर्शित करती है।

मैं पूर्ण श्रद्धा के साथ दिव्य माँ भवानी (भव या शिव की पत्नी) को नमन कर रहा हूँ।

वह श्रीविद्या के संपूर्ण ज्ञान का अवतार है। वह शान्त स्वरूप है। सभी सुरों (देवताओं) द्वारा उनकी बहुत श्रद्धा से पूजा की जाती है।

वह हर प्रकार की समृद्धि (सर्व सम्पद) प्रदान करती है। यहां समृद्धि का अर्थ ज्ञान (विद्या/ज्ञान) और योग है।

सकुङ्कुम विलेपना मलिकचुम्बि कस्तूरिकां

समन्द हसितेक्षणां सशरचाप पाशाङ्कुशाम् ।

अशेष जनमोहिनी मरुणमाल्य भूषोज्ज्वलां

जपाकुसुम भासुरां जपविधौ स्मरे दम्बिकाम् ॥ 3 ॥

उनका कुमकुम से अभिषेक किया जाता है। कुमकुम बहुत शुभ होता है और इसमें कई औषधीय गुण होते हैं। वह उन्हें अर्पित की गई कुमकुम की एक बूंद से भी प्रसन्न हो जाती हैं।

वह कस्तूरी बिंदी पहनती है जो वास्तव में उसकी असली सुंदरता है। इस चंदन के लेप की सुगंध से आकर्षित होकर भ्रमर और मधुमक्खियाँ उसे घेर लेती हैं।

उसकी हंसी कोमल, प्यारी, संपूर्ण और सुंदर है। वह अपने भक्तों को अत्यंत दयालु मुस्कान के साथ देखती हैं। उनकी मुस्कुराती आंखों में उनकी हंसी झलक रही है। वह अपने सभी हथियार रखती है – धनुष और तीर, अंकुश और पाश।

उसमें सार्वभौमिक आकर्षण की शक्ति है। भले ही कोई व्यक्ति उस पर विश्वास करता हो या नहीं, उसके लिए उससे बचना असंभव होगा और इसके बजाय वह उसकी ओर आकर्षित होगा।

वह जो लाल (अरुण) माला पहनती है, वह उत्तम है।

वह लाल हिबिस्कस फूल की तरह चमक रही है और इसे (जपाकुसुम) पहनती है।

जप के दौरान (अर्थात इस सहस्रनाम के पाठ के दौरान) दिव्य माँ अंबिका के इस रूप का ध्यान करना होता है।

सिन्धूरारुण विग्रहां त्रिणयनां माणिक्य मौलिस्फुरत्तारानायक

शेखरां स्मितमुखी मापीन वक्षोरुहाम् ।

पाणिभ्या मलिपूर्ण रत्न चषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीं

सौम्यां रत्नघटस्थ रक्त चरणां ध्यायेत्परामम्बिकाम् || 4 ||

हम दिव्य माता का ध्यान करें जिनके शरीर में सिंदूर का लाल रंग है, जिसकी तीन आंखें हैं, जो माणिक जड़ित सुन्दर मुकुट धारण करता है,जो अर्धचंद्र से सुशोभित है,जिनके चेहरे पर सुंदर मुस्कान करुणा की निशानी है, जिसके सुंदर अंग हैं,जिनके हाथों में रत्न जड़ित स्वर्ण पात्र भरा हुआ है अमृत के साथ, और दूसरे में लाल कमल का फूल।

|| लमित्यादि पंचपूजा विभावयेत् ||

लं पृथिवी तत्त्वात्मिकायै श्री ललितादेव्यै गन्धं परिकल्पयामि

हं आकाश तत्त्वात्मिकायै श्री ललितादेव्यै पुष्पं परिकल्पयामि

यं वायु तत्त्वात्मिकायै श्री ललितादेव्यै धूपं परिकल्पयामि

रं वह्नि तत्त्वात्मिकायै श्री ललितादेव्यै दीपं परिकल्पयामि

वं अमृत तत्त्वात्मिकायै श्री ललितादेव्यै अमृत नैवेद्यं परिकल्पयामि

सं सर्व तत्त्वात्मिकायै श्री ललितादेव्यै ताम्बूलादि सर्वोपचारान् परिकल्पयामि

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ।

ऊँ कमलासनाय विदमहे शिवप्रियाये धीमहि तन्नो ललिता प्रचोदयात्||

ह्रीं क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

श्रीमाता।

श्रीमहाराज्ञी ।

श्रीमत्सिंहासनेश्वरी ।

चिदग्निकुण्ड सम्भूता ।

देवकार्यसमुद्यता।

उद्यद्भानु सहस्राभा ।

चतुर्बाहु समन्विता।

रागस्वरूप पाशाढ्या।

क्रोधाकाराङ्कुशोज्ज्वला।

मनोरूपेक्षुकोदण्डा। 10

पञ्चतन्मात्रसायका।

निजारुण प्रभापूर मज्जद् ब्रह्माण्डमण्डला।

चम्पकाशोक पुन्नाग सौगन्धिक लसत्कचा।

कुरुविन्दमणि श्रेणी कनत्कोटीर मण्डिता।

अष्टमीचन्द्र विभ्राज दलिकस्थल शोभिता।

मुखचन्द्र कलङ्काभ मृगनाभिविशेषका।

वदनस्मर माङ्गल्य गृहतोरण चिल्लिका।

वक्त्रलक्ष्मी परीवाह चलन्मीनाभ लोचना।

नवचम्पक पुष्पाभ नासादण्ड विराजिता।

ताराकान्ति तिरस्कारि नासाभरण भासुरा। २०

कदम्बमञ्जरी क्लृप्तकर्णपूर मनोहरा।

ताटङ्क युगलीभूत तपनोडुप मण्डला।

पद्मराग शिलादर्श परिभावि कपोलभुवे ।

नवविद्रुम बिम्बश्री न्यक्कारि रदनच्छदा।

शुद्ध विद्याङ्कुराकार द्विजपङ्क्ति द्वयोज्ज्वला।

कर्पूर वीटिकामोद समाकर्षि दिगन्तरा।

निजसल्लाप माधुर्य विनिर्भत्सित कच्छपी।

मन्दस्मित प्रभापूर मज्जत्कामेश मानसा।

अनाकलित सादृश्य चिबुकश्री विराजिता।

कामेश बद्ध माङ्गल्य सूत्र शोभित कन्धरा। ३०

कनकाङ्गद केयूर कमनीय भुजान्विता।

रत्नग्रैवेय चिन्ताक लोल मुक्ता फलान्विता।

कामेश्वर प्रेमरत्न मणि प्रतिपण स्तनी।

नाभ्यालवाल रोमालि लता फल कुचद्वयी।

लक्ष्यरोम लताधारता समुन्नेय मध्यमा।

स्तनभार दलन्मध्य पट्टबन्ध वलित्रया।

अरुणारुण कौसुम्भ वस्त्र भास्व त्कटीतटी ।

रत्न किङ्किणिका रम्य रशना दाम भूषिता।

कामेश ज्ञात सौभाग्य मार्दवोरु द्वयान्विता।

माणिक्य मुकुटाकार जानुद्वय विराजिता।   ४०

इन्द्रगोप परिक्षिप्त स्मरतूणाभ जङ्घिका।

गूढ़गुल्फा।

कूर्मपृष्ठ जयिष्णु प्रपदान्विता।

नख दीधिति सञ्छन्न नमज्जन तमोगुणा।

पदद्वय प्रभाजाल पराकृत सरोरुहा।

शिञ्जान मणिमञ्जीर मण्डित श्री पदाम्बुजा।

मराली मन्दगमना।

महालावण्यशेवधीः।

सर्वारुणा।

अनवद्याङ्गी।   ५०

सर्वाभरणभूषिता।

शिवकामेश्वराङ्कस्था।

शिवा।

स्वाधीनवल्लभा।

सुमेरुमध्यशृङ्गस्था।

श्रीमन्नगरनायिका।

चिन्तामणिगृहान्तस्था।

पञ्चब्रह्मासनस्थिता।

महापद्माटवीसंस्था।

कदम्बवनवासिनी। ६०

सुधासागर मध्यस्था।

कामाक्षी।

कामदायिनी।

देवर्षि गण सङ्घात स्तूयमानात्म वैभाव।

भण्डासुर वधोद्युक्त शक्तिसेना समन्विता।

सम्पत्करी समारूढ सिन्दुर व्रजसेविता।

अश्वारूढ़ अधिष्ठिताश्व कोटि कोटिभिरावृता।

चक्रराज रथारूढ सर्वायुध परिष्कृता।

गेयचक्र रथारूढ मन्त्रिणी परिसेविता।

किरिचक्र रथारूढ दण्डनाथा पुरस्कृता। ७०

ज्वाला मालिनिकाक्षिप्त वह्निप्राकार मध्यगा।

भण्डसैन्य वधोद्युक्त शक्ति विक्रम हर्षिता।

नित्या पराक्रमाटोप निरीक्षण समुत्सुका।

भण्ड पुत्र वधोद्युक्त बाला विक्रम नन्दिता।

मन्त्रिण्यम्बा विरचित विषङ्ग वध तोषिता।

विशुक्र प्राणहरण वाराही वीर्य नन्दिता।

कामेश्वर मुखालोक कल्पित श्रीगणेश्वरा।

महागणेश निर्भिन्न विघ्नयन्त्र प्रहर्षिता।

भण्डासुरेन्द्र निर्मुक्त शस्त्रप्रत्यस्त्र वर्षिणी।

कराङ्गुलि नखोत्पन्न नारायण दशाकृती। ८०

महा पाशुपतास्त्राग्नि निर्दग्धासुर सैनिका।

कामेश्वरास्त्र निर्दग्ध सभाण्डासुर शून्यका।

ब्रह्मोपेन्द्र महेन्द्रादि देव संस्तुत वैभवा।

हर नेत्राग्नि सन्दग्ध काम सञ्जीवनौषधी।

श्रीमद्वाग्भव कूटैक स्वरूप मुख पङ्कजा।

कण्ठाधः कटि पर्यन्त मध्यकूट स्वरूपिणी।

शक्ति कूटैकतापन्न कट्यधोभाग धारिणी।

मूलमन्त्रात्मिका।

मूलकूटत्रयकलेवरा।

कुलामृतैक रसिका। ९०

कुलसङ्केत पालिनी।

कुलाङ्गना।

कुलान्तस्था।

कौलिनी।

कुलयोगिनी।

अकुला।

समयान्तस्था।

समयाचार तत्परा।

मूलाधारैक निलया।

ब्रह्मग्रन्थि विभेदिनी। १००

मणिपूरान्तरुदिता।

विष्णुग्रन्थिविभेदिनी।

आज्ञाचक्र अन्तरालस्था।

रुद्रग्रन्थिविभेदिनी।

सहस्राराम्बुजारूढा।

सुधा साराभिवर्षिणी।

तटिल्लतासमरुचिः।

षट्चक्रोपरि संस्थिता।

महाशक्ति्।

कुण्डलिनी। ११०

बिसतन्तुतनीयसी।

भवानी।

भावनागम्या।

भवारण्य कुठारिका।

भद्रप्रिया।

भद्रमूर्तिः ।

भक्तसौभाग्यदायिनी।

भक्तिप्रिया।

भक्तिगम्या।

भक्तिवश्या।   १२०

भयापहा।

शाम्भवी।

शारदाराध्या।

शर्वाणी।

शर्मदायिनी।

शाङ्करी ।

श्रीकरी ।

साध्वी।

शरच्चन्द्र निभानना।

शातोदरी ।   १३०

शान्तिमती।

निराधारा।

निरञ्जना।

निर्लेपा।

निर्मला।

नित्या।

निराकारा।

निराकुला।

निर्गुणा।

निष्कला। १४०

शान्ता।

निष्कामा।

निरुपप्लवा।

नित्यमुक्ता।

निर्विकारा।

निष्प्रपञ्चा।

निराश्रया।

नित्यशुद्धा।

नित्यबुद्धा।

निरवद्या। १५०

निरन्तरा।

निष्कारणा।

निष्कलङ्का।

निरुपाधिः।

निरीश्वरा।

नीरागा।

रागमथनी।

निर्मदा।

मदनाशिनी।

निश्चिन्ता।   १६०

निरहङ्कारा।

निर्मोहा।

मोहनाशिनी।

निर्ममा।

ममताहन्त्री।

निष्पापा।

पापनाशिनी।

निष्क्रोधा।

क्रोधशमनी।

निर्लोभा।   १७०

लोभनाशिनी।

निःसंशया।

संशयघ्नी।

निर्भवा।

भवनाशिनी।

निर्विकल्पा।

निराबाधा।

निर्भेदा।

भेदनाशिनी।

निर्नाशा।   १८०

मृत्युमथनी ।

निष्क्रिया।

निष्परिग्रहा।

निस्तुला।

नीलचिकुरा।

निरपाया।

निरत्यया।

दुर्लभा।

दुर्गमा।

दुर्गा। १६०

दुःखहन्त्री।

सुखप्रदा।

दुष्टदूरा।

दुराचारशमनी।

दोषवर्जिता।

सर्वज्ञा।

सान्द्र करुणा।

समानाधिक वर्जिता।

सर्वशक्तिमयी।

सर्वमङ्गला। २००

सद्गतिप्रदा।

सर्वेश्वरी ।

सर्वमयी।

सर्वमन्त्र स्वरूपिणी।

सर्वयन्त्रात्मिका।

सर्वतन्त्ररूपा।

मनोन्मनी।

माहेश्वरी ।

महादेवी।

महालक्ष्मी। २१०

मृडप्रिया।

महारूपा।

महापूज्या।

महापातक नाशिनी।

महामाया।

महासत्वा।

महाशक्ति्।

महारति।

महाभोगा।

महैश्वर्या। २२०

महावीर्या।

महाबला।

महाबुद्धा।

महासिद्धा।

महायोगेश्वरेश्वरी ।

महातन्त्रा।

महामन्त्रा।

महायन्त्रा।

महासना।

महायाग क्रमाराध्या। २३०

महाभैरवपूजिता।

महेश्वर महाकल्प महाताण्डव साक्षिणी।

महाकामेशमहिषी।

महात्रिपुरसुन्दरी ।

चतु:षष्ट्युपचाराढ्या।

चतु:षष्टिकलामयी।

महाचतु:षष्टिकोटि योगिनी गण सेविता।

मनुविद्या।

चन्द्रविद्या।

चन्द्रमण्डलमध्यगा। २४०

चारुरूपा।

चारुहासा।

चारुचन्द्रकलाधरा।

चराचरजगन्नाथा।

चक्रराजनिकेतना।

पार्वती।

पद्मनयना।

पद्मरागसमप्रभा।

पञ्चप्रेतासनासीना।

पञ्चब्रह्मस्वरूपिणी। २५०

चिन्मयी।

परमानन्दा।

विज्ञानघनरूपिणी।

ध्यान ध्यातृ ध्येयरूपा।

धर्माधर्मविवर्जिता।

विश्वरूपा।

जागरिणी।

स्वपत्नी।

तैजसात्मिका।

सुप्ता। २६०

प्राज्ञात्मिका।

तुर्या।

सर्वावस्था विवर्जिता।

सृष्टिकर्त्री ।

ब्रह्मरूपा।

गोप्त्री।

गोविन्दरूपिणी।

संहारिणी।

रुद्ररूपा।

तिरोधानकरी । २७०

ईश्वरी ।

सदाशिवा।

अनुग्रहदा।

पञ्चकृत्य परायणा।

भानुमण्डल मध्यस्था।

भैरवी।

भगमालिनी।

पद्मासना।

भगवती।

पद्मनाभ सहोदरी ।   २८०

उन्मेषनिमिषोत्पन्न विपन्न भुवनावली।

सहस्रशीर्षवदना।

सहस्राक्षी।

सहस्रपदे ।

आब्रह्म कीट जननी।

वर्णाश्रम विधायिनी।

निजाज्ञारूप निगमा।

पुण्यापुण्यफलप्रदा।

श्रुतिसीमन्त सिन्दूरीकृत पादाब्ज धूलिका।

सकलागम सन्दोह शुक्ति सम्पुट मौक्तिका।   २९०

पुरुषार्थप्रदा।

पूर्णा।

भोगिनी।

भुवनेश्वरी ।

अम्बिका।

अनादिनिधना।

हरिब्रह्मेन्द्रसेविता।

नारायणी।

नादरूपा।

नामरूप विवर्जिता। ३००

ह्रीङ्कारी ।

ह्रीमती।

हृद्या।

हेयोपादेयवर्जिता।

राजराजार्चिता।

राज्ञी ।

रम्या।

राजीवलोचना।

रञ्जनी।

रमणी। ३१०

रस्या।

रणत्किङ्किणिमेखला।

रमा।

राकेन्दुवदना।

रतिरूपा।

रतिप्रिया।

रक्षाकरी ।

राक्षसघ्नी।

रामा।

रमणलम्पटा। ३२०

काम्या।

कामकलारूपा।

कदम्बकुसुमप्रिया।

कल्याणी।

जगतीकन्दा।

करुणारससागरा।

कलावती।

कलालापा।

कान्ता।

कादम्बरीप्रिया। ३३०

वरदा।

वामनयना।

वारुणी मद विह्वला।

विश्वाधिका।

वेदवेद्या।

विन्ध्याचलनिवासिनी।

विधात्री।

वेदजननी।

विष्णुमाया।

विलासिनी। ३४०

क्षेत्रस्वरूपा।

क्षेत्रेशी।

क्षेत्रक्षेत्रज्ञपालिनी।

क्षयवृद्धि विनिर्मुक्ता।

क्षेत्रपाल समर्चिता।

विजया।

विमला।

वन्द्या।

वन्दारु जन वत्सला।

वाग्वादिनी। ३५०

वामकेशी।

वह्निमण्डलवासिनी।

भक्तिमत् कल्पलतिका।

पशुपाशविमोचिनी।

संहृताशेष पाषण्डा।

सदाचार प्रवर्तिका।

तापत्रयाग्नि सन्तप्त समाह्लादन चन्द्रिका।

तरुणी।

तापसाराध्या।

तनुमध्या। ३६०

तमोपहा।

चितिः।

तत्पद लक्ष्यार्था।

चिदेक रसरूपिणी।

स्वात्मानन्द लवीभूत ब्रह्माद्यानन्द सन्ततिः।

परा।

प्रत्यक्ष चितीरूपा।

पश्यन्ती।

परदेवता।

मध्यमा। ३७०

वैखरीरूपा।

भक्तमानस हंसिका।

कामेश्वर प्राणनाड़ी ।

कृतज्ञा।

कामपूजिता।

शृङ्गार रस सम्पूर्णा।

जया।

जालन्धरस्थिता।

ओड्याणपीठ निलया।

बिन्दु मण्डल वासिनी। ३८०

रहोयाग क्रमाराध्या।

रहस्तर्पण तर्पिता।

सद्यः प्रसादिनी।

विश्वसाक्षिणी।

साक्षिवर्जिता।

षडङ्ग देवता युक्ता।

षाड्गुण्य परिपूरिता।

नित्यक्लिन्ना।

निरुपमा।

निर्वाण सुख दायिनी। ३९०

नित्याषोडशिकारूपा।

श्रीकण्ठार्ध शरीरिणी।

प्रभावती।

प्रभारूपा।

प्रसिद्धा।

परमेश्वरी।

मूलप्रकृती।

अव्यक्ता।

व्यक्ताव्यक्तस्वरूपिणी।

व्यापिनी। ४००

विविधाकारा।

विद्याविद्यास्वरूपिणी।

महाकामेश नयन कुमुदाह्लाद कौमुदी ।

भक्ताहार्द तमोभेद भानुमद्भानु सन्ततिः।

शिवदूती।

शिवाराध्या।

शिवमूर्ति ।

शिवङ्करी ।

शिवप्रिया।

शिवपरा। ४१०

शिष्टेष्टा।

शिष्टपूजिता।

अप्रमेया।

स्वप्रकाशा।

मनोवाचाम अगोचरा।

चित्शक्ति्।

चेतनारूपा।

जडशक्ति्।

जडात्मिका।

गायत्री। ४२०

व्याहृती।

सन्ध्या।

द्विजवृन्द निषेविता।

तत्त्वासना।

तत् ।

त्वं ।

अयी।

पञ्चकोशान्तरस्थिता।

निःसीममहिमा।

नित्ययौवना।   ४३०

मदशालिनी।

मदघूर्णित रक्ताक्षी।

मदपाटल गण्डभूः।

चन्दन द्रव दिग्धाङ्गी।

चाम्पेय कुसुम प्रिया।

कुशला।

कोमलाकारा।

कुरुकुल्ला।

कुलेश्वरी ।

कुलकुण्डालया।   ४४०

कौलमार्ग तत्पर सेविता।

कुमार गणनाथाम्बा।

तुष्टि ।

पुष्टि ।

मति।

धृतिः।

शान्ति।

स्वस्तिमति।

कान्ति।

नन्दिनी।   ४५०

विघ्ननाशिनी।

तेजोवती।

त्रिनयना।

लोलाक्षी कामरूपिणी।

मालिनी।

हंसिनी।

माता ।

मलयाचल वासिनी।

सुमुखि।

नलिनी। ४६०

सुभ्रुः ।

शोभना।

सुरनायिका।

कालकण्ठी ।

कान्तिमति।

क्षोभिणी।

सूक्ष्मरूपिणी।

वज्रेश्वरी ।

वामदेवी।

वयोऽवस्था विवर्जिता। ४७०

सिद्धेश्वरी ।

सिद्धविद्या।

सिद्धमाता ।

यशस्विनी।

विशुद्धिचक्र निलया।

आरक्तवर्णा।

त्रिलोचना।

खट्वाङ्गादि प्रहरणा।

वदनैक समन्विता।

पायसान्नप्रिया। ४८०

त्वक्स्था।

पशुलोक भयङ्करी ।

अमृतादि महाशक्ति संवृता।

डाकिनीश्वरी ।

अनाहताब्जनिलया।

श्यामाभा।

वदनद्वया।

दंष्ट्रोज्वला।

अक्षमालादिधरा।

रुधिर संस्थिता। ४९०

कालरात्र्यादि शक्त्यौघ वृता।

स्निग्धौदनप्रिया।

महावीरेन्द्र वरदा।

राकिण्यम्बा स्वरूपिणी।

मणिपूराब्जनिलया।

वदनत्रयसंयुता।

वज्राधिकायुधोपेता।

डामर्यादिभिरावृता।

रक्तवर्णा।

मांसनिष्ठा। ५००

गुडान्नप्रीत मानसा।

समस्त भक्त सुखदा।

लाकिन्यम्बा स्वरूपिणी।

स्वाधिष्ठानाम्बुजगता।

चतुर्वक्त्र मनोहरा।

शूलाद्यायुध सम्पन्ना।

पीतवर्णा।

अतिगर्विता।

मेदोनिष्ठा।

मधुप्रीता। ५१०

बन्दिन्यादि समन्विता।

दध्यन्नासक्त हृदया।

काकिनीरूप धारिणी।

मूलाधाराम्बुजारूढा।

पञ्चवक्त्रा।

अस्थिसंस्थिता।

अङ्कुशादि प्रहरणा।

वरदादि निषेविता।

मुद्गौदनासक्त चित्ता।

साकिन्यम्बा स्वरूपिणी।   ५२०

आज्ञाचक्राब्जनिलया।

शुक्लवर्णा।

षडानना।

मज्जासंस्था।

हंसवती मुख्य शक्तिसमन्विता।

हरिद्रान्नैक रसिका।

हाकिनी रूपधारिणी।

सहस्रदल पद्मस्था।

सर्व वर्णोप शोभिता।

सर्वायुधधरा।   ५३०

शुक्लसंस्थिता।

सर्वतोमुखि।

सर्वौदनप्रीतचित्ता।

याकिन्यम्बास्वरूपिणी।

स्वाहा।

स्वधा।

अमति।

मेधा।

श्रुति।

स्मृति। ५४०

अनुत्तमा।

पुण्यकीर्तिः।

पुण्यलभ्या।

पुण्यश्रवणकीर्तना।

पुलोमजार्चिता।

बन्धमोचनी।

बन्धुरालका।

विमर्शरूपिणी।

विद्या।

वियदादि जगत्प्रसुवे । ५५०

सर्व व्याधिप्रशमनी।

सर्व मृत्युनिवारिणी।

अग्रगण्या।

अचिन्त्यरूपा।

कलिकल्मषनाशिनी ।

कात्यायनी।

कालहन्त्री।

कमलाक्षनिषेविता।

ताम्बूलपूरितमुखि।

दाडिमी कुसुमप्रभा। ५६०

मृगाक्षी।

मोहिनी।

मुख्या।

मृडानी।

मित्ररूपिणी।

नित्यतृप्ता।

भक्तनिधिः।

नियन्त्री।

निखिलेश्वरी ।

मैत्र्यादि वासना लभ्या। ५७०

महाप्रलयसाक्षिणी।

पराशक्ति्।

परानिष्ठा।

प्रज्ञानघनरूपिणी।

माध्वीपानालसा।

मत्ता।

मातृकावर्ण रूपिणी।

महाकैलासनिलया।

मृणाल मृदु दोर्लता।

महनीया। ५८०

दयामूर्तिः ।

महासाम्राज्यशालिनी।

आत्मविद्या।

महाविद्या।

श्रीविद्या।

कामसेविता।

श्रीषोडशाक्षरीविद्या।

त्रिकूटा।

कामकोटिका।

कटाक्ष किङ्करी भूत कमला कोटिसेविता। ५९०

शिरःस्थिता।

चन्द्रनिभा।

भालस्था।

इन्द्रधनुःप्रभा।

हृदयस्था।

रविप्रख्या।

त्रिकोणान्तर दीपिका।

दाक्षायणी।

दैत्यहन्त्री।

दक्षयज्ञ विनाशिनी। ६००

दरान्दोलित दीर्घाक्षी।

दर हासोज्ज्वलन्मुखि।

गुरुमूर्ति।

गुणनिधि।

गोमाता ।

गुहजन्मभूः ।

देवेशी।

दण्डनीतिस्था।

दहराकाशरूपिणी।

प्रतिपन्मुख्य राकान्त तिथि मण्डल पूजिता। ६१०

कलात्मिका।

कलानाथा।

काव्यालाप विनोदिनी।

सचामर रमा वाणी सव्य दक्षिण सेविता।

आदिशक्ति।

अमेया।

आत्मा ।

परमा।

पावनाकृतिः।

अनेककोटिब्रह्माण्डजननी। ६२०

दिव्यविग्रहा।

क्लीङ्कारी ।

केवला।

गुह्या।

कैवल्यपददायिनी।

त्रिपुरा।

त्रिजगद्वन्द्या।

त्रिमूर्तिः ।

त्रिदशेश्वरी ।

त्र्यक्षरी । ६३०

दिव्यगन्धाढ्या।

सिन्दूर तिलकाञ्चिता।

उमा।

शैलेन्द्रतनया।

गौरी ।

गन्धर्वसेविता।

विश्वगर्भा।

स्वर्णगर्भा।

अवरदा।

वागधीश्वरी । ६४०

ध्यानगम्या।

अपरिच्छेद्या।

ज्ञानदा।

ज्ञानविग्रहा।

सर्व वेदान्त संवेद्या।

सत्यानन्दस्वरूपिणी।

लोपामुद्रार्चिता।

लीला क्लृप्त ब्रह्माण्डमण्डला।

अदृश्या।

दृश्यरहिता। ६५०

विज्ञात्री।

वेद्यवर्जिता।

योगिनी।

योगदा।

योग्या।

योगानन्दा।

युगन्धरा।

इच्छाशक्ति ज्ञानशक्ति क्रियाशक्ति स्वरूपिणी।

सर्वाधारा।

सुप्रतिष्ठा। ६६०

सदसद्रूपधारिणी।

अष्टमूर्तिः ।

अजाजैत्री।

लोकयात्राविधायिनी।

एकाकिनी।

भूमरूपा।

निर्द्वैता।

द्वैतवर्जिता।

अन्नदा।

वसुदा। ६७०

वृद्धा।

ब्रह्मात्मैक्य स्वरूपिणी।

बृहती।

ब्राह्मणी।

ब्राह्मी।

ब्रह्मानन्दा।

बलिप्रिया।

भाषारूपा।

बृहत्सेना।

भावाभाव विर्जिता। ६८०

सुखाराध्या।

शुभकरी ।

शोभनासुलभागती।

राजराजेश्वरी ।

राज्यदायिनी।

राज्यवल्लभा।

राजत्कृपा।

राजपीठ निवेशित निजाश्रिता।

राज्यलक्ष्मी।

कोशनाथा। ६९०

चतुरङ्गबलेश्वरी ।

साम्राज्यदायिनी।

सत्यसन्धा।

सागरमेखला।

दीक्षिता।

दैत्यशमनी।

सर्वलोकवंशकरी ।

सर्वार्थदात्री।

सावित्री।

सच्चिदानन्दरूपिणी। ७००

देशकाला परिच्छिन्ना।

सर्वगा।

सर्वमोहिनी।

सरस्वती।

शास्त्रमयी।

गुहाम्बा।

गुह्यरूपिणी।

सर्वोपाधि विनिर्मुक्ता।

सदाशिव पतिव्रता।

सम्प्रदायेश्वरी । ७१०

साधु।

ई ।

गुरुमण्डलरूपिणी।

कुलोत्तीर्णा।

भगाराध्या।

माया।

मधुमती।

मही ।

गणाम्बा।

गुह्यकाराध्या। ७२०

कोमलाङ्गी।

गुरुप्रिया।

स्वतन्त्रा।

सर्वतन्त्रेशी।

दक्षिणामूर्तिरूपिणी।

सनकादिसमाराध्या।

शिवज्ञानप्रदायिनी।

चित्कला।

आनन्दकलिका।

प्रेमरूपा। ७३०

प्रियङ्करी ।

नामपारायणप्रीता।

नन्दिविद्या।

नटेश्वरी ।

मिथ्या जगदधिष्ठाना।

मुक्तिदा।

मुक्तिरूपिणी।

लास्यप्रिया।

लयकरी ।

लज्जा। ७४०

रम्भादिवन्दिता।

भवदावसुधावृष्टि ।

पापारण्य दवानला।

दौर्भाग्य तूलवातूला।

जराध्वान्त रविप्रभा।

भाग्याब्धि चन्द्रिका।

भक्तचित्तकेकि घनाघना।

रोगपर्वतदम्भोलिः।

मृत्युदारुकुठारिका।

महेश्वरी । ७५०

महाकाली।

महाग्रासा।

महाशना।

अपर्णा।

चण्डिका।

चण्डमुण्डासुरनिषूदिनी।

क्षराक्षरात्मिका।

सर्वलोकेशी।

विश्वधारिणी।

त्रिवर्गदात्री।   ७६०

सुभगा।

त्र्यम्बका।

त्रिगुणात्मिका।

स्वर्गापवर्गदा।

शुद्धा।

जपापुष्पनिभाकृतिः।

ओजोवती।

द्युतिधरा।

यज्ञरूपा।

प्रियव्रता।   ७७०

दुराराध्या।

दुराधर्षा।

पाटलीकुसुमप्रिया।

महती।

मेरुनिलया।

मन्दारकुसुमप्रिया।

वीराराध्या।

विराड्रूपा।

विरजा।

विश्वतोमुखि। ७८०

प्रत्यग्रूपा।

पराकाशा।

प्राणदा।

प्राणरूपिणी।

मार्ताण्ड भैरवाराध्या।

मन्त्रिणीन्यस्त राज्यधूः ।

त्रिपुरेशी।

जयत्सेना।

निस्त्रैगुण्या।

परापरा। ७९०

सत्यज्ञानानन्दरूपा।

सामरस्य परायणा।

कपर्दिनी।

कलामाला।

कामदुघे ।

कामरूपिणी।

कलानिधिः।

काव्यकला।

रसज्ञा।

रसशेवधिः। ८००

पुष्टा।

पुरातना।

पूज्या।

पुष्करा।

पुष्करेक्षणा।

परंज्योति ।

परन्धाम् ।

परमाणु ।

परात्परा।

पाशहस्ता। ८१०

पाशहन्त्री।

परमन्त्रविभेदिनी।

मूर्ता।

अमूर्ता।

अनित्यतृप्ता।

मुनि मानस हंसिका।

सत्यव्रता।

सत्यरूपा।

सर्वान्तर्यामिनी।

सती। ८२०

ब्रह्माणी।

ब्रह्म ।

जननी।

बहुरूपा।

बुधार्चिता।

प्रसवित्री।

प्रचण्डा।

आज्ञा।

प्रतिष्ठा।

प्रकटाकृतिः। ८३०

प्राणेश्वरी ।

प्राणदात्री।

पञ्चाशत्पीठरूपिणी।

विशृङ्खला।

विविक्तस्था।

वीरमाता ।

वियत्प्रसूः ।

मुकुन्दा।

मुक्तिनिलया।

मूलविग्रहरूपिणी।   ८४०

भावज्ञा।

भवरोगघ्नी।

भवचक्र प्रवर्तिनी।

छन्दःसारा।

शास्त्रसारा।

मन्त्रसारा।

तलोदरी ।

उदारकीर्तिः।

उद्दामवैभवा।

वर्णरूपिणी।   ८५०

जन्म मृत्यु जरा तप्तजन विश्रान्तिदायिनी।

सर्वोपनिषदुद् घुष्टा।

शान्त्यतीत कलात्मिका।

गम्भीरा।

गगनान्तस्था।

गर्विता।

गानलोलुपा।

कल्पनारहिता।

काष्ठा।

अकान्ता। ८६०

कान्तार्धविग्रहा।

कार्यकारण निर्मुक्ता।

कामकेलि तरङ्गिता।

कनत् कनक ताटङ्का।

लीलाविग्रहधारिणी।

अजा।

क्षयविनिर्मुक्ता।

मुग्धा।

क्षिप्रप्रसादिनी।

अन्तर्मुखसमाराध्या। ८७०

बहिर्मुखसुदुर्लभा।

त्रयी।

त्रिवर्गनिलया।

त्रिस्था।

त्रिपुरमालिनी।

निरामया।

निरालम्बा।

स्वात्मारामा।

सुधासृतिः।

संसारपङ्क निर्मग्न समुद्धरण पण्डिता। ८८०

यज्ञप्रिया।

यज्ञकर्त्री ।

यजमानस्वरूपिणी।

धर्माधारा।

धनाध्यक्षा।

धनधान्यविवर्धिनी।

विप्रप्रिया।

विप्ररूपा।

विश्वभ्रमण कारिणी।

विश्वग्रासा। ८९०

विद्रुमाभा।

वैष्णवी।

विष्णुरूपिणी।

अयोनि

योनिनिलया।

कूटस्था।

कुलरूपिणी।

वीरगोष्ठीप्रिया।

वीरा।

नैष्कर्म्या। ९००

नादरूपिणी।

विज्ञानकलना।

कल्या।

विदग्धा।

बैन्दवासना।

तत्त्वाधिका।

तत्त्वमयी।

तत्त्वमर्थस्वरूपिणी।

सामगानप्रिया।

सौम्या। ६१०

सदाशिव कुटुम्बिनी।

सव्यापसव्य मार्गस्था।

सर्वापद्विनिवारिणी।

स्वस्था।

स्वभावमधुरा।

धीरा।

धीरसमर्चिता।

चैतन्यार्घ्य समाराध्या।

चैतन्य कुसुमप्रिया।

सदोदिता। ६२०

सदातुष्टा।

तरुणादित्यपाटला।

दक्षिणा दक्षिणाराध्या।

दरस्मेरमुखाम्बुजा।

कौलिनीकेवला।

अनर्घ्य कैवल्यपद दायिनी।

स्तोत्रप्रिया।

स्तुतिमती।

श्रुति संस्तुत वैभवा।

मनस्विनी। ६३०

मानवती।

महेशी।

मङ्गलाकृतिः।

विश्वमाता ।

जगद्धात्री।

विशालाक्षी।

विरागिणी।

प्रगल्भा।

परमोदारा।

परामोदा।   ६४०

मनोमयी।

व्योमकेशी।

विमानस्था।

वज्रिणी।

वामकेश्वरी ।

पञ्चयज्ञप्रिया।

पञ्चप्रेत मञ्चाधिशायिनी।

पञ्चमी।

पञ्चभूतेशी।

पञ्चसङ्ख्योपचारिणी।   ६५०

शाश्वती।

शाश्वतैश्वर्या।

शर्मदा।

शम्भुमोहिनी।

धरा।

धरसुता।

धन्या।

धर्मिणी।

धर्मवर्धिनी।

लोकातीता। ९६०

गुणातीता।

सर्वातीता।

शमात्मिका।

बन्धूककुसुमप्रख्या।

बाला।

लीलाविनोदिनी।

सुमङ्गला।

सुखकरी ।

सुवेषाढ्या।

सुवासिनी। ६७०

सुवासिन्यर्चन प्रीता।

आशोभना।

शुद्धमानसा ।

बिन्दुतर्पण सन्तुष्टा।

पूर्वजा।

त्रिपुराम्बिका।

दशमुद्रा समाराध्या।

त्रिपुराश्रीवशङ्करी।

ज्ञानमुद्रा।

ज्ञानगम्या। ६८०

ज्ञानज्ञेयस्वरूपिणी।

योनिमुद्रा।

त्रिखण्डेशी।

त्रिगुणा।

अम्बा।

त्रिकोणगा।

अनघा।

अद्भुतचारित्रा।

वाञ्छितार्थ प्रदायिनी।

अभ्यासातिशय ज्ञाता। ९९०

शडध्वातीत रूपिणी।

अव्याजकरुणामूर्तिः।

अज्ञानध्वान्तदीपिका।

आबालगोप विदिता।

सर्वानुल्लङ्घ्य शासना।

श्रीचक्रराज निलया।

श्रीमत् त्रिपुरसुन्दरी ।

श्रीशिवाशिव।

शिवशक्त्यैक्यरूपिणी।

ललिताम्बिका। १००० ॥

तत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु तत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु ॥

॥ इति श्रीललितासहस्रनामावलिः सम्पूर्णा ॥